गुरुभक्तिप्रकाश का सूचीपत्र।

इति ॥

॥ पन ॥

भार्गवहीरालाल हरिसंबंधी नाम अलवेली शरण जैपुरनिवासी रचित ॥

श्रीशुकसंप्रदायके चरणदासी संतो और भार्गव क़ौम के सज्जन पुरुषो! यह तो आप जानते हैं कि श्रीच्यवन ऋषि महाराज के वंश में हरि भक्त ख़ानदान के सूर्य्य श्री चरणदास जी महाराज जिनकी महिमा से यह ग्रंथ और अनेक ग्रंथ भरे हुये हैं ऐसे अंश अवतार प्रकट हुये जिनके प्रतापसे सैकड़ों तारण तरण महात्मा वनके देशान्तर में हज़ारों जीवोंका उद्धार कर गये और अव तक उनकी संप्रदाय में ऐसे २ संत महात्मा पाये जाते हैं कि ढूंढ़ेही मिलें तो मिलें, श्री वृन्दावनमें सेवा कुंज के निकट चरण-दासी स्थान में श्रीगोविन्ददास जी महाराज साधु संतों के लक्षण लिये साधु सेवा में तन मन से लीन रहते हैं ॥

दोहा ॥

रहनी गहनी आपकी ब्रज माहीं विख्यात ॥
उन्तीसों लक्षण लिये हिरदय माहिं समात १
गोपीजनवल्लभ रटें मुख सूं दिन अरु रैन ॥
परमारथ की मूरती सेवा बिन नहिं चैन २
माताको सों हेत है उनको सबके साथ ॥
कोई न्यूनसे न्यूनहो ताहि नवावें माथ ३

रहैं भावना में मगन सबसों बेपरवाह ॥
कोई राव या रंक हो चाहे शाहनशाह ४
वृन्दावन में आपको सेवा कुंज निवास ॥
मन्दिर बनवायो वहीं चरण राधिका पास ५
याते सबही जानलो चरण लाड़ले सन्त ॥
अधिक एकसों एकहैं योंतो और अनन्त ६
तिन मों पे किर्पा करी जाको वार न पार ॥
उनको सबही सहज है जो दुर्लभ दुशवार ७

आपका सिलसिलः श्रीचरणदासजी महाराजसे इसतरह पर है ॥

दो०नारायण ब्रह्मा वसिष्ठ पाराशर अरुव्यास ॥
श्रीशुक मुनि जानो छठे सतवें चरणहिदास १
गुरुछौनाजी अखैरामजी दशवें चेतनदास ॥
भगवानदासहैं ग्यारहें बारहैं मोहनदास २
खूबदासजी तेरहवें फिर गुरुगोबिंददास ॥
जो अलबेली के गुरू बृन्दाबन में बास ३

श्रीरामबिलास जी महाराज भी आपही के समान वहीं बिराजते हैं और दूर दूर के संत भी वहां आते रहते हैं और जब तक रहना चाहें रहते हैं ॥

धनौरे में महन्त चतुरदासजी महाराज जो उस देश में बड़ेमान्य सत्पुरुषहैं वहांके रईसभी उनकी सेवाकरतेहैं॥

दिल्ली में तो श्रीमहाराज का ख़ास भजनस्थान है जहांकी गद्दीपर श्रीमहाराजगुसाईंवासुदेवदासजी महंत विराजते हैं यह महाराज श्रीगुसाईं जुगतानंद जी के सिलसिले में हैं और वहीं दो स्थान औरहैं एक श्रीस्वामी रामरूप जी महाराज का जिनकी रचना से यह ग्रंथहै और दूसरा श्रीसहजो बाई जी का इन तीनों स्थानों के सैकड़ों शिष्य विरक्त और गृहस्थ मौजूद हैं ॥

पंजाबमें भी कई स्थानधारी महन्त और लायक़संत विराजते हैं–मुक़ाम रूड़ी ज़िला हिसार तहसीलसरसामें महन्त विशुद्धानन्दजी बड़े विद्वान् सत्पुरुषहैं इनको दरबारमें कुर्सी मिलती है ॥

मौजे झड़ूका रियासत जींद में महन्त सेवादासजी महाराज बड़े योग्य अद्वितीय सत् पुरुष हैं और ख़ास ज़िले फ़ीरोज़पुर में श्री स्वामी मंगलदास जी महाराज सभाजीत पंडित ब्रह्मज्ञानी एक ही हैं पंजाब के सन्त महन्त अकसर आपके इरादतमंद हैं–इन्हींके गुरुभाई श्रीस्वामी रामशरणदास जी महाराज जिनका परमधाम हुये थोड़ाही कालहुवा है बड़े परोपकारीथे आपने रामत करके हज़ारहा रुपये लगा के १ सुखदेव चरणदासीय नामी धर्मशाला कनखलमें बड़ी आलीशान बनवाई ॥

ग़रज़ श्रीमहाराज के नामी स्थान इस देशमें चारों तरफ़ जगह २ मौजूदहैं जैपुर में भी चार पांच स्थानहैं जिनकी बदौलत चरनदासी संतों के ग्रंथ यहां पायेगये

और उन में से कई ग्रंथ फ़ारसी अक्षरों में मुझे अपने प्रेसमें छपाने का मौक़ा मिला उन्हीं में से यह एक जीवनचरित्र श्रीमहाराज का है जिसने इसे देखा या सुना वोही आनंद को प्राप्त होगया ॥

पंजाब की तरफ़ दिल्ली हरिद्वार में या ब्रज की तरफ़ जहां २ जाने का इत्तिफ़ाक़ हुवा वहीं के सत्पुरुषों को इसका अभिलाषी पाया कि हिन्दी टाइप में भी यह ग्रंथ छपजाय तो बड़ा उपकार हो और आख़िर में बाबू रघुबरदयाल साहब भार्गव अलीगढ़ निवासी ने बमुक़ाम मथुरा (जो अपने पुराने ख़यालात इसी के देखने से राह पर आना कहा करते हैं) फ़रमाया कि यह काम तो जल्दी ही होजाना चाहिये बाबा तुलसीदास जी महाराज मुकेरियां वालेकी भी तलब है जो मेरे गुरू हैं॥

चूंकि मेरे यहां टाइप प्रेस नहीं है इसलिये मैंने मुन्शी प्रयागनारायण साहब मालिक नवलकिशोर प्रेस लखनऊ से दरख़्वास्त की और उन्होंने मंज़ूर फ़रमाकर इजाज़तदी चुनांचि जैसा चाहा था ख़ैर ख़ूबी के साथ समाप्त होकर तयार होगया हाथों हाथ लीजिये और मुन्शी साहबको धन्यबाद दीजिये ॥

१ चरणदासी संतों की बानी का इन्तख़ाब पंडित शिवदयाल जी चरणदासी मेरी प्रार्थना अनुसार तैयार कर रहे हैं आशा है कि आपकी नज़रों से वह भी जल्दी ही गुज़राना जायगा ॥ इति
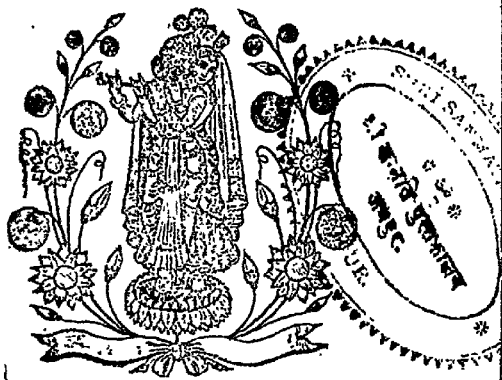
श्रीकृष्णाय नमः ॥

अथ श्रीमहाराजचरणदासजीके दास श्रीस्वामीरामरूपजी के सरनांवगुरुभक्तानन्दजी कृत गुरुभक्तिप्रकाश प्रारभ्यते ॥

दोहा ॥

नमस्कार प्रथमै उसे सतचित आनंदरूप ॥
है अखंड व्यापक सकल निरमल अचल अरूप १
दण्डवत मूल प्रकृति कूं सर्वशक्ति लिये ग्रंद ॥
उपजावन पालन हनन कारज कारनकंद ॥ २ ॥

ऐसी माया संगले भयो पुरुष अभिराम ॥
ईश्वर नारायण वही ताहीकूं परनाम ॥ ३ ॥
जिनसूं ब्रह्माजू भये उपजावन जगईश ॥
परदछिना तिनकी करूं चरणन राखूं शीश ॥ ४ ॥
जिनके श्रीवशिष्ठमुनि बोधरूप आनंद ॥
उनके हैं श्रीशक्त त्रिय नमो नमो सुखसिंध ॥ ५ ॥
पाराशर तिनकी कला तपसी अति निहकाम ॥
रामरूप जन करतहैं बार बार परनाम ॥ ६ ॥
वेदव्यास तिनसूं भये सो ईश्वर अवतार ॥
तीन कांड परगट किये परणम बारंबार ॥ ७ ॥
जिनके श्रीशुकदेव हैं जानत सब संसार ॥
सो मेरे हियमें बसो उनहीं को आधार ॥ ८ ॥
परकम्मा हितसूं करूं बहुत करूं दंडौत ॥
तीनलोक विचरतरहैं तिन बश कीनी मौत ॥ ९ ॥
जिन के श्रीचरणदासहैं नाद पुत्रही जान ॥
तिनकी सतसंगतिकिये मिटै तिमिर अज्ञान १० ॥
चरणदास के चरण पै तन मन वारूं शीश ॥
रामरूप आधीनकूं भक्तिकरी बकसीस ॥ ११ ॥
गुरुभक्तानंद रामरूप ये दो बकसे नांव ॥
चरणदासके नामपरि बार बार बलिजांव ॥ १२ ॥

जिनके जनम उछाह को मनमें बढ़ो हुलास ॥
सो अब बरणन करतहूं मैं गुरुभक्तादास ॥१३॥
सुनौ गुरुमुखी संत सब कथा अधिक परधान ॥
प्रेमबढ़ै उपजै भगति लहै जु पद निर्बान ॥ १४ ॥
गुरुमुख सुन हरषै घना उपजै गुरु की भक्ति ॥
प्रकटै मन बैरागही छुटै बासना जक्त ॥ १५ ॥
एकदिना मम हिये में ऐसी उपजीबात ॥
मन हरषो हुलसो हियो यही करनकूं काथ ॥१६॥
रामत मैं रमताहुता आई उठा विचार ॥
लीला गुरू चरित्र को कछुक कहूं उच्चार ॥१७॥
गुरुभाई जो संगथे जिनसूं पूछी बात ॥
मेरेमन यही बासना कहूं जु ऐसी काथ ॥ १८ ॥
यह सुन सब परसन भये दई जु अज्ञा मोहिं ॥
हाथजोर फिर मैं कही तुम्हरी किरपा होहिं॥ १९॥
अरु गुरुभाई दूरथे छोटे बड़े जु जान ॥
उनके चरणनको हिये मैं करिलीनो ध्यान ॥२०॥
ध्यानमाहिं मैं यों कही यही जु मेरी बास ॥
तुमसब गुरू समान हो पूरीकीजे आस ॥ २१ ॥
आयुष ले पोथी कही सो अब करूं बखान ॥
सावधान होके सुनो सबही संत सुजान ॥ २२ ॥

अठारहसै छब्बीसही संवत था वह द्यौस ॥
जबहीसूं कहनेलगा अपने मनकी हौंस ॥ २३ ॥
साढ़ महीना शुक्लपक्ष ब्रहस्पतिवारीतीज ॥
कछुक वाही दिनबिषे बोया याका बीज ॥ २४ ॥
अनभै सींचनही लगी बढ़नेलागी पौधि ॥
पुस्तक बननेही लगा अक्षर बिंदी शोधि ॥ २५ ॥
द्वापर सब गया बीतकै कलियुग बरता आय ॥
बिष्णुभक्ति बिगरनलगी करैं जु दरब उपाय ॥ २६ ॥
जहां लोभ जहां पाप है जहँ डिंभ छल झूठ ॥
धरम क्षीण होनेलगा सत्य चला जू रूठ ॥ २७ ॥
सबकी मत औरैभई उठलागा अहंकार ॥
दया क्षमा तजि दीनता प्रभुताई लइ धार ॥ २८ ॥
पागे जग व्यवहार में रामभक्ति हियनाहिं ॥
कथा कीरतन जो करैं लोभराख मनमाहिं ॥ २९ ॥
क्रोध लोभ धारण लगे गिरही और अतीत ॥
बिसराये हरिकूं फिरैं चालचलैं बिपरीत ॥ ३० ॥
जगन्नाथ चिंताकरी भक्तबछल करतार ॥
भक्तिसुधाकूं जगतमें रूपसंत को धार ॥ ३१ ॥
सहस चार अरु आठसै औरबरसही तीन ॥
लागे कलियुग कूं भये यह बिचार जब कीन ॥ ३२ ॥

प्रभुजी कियो विचार जब कौनदेश करिबास ॥
भक्ति बिना कुल कौनहै तहांकरूं परकास ॥ ३३ ॥
ठहराई निश्चयकरी प्रकटकरूं अपअंश ॥
दूसर कुल के मध्यही शोभनजीके बंश ॥ ३४ ॥
शोभन हमरा भक्तथा जिनमांगो बरयेह ॥
बंश हमारे के विषे भक्तिदान बरदेह ॥ ३५ ॥
वचन करूं पूरे अबै लेहुँ अंश औतार ॥
भक्ति पसारूं जगतमें यही लई उरधार ॥ ३६ ॥

चौपाई ॥

अब कहूं अस्तुति शोभन केरी। जिन पग परी प्रेमकी बेरी ॥ हिया सरोवर उमँगारहै। नयन सु जल बहुतात्रहै ॥ जग बिसराया हरिके ध्यानू। रहे सदा यों बौरा जानू ॥ कबहूं गाय उठैं मृदुवानी। तामें प्रीति अधिक रससानी ॥ कबहूं हँसैं अधिकही हांसी। कबहूं होजा अधिक उदासी ॥ कबहूं निरत करन कूं लागैं। कबहूं जंगलकूं उठिभागैं॥ कबहूं दोदो दिन सुधिनाहीं। लेटेरहैं भवनके माहीं॥ जानो तनमें जीवनहोई। जिनका भेद न पावै कोई ॥ ३७ ॥

दोहा ॥

दीखैं जगके माहिंही रहै जु हरिके पास ॥
परमेश्वरकी प्रीति बिन और न कोई आस ॥३८॥

चौपाई ॥

मेवात देशमें अलवर पासा । डहरा गांव जु अधिकसुबासा ॥ ताके निकटैं सरिताबहै । जितकी सृष्टि सहासुख लहै ॥ आसपास बहुबाग सुहावैं । फूलैं फलैं हरष छविछावैं ॥ जितके बासी सबही सुखिया । राणाजितका सबमें सुखिया ॥ सूबसबास बहुत सुखदाई । जहां बिराजैं शोभन राई ॥ गृहस्थआश्रम केही माहीं । ऐसी प्रेमभक्ति जिनपाहीं ॥ तिनसों चतुरदास भये ज्ञानी । ताके सुत गिरिधर परमानी ॥ गिरिधरके लाहड़ बड़भागी । नवधाभक्ति माहिंअनुरागी ॥ जगनदासतिनकेसुतजानौ । उनके प्रागदास पहचानौ ॥ जिनके मुरलीधर सुतभये । सो भी सदा भक्तिमें रहे ॥ ताके जनम लियो सुखदाई । रामरूप तिनकी शरणाई ॥ ३९ ॥

अथ जन्मचरित्रं प्रारभ्यते ॥

दोहा ॥

जनम लियो जिहिभांतिही आये गरभ मँझार ॥
ज्योंकी त्यों अब कहतहूं शोभाअधिक अपार४०

चौपाई ॥

कुंजोमाई अति बड़भागी । सदा रहै मनमें अनुरागी ॥ सती सुभाव शीलमें ऊंची । मधुर बचन भोलापन सूंची ॥ दोनों कुलकी अतिही प्यारी । रूप गुणन में बहुउजियारी ॥ जाके पहले गर्भ मँझारे । आये प्रभुजी जन औतारे ॥ पहलमास तनभई सुगंधा । भवनमाहिं बाढ़ो आनंदा ॥ देहरूप कछु अधिक सुहावै । नीके सुपन सगुन शुभआवै ॥ दूजे मास गांवके लोई । भये सुखी दुखरहा न कोई ॥ तीजे मास महावटवरसी । आसपास खेती भइ सरसी ॥ ४१ ॥

दोहा ॥

चौथे होली आइया आनँद बढ़ो अपार ॥
घरघरही में सब सुखी फागकिये नरनार॥४२॥

चौपाई ॥

फाग महीना जबसूं लागो । सबैगांव रसरंगमें पागो ॥ नरनारी सबकहैं सुहाई । ऐसीहोरी कबहुं न आई ॥ पँचवें चैत किया पँचवांसा । बाढ़ा अतिही अधिक हुलासा ॥ छठे महीने कुंजोरानी । मनहीमन लागी मुसकानी ॥ तिनकूं दरशन होनेलागे । उनके भाग बड़ेही जागे ॥ जेठ सातवें अचरज भाई । डहरेमें रही शीतलताई ॥ साढ़ महीना अठवां आया । जहां तहां आनंद बढ़ाया ॥ नववें सावन लगा उमाहा । घरबाहर सब करै उछाहा ॥ ४३ ॥

दोहा ॥

दशम मास भादौंलगा सबमिल करैं उछाह ॥
कब मुख देखैं लालको ऐसे रहे उमाह ॥ ४४ ॥
भादौं तीजसुदी जबै आया मंगल द्यौस ॥
मात पिता अरु कुटुंबकी पूरी कीनी हौस ॥ ४५ ॥
सातघड़ी सूरज चढ़े लियो भक्त औतार ॥
नरनारी फुल्लतभये करनलगे व्यौहार ॥ ४६ ॥

चौपाई॥

कोइ जाय पंडितको लाया। आदर करिकै ताहि बिठाया॥ भाई बंधु सब लिये बुलाई। रोलीसींप सौंज धरवाई॥ भरि परात बीड़े जहँ राखे। प्रागदास ब्राह्मणसूं भाखे॥ करि प्रणाम जो ऐसे बोले। नाम धरो शुभदिन कहो खोले॥ जबै बिप्र पत्रा करलीन्हा। ताको नेक नेक करि चीन्हा॥ जब द्विजने हँस बचन उचारे। याके गिरहपड़े अतिभारे॥ यह बालक ह्वैहै बड़भागी। मुरलीधर की दत्तव जागी॥ ह्वैहै भक्त महाउपकारी। मानों कृष्ण अंश औतारी॥ ४७॥

दोहा॥

नर नारी बहु पूजिहैं जपिहैं याको जाप॥
ये तौ आये जगत में दूर करनकूं पाप॥४८॥

चौपाई॥

सुन दादी यशुदा हरषाई। फूली तनमें नाहिं समाई॥ भवन माहिं बोली मृदुबानी। मिश्र कही हम सांची जानी॥ जनमलेत यह अचरज

देखे। सो मैं तुमसों कहूं विशेखे॥ प्रथम भवनमें भइ उजियारी। भेरि दमामे शब्द हुआरी॥ तीजे भवन सुगन्धन छायो। पांडे यह कौतुक दरशायो॥ धन्य धन्य बोले सब लोई। आंगन में बैठे जो कोई॥ सुनकरि प्रेममाहिं द्विजपागा। जन्मपत्र लिखने को लागा॥ धन्य समां धन दिन अधिकाई। रामरूप ताके बलि जाई॥४९॥

दोहा॥

जन्मपत्र ज्यों ज्यों लिखैं हँसहँस कहताजाय॥
गिरहपड़ेजो भूप के तिनसों भी अधिकाय॥५०॥
सत्रह सै अरु साठका संबत धरा बनाय॥
भादौंतीजसुदीशुभमंगलसातघड़ीदिनआय५१
शुभसमो तुलराशि रख नांव धरा रणजीत॥
ह्वै है बड़ा नक्षत्री दाता हरिका मीत॥५२॥

चौपाई॥

शुभ नक्षत्तर चित्रा कहिये। बड़भागी वह ठांव जु लहिये॥ गिरह चाल सबही जहँलेषी। करि बिचार सब रखी बिशेषी॥ उमर बड़ी ह्वैहै जग माहीं। याको ब्याह सुपनहू नाहीं॥ गृह-

चारी का गिरह न एका। आछी भांति शोधकरि देखा ॥ सब अतीत के लक्षण राखे। जैसे देखे सो लिखि भाखे ॥ अरु याके लच्चण सब सूचे। एक एक से अधिकी ऊंचे ॥ जनमपत्र में लिखि सब बाता। दीन्हीं प्रागदास के हाथा ॥ उनहूं लेकर शीश नवायो। ब्राह्मण को कुछ द्रव्य चढ़ायो ॥ सब भाइयों के टीके कीने। उनके कर में बीड़े दीने ॥ ५३ ॥

दोहा ॥

साठ अठारह धेनही विप्रन को दई दान ॥
और पुरोहित द्रव्य दे राखे वाको मान ॥ ५४ ॥
बसन दिये कुल बेटियां करी बहुत परसन्न ॥
कमीननको पैसे दिये मँगतनको दियाअन्न ५५ ॥
नायन को दई कुतही अरु भाटन को दीन ॥
सबको राखो मानही एक एक को चीन ॥ ५६ ॥
भाइन को रुख्सतकिया बिदा किये सबलोग ॥
पौलीलौ पहुँचाइया जो थे जोगाजोग ॥ ५७ ॥

चौपाई ॥

बहुतक नार बधाई गावैं। आपसमें आ-

नन्द बढ़ावैं॥ हर्षित फिरैं अधिक मगनाई। इक भीतर इक बाहर जाई॥ कहै इक सुनो यशोधा रानी। तुम्हरे भाग बड़े हमजानी॥ पोता हुआ सुना हम आई। हमहूँ को कुछ देहु बधाई॥ सुनकरि सब को राजी कीया। जिस लायक जाना सो दीया॥ घर घर बन्दनवार बंधाई। नीच ऊंच जो रहा न काई॥ सात दिना लग ऐसी भही। द्वारे नौबत बाजत रही॥ अब बालकही के गुण गाऊं। जाको नांव लिये सुखपाऊं॥ पलनै लगे दृगन के प्यारे। राम रूप जन तन मन वारे॥ ५८॥

इति श्रीगुरुभक्तिप्रकाशे श्रीस्वामिरामरूपजीकृतजन्म चरित्रे प्रथमोविश्रामः॥ १॥

अथ बालचरित्रं प्रारभ्यते॥

दोहा॥

कभूं खिलावैं गोद में कभूं पालने माहिं॥
सदा मगन मनमें रहैं कबहूं रोवैं नाहिं॥ १॥

चौपाई ॥

कुटुँबलोग ले गोदखिलावैं। बोलन हँसन जु मोद बढ़ावैं ॥ बर्ष एक के जब भये बाला। बोलैं तुतले बचन रसाला॥ दूजे बर्ष माहिं पग दीन्हा। डोलन सीखे चाल नवीना ॥ तीजाबर्ष सुहावन आया। जब लड़कों में खेलन धाया ॥ चौथे बर्ष सँभाला आपा। मुखसों जपन लगे हरिजापा ॥ देखि देखि सब अचरज करैं। बड़ा अचम्भा मन में धरैं ॥ पँचवेंबर्ष भईगतिऔरे। लखे न लोग लुगाई बौरे ॥ पहर एक के तड़-के जागैं। जबही ध्यान करन को लागैं ॥ २ ॥

दोहा ॥

जो लड़कों के बीचही खेलन जावैं लाल ॥
और खेल भावै नहीं गावैं गुण गोपाल ॥ ३ ॥

चौपाई ॥

लड़की लड़कों को बैठावैं। हरे राम सबसों जपुवावैं ॥ नदी किनारे खेल मचावैं। कभूं न्हाय के तिलक बनावैं ॥ खेलत रहैं गांव के

गोरे । ठौर पियारी सलता धोरे ॥ एक दिना अचरजभयो भारी । येहू थे लड़कन मंझारी॥ वाही समय खेल यही भाई । फिरकी ले ले बैठत जाई ॥ ४ ॥

अथ अवधूतके दर्शन होना ॥

चौपाई ॥

उहीं जहां पुरुष इक आया । ठाढ़ा होय देख हर्षाया ॥ नांगे तन कोपीन विराजे । श्याम स्वरूप अधिक छबि छाजे ॥ शीश बा-वरी घूंघरवारी । नैन बड़े शोभा अति भारी ॥

दोहा ॥

नैन अरुण माथादिपै तेजवन्त अधिकाय ॥
मधुरी मूरति सोहनी सौंहीं लखो न जाय ॥ ५ ॥
मुख सों बचन उचारि के बालक लिया बुलाय ॥
कांधे धरिकै लैगये बटतर बैठे जाय ॥ ६ ॥

चौपाई ॥

कांधे से लिया गोद मँझारी । उरलाया बोलें

हितकारी ॥ अजगैबी पेड़ मँगवाये। दिये हाथ अरु बचन सुनाये ॥ हँसिकै कहा तोहिं चेला कीया। कर धरि शीश भक्त वर दीया ॥ तारण तरण जगत में ह्वैहौ। बहुत उधार जीव लैजैहौ ॥ जो कोइ तुम्हरा मन्त्र सुनैहैं। सो निहचै यमपुर नहिं जैहैं ॥ छत्रपती अरु राजा राया। चहिहैं तुम चरणन की छाया ॥ चहुँ दिशि फैलै भक्ति तुम्हारी। नांव जपैंगे बहु नरनारी ॥ शीश निवा सबही वर लीना। उतर गोद चरनन शिर दीना ॥ ७ ॥

दोहा ॥

काहू लड़के ने कही उनके घर में जाय ॥
रनजीता को लेगया एक अतीत उठाय ॥ ८ ॥

चौपाई ॥

जाकर बैठा बटकी छाहीं। वाको लैके गोदी माहीं ॥ सुनिकै चौंकि उठे नरनारी। अकुलाये सब भवन मँझारी ॥ दादा बाप और कछुलोई। वा औरी को चालै सोई ॥ लखे अतीत ने आवत जबहीं। अन्तर्ध्यानभये ह्वां तबहीं ॥ अपना

बेटा बैठा पाया। ले दादे ने गले लगाया॥ पूंछा तोको ह्यां को लावो। गया कहां को था बतलावो॥ जब बालक बोल्यो मँगनाई। नीची आंखि किये सकुचाई॥ एक मनुष नांगे तन आया। लेकर मोकों कन्ध चढ़ाया॥ ह्यां आके बहुतै हित कीना। मेरे हाथमें यहकछु दीना॥९॥

दोहा॥

तुमसा कीना प्यारही ले गोदी के माहिं॥
अच्छे बचन सुनाइया बुरी कही कुछ नाहिं॥१०॥

चौपाई॥

तुम सबही जब आवतजाने। देखतह्यांई गये लुकाने॥ हंस बालककूं ले घर आये। लोग लुगाई बहु सुखपाये॥ मादादी अंकोभरिलीना। फिर वासूं सब पूछनकीना॥ अरु ह्यांथे बहुते नरनारी। जो बीती सो सबै उचारी॥ सब अतीत के बचन सुनाये। दो पेड़े कर में दिखलाये॥ सुन करि सबन अचंभा जाना। बड़भागी याकूं पहचाना॥ आधा पेड़ा सुतकूं खवाया। नेक नेक सबकूं बरताया॥ सब अपने अपने घर

जाई। आपस में यह बात चलाई ॥ ११ ॥

दोहा॥

पूरनवासी शरद की दिनथा बृहस्पतिबार॥
महापुरुष दरशनदिये किरपाकरी अपार॥ १२ ॥
बरसपांचवें जो भया सो मैं दिया सुनाय॥
छठे बरसकी कहतहै रामरूप जन गाय॥ १३ ॥

अथ पांडेका पढ़ाना ॥

चौपाई॥

आगे छठा बरस जब आया। पांडेके पढ़ने बैठाया॥ लगापढ़ावन काखाघाना। ऊतरउलट यही जु बखाना॥ आल जाल तू कहा पढ़ावै। कृष्णनाम लिख क्यों न सिखावै॥ और पढ़न सूंनाकुछ कामा। हिरदे राखूंगो निजनामा॥ जो तुम हरिकी भक्तिपढ़ावो। तो मोकूं तुम फेर बुलावो॥ पाधा सुनमनअचरजआई। यह बालक पढ़िहै नहिंकाई॥ बाँहपकड़ दादे ढिग लाया। याका कहासो बचन सुनाया॥ बाबे जबै गोद में लीना। पुचुकारा समझावन कीना॥ १४ ॥

दोहा ॥

सकुचाये बोले नहीं ऊतर दिया न कोय ॥
नीचीआंखैं करलई नयनन दीना रोय ॥ १५ ॥

चौपाई ॥

दूजै दादा फिर लेगया । ब्राह्मण के कर में करदिया ॥ मारोडाटो याहि पढ़ावो । सबही बिद्या बेग सिखावो ॥ फिर जब लगा पढ़ावन पांड़े । पट्टी ऊपर अक्षर मांड़े ॥ नीचीनांड किये नहिं बोलैं । मनकी बात कछू नहिं खोलैं ॥ पाधा कहि कहि बहुपचहारा । पढ़ै न बोलै पै वह बारा ॥ फेर क्रोधकरि घुरकी दीनी । बालकने सबही सह-लीनी ॥ मुसकाये बोले मृदुबानी । पांड़े तुम अब तक नहिं जानी ॥ मोपै ऐसा पढ़ा न जावै । बिन हरिनाम और नहिं भावै ॥ १६ ॥

दोहा ॥

सूरज पछम ऊगवै सरिता उलट बहै ॥
कृष्ण नाम बिन ना पढूं यों रनजीत कहै ॥१७॥

चौपाई ॥

सुन पांड़े का रोस सिराना । बालक कूं हरि-

जनही जाना ॥ जो लड़के चटशालहि माहीं। हँस देखनलागे उहघाहीं ॥ पांधा कही दोलड़के जावो। या के घर पहुँचाकर आवो ॥ बालक जब पहुँचावन आये। माय बाप कूं बचन सुनाये ॥ यह नहिं पढ़ै न क्योंहीं कैसे। ज्यों यह रहै सुराखो जैसे ॥ यही कुटुंबके मनमें आई। बड़ा होयगा जब पढ़जाई ॥ दादी हँसिकर निकट बुलाया। खेलोखावो करो मनभाया ॥ पढ़ियो तब तेरेमन आवै। ऐसा कौन सु तोहिं सतावै ॥ १८ ॥

दोहा ॥

उतरा छठवां वर्ष जब सतवां लगा जु आय ॥
रामरूप जन कहतहै जाकी कथा बनाय ॥ १९ ॥

चौपाई ॥

एक दिना सोवत सूं जागे। गोद पिता की रोवन लागे ॥ शुभकी लेले कहैं सुनाई। हम तुम में बिछुरन अबआई ॥ बारबार यह बात बखानी। कुँटुब लोग कछु ना पहँचानी ॥ दिना बीसमें ऐसी भई। बालकने जैसे जबकही ॥ मुरलीधर उनमत्त सदाई। रहते हरिके ध्यान लगाई ॥ जग

व्यौहार कछू नहिं कीना । प्रेमभक्तिही में मन दीना ॥ हुते बावरे सबकोइ जानै । पै रहते गिरहीके बानै॥ करि प्रसाद गिरिपै उठजाते । संध्या समय भवन कूं आते ॥ एक आदमी नित रहै साथी । वह नहिं होनदेत था राती ॥ २० ॥

अथ पितामुरलीधरका अन्तर्द्धान होना ॥

दोहा ॥

एक दिना अचरजभयो परबतही में जाय ॥
नित बैठनकी शिलापरि बैठे ध्यानलगाय ॥२१॥

चौपाई ॥

मनुष संगका दूरहि बैठा । आई नींद गया वह लेटा ॥ जागा तो मुरलीधर नाहीं । आया दौर बेग वां ठाईं ॥ तणी बंधा जामा तहँपाया । ज्योंका त्यों पटका दरशाया ॥ पगड़ी शालधोवतीपाई । तबतौ बहुतै चिन्ताआई ॥ लाला कहां गये कहा भयो । आसपास ढूंढ़न कूं गयो ॥ लाला कहि बहुबचन सुनाये । दूरदूरलौं कहूं न

पाये ॥ मनुष बसन ले रोवत आया । प्राग-दासकूं सबै सुनाया ॥ जबहीं सुनकरि ब्याकुल भये । बहुत मनुष ले ढूंढ़नगये ॥ २२ ॥

दोहा ॥

जङ्गल और पहाड़ में ढूंढ़ फिरे सब ठौर ॥
लोग पठाये दूरलौं ना पाया कहिं और ॥ २३ ॥

चौपाई ॥

प्रागदास शोचत घर आये । वादिन भोजन किन्हूं न खाये ॥ सभी कुटुँब ब्याकुल भयाभारी। दुखीरहैं घरमें नरनारी ॥ सदा शोच मनहीं में रहै । मुरलीधर का दुख बहु दहै ॥ उहीं बरस में दादीदादा । तनतजिकै गये धाम अगाधा ॥ वेई रहे बालक महतारी । प्रागदासके कुटुँब मँझारी ॥ श्यामसुँदर दोउ तिनके भाई । उनका कुटुँब हुता अधिकाई ॥ सो वै आय प्यार बहुकरैं । पै कुंजो धीरजन्ही धरैं ॥ योंही न्हान बैशाखी आया । च-लबे कारन चित्त उठाया ॥ २४ ॥

अथ कुंजोमाताजीकूं दिल्लीकूं गवन गंगान्हाणेकै कारनभक्ति राजको रहनो कोटकासम में ॥

दोहा ॥

आप बहल में बैठिकै सुतको लिया चढ़ाय ॥
कोटकासमके बीचमें नीके पहुँचे आय ॥ २५ ॥

चौपाई ॥

ह्वांथी मुरलीधरकी भूवा । आपहुँचे मनखुशी जु हुवा ॥ अपने बालक कूं ह्वा छांड़ा । मातगङ्ग कूं आवनमाड़ा ॥ चलती चलती दिल्ली आई । ह्वां रहते थे मा अरु भाई ॥ चचा बहुतही धन मधजानौ । दीखै राय बड़ाही मानौ ॥ बहादरपुर डहर के पासा । वहथा वतन दिल्ली सुखबासा ॥ ह्वांसूं संगलई जो माता । दो लौंड़ी दशचाकर साथा ॥ रथमें बैठ गंगकूं धाई । न्हाय धोय फिर दिल्ली आई ॥ फेर देश कूं जान न दीनी । सब ने मिल ह्वांई रखलीनी ॥ २६ ॥

दोहा ॥

ह्यां रनजीत बुलाय ले कही सबन यह बात ॥
किहकारन ह्यां छोड़िया क्योंनहिं लाईसाथ २७॥

चौपाई ॥

ह्यां रहने की था मन नाहीं। ज्योंका त्यों छांड़ा घरह्यांहीं ॥ बड़भूवा बालक रखलीना। मेरे संग आवन नहिं दीना ॥ कही सिताबी न्हा करि आओ। अपने घरको जाय बसाओ ॥ के तुम रहो हमारे पासा। किसी बातका ना रहै साँसा ॥ अब माता तुम ऐसे कही। तुम्हरे कहने सों ह्यां रही ॥ जो तुम कही सोई मन आई ॥ रनजीता को लेहु बुलाई ॥ बोली जबै अम्बिका रानी। हम अपनी पति यामें जानी ॥ तोहिं अकेली जो ह्यां राखैं। हम को लोग भला नहिं भाखैं ॥ २८ ॥

दोहा ॥

जो कोई नाते में बड़ा ताको भेज लिखाय।
है डहरे में जो कछू सो सब लेहु मँगाय ॥ २९ ॥

चौपाई॥

बालक हूंकूं को लेहु बुलाई। जब हिरदे हो शीतलताई॥ एक बहलकछु लोग पठाओ। रनजीता का मुख दिखलाओ॥ बीबी कुञ्जोने सुन बानी। पुत्र बुलावनही की ठानी॥ लोग साथ भेजी असवारी। जा पहुँचा डहरे मंझारी॥ सुन्दरदास के खत दियाहाथा। और सुनाई सब ही बाता॥ जो कुछ था सो ह्वां सों लीन्हा। उलटा गवन कोट को कीन्हा॥ जित था बालक कुञ्जो केरा। ह्वांई आन किया पुन डेरा॥ खत को दीया अरु शीश नवाया। बड़ भुवा को बचन सुनाया॥ नारी एक भीतरे गई। उन दिल्ली की सबही कही॥ ३०॥

दोहा॥

शमा भूवा सुन कुढ़ी किया बहुत सनमान॥
भेजनकी चितमें नहीं रोय दिया मनआन॥३१॥

चौपाई॥

बाहर को सीधा पठवाया। नारी भोजन घर में ख्वाया॥ अपने ढिग जो पलँग बिछाया। वा

बुढ़िया को ह्वां पोढ़ाया ॥ हिलमिल बात करन जो लागी । आधी रातिलौं दोऊ जागी ॥ कहा कि यह बालक औतारी । याकी बात कहूं मैं सारी ॥ इसकी माता जब मैं गई । जो ह्वां किया सो इनमो कही ॥ पहिले दिल्ली की कहि बाता । जैसे संग लई उन माता ॥ अरु जैसे करि गंगा न्हाई । ज्योंकरि उलटी दिल्ली आई ॥ कही कि फिर मा ह्यां नहिं आवै । दिल्लीहीसें मोहिं बुलावै ॥ ३२ ॥

दोहा ॥

जा दिन तुम इतकूं चले वाहिन भए खुशहाल ॥
मैं कही रनजीता हँसै तैं कुछ पायो माल ॥३३॥

चौपाई ॥

कही कि माताने सुध लीन्ही । हमको आज बुलावन कीन्ही ॥ अभी लोग लैणेंकूं चाले । गाड़ी एक डोकरी नाले ॥ जो इन कही हम झूठ पिछानी । तुम आए हम सांची जानी ॥ और आज का अचरज कहूं । समझ समझ मनमें सुख लहूं ॥ पिछले पहरै नितही जगता । हरि

का भजन करन कूं लगता ॥ हमकूं कहता तुम भी जागो । कृष्ण नाम जपने कूं लागो ॥ ऐसा जनम फेर नहिं पैहो । तनछूटैं बहुतै पछतैहो ॥ बालक जान उलट हम कहते । तेरे भजन तिरैं हमजेते ॥ ३४ ॥

दोहा ॥

आजजगा पिछले पहर जब सूं रोवन लाग ॥
मैंजागी लिया गोदमैं चुपकारा बड़भाग ॥३५॥

चौपाई ॥

फिर मेरेतीनों सुतजागे । दोऊउठ आवैठे आगे ॥ छोटे मो सुतसूं हितभारी । उनहूं लीना गोद मंझारी ॥ हम सबही मिल पूछन करे । दुख काया मैं अकि तुम डरे ॥ जब बोला दुख नाहिं डराया । तुम्हरा हेतयाद मोहिं आया ॥ अबहम दिल्ली ही कूं जैहैं । पहर तीसरे लेने ऐहैं ॥ याते छाती भरिभरि आवै । तुम्हरो बिछुरन नाहिं सुहावै ॥ फिर हमखुशी किया पुचकारा । पानीले मुखतअै पखारा ॥ पहर तीसरे जब तुम आये । अचरज मान सबी हरपाये ॥ ३६ ॥

दोहा॥

तुमसूं ये बातैं कहीं सो सब देखीं नैन॥
आगे भावज सूं सुने जनम होनके बैन॥ ३७॥
जनम भया जब मैंनथी पाछे लई बुलाय॥
पांच दिनाके हुयेथे तब मैं देखे जाय॥ ३८॥

अथ भक्तिराजको दिल्लीकूं गवन॥

चौपाई॥

युगल पहर पाछे पुनि दोई। बातैं करत गई जब सोई॥ लालन पहर शतरहै जागा। जबहीं सबन जगावन लागा॥ चौंकउठे सबही वे जागे। जभी तयारी करने लागे॥ बड़ भूवाने करिकुछ खाया। इतने में लड़का होआया॥ रुखसत किये बहल बैठाये। दोचाचा पहुँचावन आये॥ सावीलग पहुँचावरगये। ये आगेकूं चलतेभये॥ मगमैं एकसिंह दरसाया। दौरा निकट बहल के आया॥ संगके लोग बहुत भैमाना। भागनका मत मनमें ठाना॥ ३९॥

दोहा ॥

महाराज ततकाल ही दीना पाँव पसार ॥
जबै सिंह चाटन लगा सबही रहे निहार ॥ ४० ॥
हेतकिया शिर करधरा बरदीना कही जात्र ॥
वा सराप सूं छूटके इन्द्रलोक कूं पाव ॥ ४१ ॥

चौपाई ॥

शीश निवाना हरमुख मोरा । होय प्रसन्न चला वन ओरा ॥ एकतीर वाजान न पाया । तन छूटा वा पुरकूं धाया ॥ अचरज मानथक्त सब रहिया । धन्य धन्य आपस में कहिया ॥ महाराजने सौंह दिवाई । काहूसे कहियो मतभाई ॥ चारदिना में दिल्ली आये । उतर वहल सूं घरमें धाये ॥ माता हियेलगा करफेरा । नानी मामी ने मुखहेरा ॥ और सबै देखन कूं आई । भीतर बाहर हुई बधाई ॥ कुँजोसुत देखा सुखपाये । नाना मामा अति हुलसाये ॥ ४२ ॥

दोहा ॥

हिलमिल के रहने लगे उपजा अतिआनन्द ॥
बरस सातवें की कथा कही गुरुभक्तानन्द ॥ ४३ ॥

वरस आठवें की कथा सुनियो सन्त सुजान ॥
माता कुँजोने कही मैंसुनी अपने कान ॥ ४४ ॥

अथ मुल्लाके पढ़ना नाना सूं मियांजीसूं गोष्ठकरनी ॥

चौपाई ॥

वरस आठवें की सुनबानी। मता कियानाना अरुनानी ॥ द्वारपै मुल्लाँबैठायो। ले रनजीतहि ताहि मिलायो ॥ सरव रकुच करि पढ़ने लागे। तनमें रहैं सदाही भागे ॥ तबही एक सगाई आई। देखन आये लोगलुगाई ॥ सबमिल बालक लिया बुलाई। कहा किया देखोरी माई ॥ महाराज तब सोच विचारा। माता औरीनैन निहारा ॥ अरुबोले सुनमाय सुभागी। हमकूं क्या तुम बेंचन लागी ॥ जानबूझ करि ताना दीया। सो मातः ने हँसकरि लीया ॥ ४५ ॥

दोहा ॥

कुँजोरनी उलट करि ऐसे उत्तर दीन ॥

पुत्रसगाई होतहै ब्याहूं बहू नवीन ॥ ४६ ॥

चौपाई ॥

सुनिकै बोलउठे औतारी । मैं कबहूं ब्याहूं नहिं नारी ॥ ब्याह किये दुःखहोय अपारा । जाकाफैलै बहु बिस्तारा ॥ जाकी चिन्ता तनकूंजारै । भजन छुटै गोबिन्द मुरारै ॥ जो मैं माता तोहि पियारो । बिपता में मोकूं मतडारो ॥ मैंतोभक्ति कृष्णकी करिहूं । मोहजाल फन्देनहिं परिहूं ॥ सुनिनानी मनमैं रिसमानी । घुरकी दे कही तुम बड़ ज्ञानी ॥ इतनेही में नानाआया । चौकीपरि ताकूं बैठाया ॥ भक्तिराज के बचन सुनाये । ज्योंकरिकहे सो खोल दिखाये ॥ ४७ ॥

दोहा ॥

सुन नाना फुल्लत भया मनमेंलख औतार ॥
बाहर सूं गुस्साकिया कड़वा बचनउचार ॥४८॥

चौपाई ॥

अबहीं बालक बुद्धि तुम्हारी । तातें निन्दतहो तुमनारी ॥ कहा ब्याह की महिमा जानौं । याके

गुण कैसे पहचानौं ॥ गरुडपुराण में यों दरसावै। ब्याह बिना कोइ गति नहिं पावै ॥ अरु महाभारत मैं कहा सोई। पुत्तरबिना मुक्ति नहिं होई ॥ सभी ऋषौंने योंही चीना। तपकिये पाछे ब्याह जु कीना ॥ सतयुग त्रेता द्वापर जानौं। सबै ऋषिनकी यों पहचानौं ॥ अब कल्युग के भक्त बताऊं। नारी सुद्धां जो दिखलाऊं ॥ रैदासा अरु दासकबीरा। अरु जैदेव अभी भया नीरा ॥ ४९ ॥

दोहा ॥

काल्हू अरु कूबा भए नरहरि नरसी संत ॥
नारि साथले भक्तिही बहुतन करी महंत॥५०॥

चौपाई ॥

भक्तमाल देखो तौ जानौ। हमरे वचन सभी सतमानौ ॥ अब सुन दुनियांही के माहीं। नारि बिना सुख नेकहु नाहीं ॥ आवै रोग देहके साथा। तिरिया बिन को पूछे बाता ॥ ढके उघाड़ेकी को करै। भोजन आगे को करि धरै ॥ बिन नारी परतीत न पावै। ऋण मांगै तो हाथ न आवै ॥

रंडुआ होय जगत में कोई। परघर डोलै भटकत सोई॥ याते समझ सगाई कीजै। हमरी सीख यही सुनलीजै॥ नहीं तौ गूँठी हमही लैहैं। डाट तुम्हारो ब्याह करैहैं॥ ५१॥

दोहा॥

नानाकी सबही सुनी मनमें लई निहार॥
जो नहिं बोलूं सकुचके तौ अब बढ़ै बिकार॥५२॥

चौपाई॥

शीश उठा सौंहींकरे नैना। बोलन लगे सकुच तज बैना॥ तुम हमरे शिरपै महराजा। तुम किरपा सुधरै सबकाजा॥ अरु सब हमपर दयाकरीजे। करन सगाई नाम न लीजै॥ जो मेरी इच्छा बिन लैहो। तौमोकूं घरमें नहिं पैहो॥ ऐसा निकसूं फिरनहिं आऊं। कैजंगल परबतकूं धाऊं॥ तुम जु ऋषिनकी बात चलाई। वैतो योधा अति बलदाई॥ वै सूरज हम दीपक आगैं। उनके पटतर कैसे लागैं॥ वैनिर्लिप्त सबन सूं न्यारे। मो गरीबकूं लगैं बिकारे॥ ५३॥

दोहा ॥

तुम तो मेरे बड़े हो कैसे उलटूं बात ॥
जिन २ नारीसंग कियो तिनकीनाकुशलात ॥५३॥

चौपाई ॥

अबमैं कहूं रोसनहिं मानौ। गौतमकी गति भई पिछानौ॥ जामदग्नि की वहगति भई। नारी मूड़कटा करिरही॥ और ऋषीश्वर बहुत बिचारे। दुखपायो तिरियालइ लारे॥जो जो साधू सन्त बतायो। जिनहूं सङ्ग बुरोही गायो॥ अब संसारी की सुनलीजै। देहकँपै जोपै सुधकीजै॥ जबहीं यह ब्याहन कूं जावै। तिरियाही का रूप बनावै॥ सबलोगन में सरम गँवावै। शीशचढ़ी तिरिया घरआवै॥ आवत हुकम चलावन लागै। यह नहिं समझै मूढ़ अभागै॥ ५४॥

दोहा ॥

खुशी होय ज्यों ज्यों लखै दिन दिन सरबस दै॥
फैलावा होने लगै बढ़ने लागै भै॥५५॥

चौपाई ॥

वासूं फैलै बहुबिस्तारा। चिन्ता लगै बहुत

जंजारा ॥ शिरपै बोझलिया अतिभारा । हरिकूं भूलै मूढ़ गँवारा ॥ आपे आय आपदालागै । कृष्णभक्ति में कैसे पागै ॥ आशा तृष्णा बहुत सतावै । गिरहीजन ऐसा दुखपावै ॥ जगतलाज सें सान डोलै । सब सूं दबिकै नीचाबोलै ॥ दरब काज छल मकर बनावै । बोलै झूठ पेंच बहु लावै ॥ बिना दरब परतीत न पावै । घना व-खेड़ा संगलगावै ॥ नाना बिधके पापकमावै । पाई मनुषा देह गँवावै ॥ यमके हाथ पड़ा पछ-तावै । सुत नारी कोइ काम न आवै ॥ ५६ ॥

दोहा ॥

ब्याह नहीं जोपै करै बँधै नहीं बंधान ॥
छकारहै आनन्द सूं सुमिरै श्रीभगवान ॥ ५७ ॥

चौपाई ॥

याहुनियां कूं सुपना जानौ । कछूनहीं योंहीं पहिंचानौ ॥ ह्यांका जीवन तुच्छ बखाना । मेरा मन ऐसे पतियाना ॥ ताका कहा भरोसा होई । जामें सुःख बतावै लोई ॥ मोकूं जग यह छलसा दरसै । मूरख होयजु यासूं परसै ॥ जो कोइ कहै

तौ मैं नहिं मानूं। याकूं साँचहिशनाहिं आनूं॥ कहा बँधावो पुत्र तुम्हारे। जो तुम कहियो बड़े हमारे॥ ऐसी कह्यो छुटावन जोगी। करूं न व्याह नहीं हूं भोगी॥ इतनी सुन नाना मुसकाया। पकड़ बाँह सूं हियेलगाया॥ ५८॥

दोहा॥

गोद बिठा बहु प्यार करि कही धन्न तुम धन्न॥
व्याह सगाई नाकरैं जो तुम्हरा यौ मन्न॥ ५९॥
वातैं सुनकरि थक्कहो सबही रहे निहार॥
अचरज लख ऐसे कही बालक के औतार॥६०॥
करन सगाई आइया सोऊ भये निरास॥
हँसके मनमें यों कही ये कोइ हरिके दास॥ ६१॥

चौपाई॥

दे अशीश फिर उठही चाले। घरकूं गये सगाई वाले॥ येहू उतर गोद सूं धाये। बाहर मुल्लाँ के ढिगआये॥ कादरबकस मियांका नाऊं। यतनहुता हांसी ढिगगाऊं॥ बात सगाई की सब गाई। मुल्लाँ पढ़न कथा अब आई॥ तीन मही ने पढ़ते भये। मनमें सदा उदासी रहे॥ एक

द्योस भीमन नहिं लागा । दबसूं बैठारहा सुभा-
गा ॥ समझ समझ मनकूं यों तोलै । सकुचउठा
कहिये सबखोलै ॥ एक दिना ऐसेही बोले । सुनौ
मियांजी तुमहो भोले ॥ ६२ ॥

दोहा ॥

पढ़ने कूं भीमन नहीं सबही मूरख लोग ॥
संसारी करनी नहीं चहिये ना जगभोग ॥६३॥

चौपाई ॥

चौंक मियांजी नैन पसारे । जो कुछकहा सो
फिर कहोप्यारे ॥ कहा कि मोपढ़ना नहिंआवै ।
काहे कूं तू पचै पचावै ॥ हमकूं निहचै पढ़ना
नाहीं । साहिब नाम पढ़े हिएमाहीं ॥ नहीं काज
पढ़ने सूं हमकूं । सबही खोलकहूं मैं तुमकूं ।
हमैं चाकरी करनी नाहीं । जाना नहिं दरबारों
माहीं ॥ दरब कमा घरमें नहिं धरना । हमकूं कछु
कुटुंब नहिं करना ॥ आखर होना हमैं फकीर ।
सीनैंचुभा इश्कका तीर ॥ सुनी मियांजी खुल
गयेकान । सौंहीं देखरहे हैरान ॥ ६४ ॥

दोहा ॥

मनमें समझ बिचार कै बोले कादर शेख॥
बिनापढ़े या इलमके हकपिछान नहिंतेक॥ ६५॥

चौपाई ॥

बिना इल्म हककूं नहिं जानै। कैसे अल्लह रूप पिछानैं॥ कैसे खबर पड़ै वाधुरकी। कैसे तपत मिटै जगजुरकी॥ इलम पढ़ा खाली नहिं जावै। दोउ जहान की दौलत पावै॥ दिल लगायकै हासिलकरो। यही बातले मनमें धरो॥रन जीतराय फिर बोले बानी। तै मुल्लाँ अबतक नहिं जानी॥ हमकूं अनभै इलमलदुन्नी। जानबूझ करि देरहे कन्नी॥ ऐसे इल्म कृष्णकूं पावै। इलम तुम्हारा रोटी खवावै॥ ऐसा इल्म न हमकूं चहिये। तासें दुन्द कलेश लहिये॥ ६६॥

दोहा ॥

बहुत पढ़े ऐसा इलम सो देखै हैरान॥
तुमकूं बीया इलमसूं हक्क कीनाँ पहचान॥ ६७॥

चौपाई ॥

साध औलिया पढ़े पढ़ाये। धुरसूं इलमलिये

ही आये ॥ उनकूं किन दीनी तालीम । कब वे पढ़े अलिफ़ बे जीम ॥ मुल्लाँ गुस्सा करि कियो बाद । हमजानी तुम धुरके साध ॥ जो तुम ऐसी वात बनाओ । तौ हमकूं कुछ इल्म दिखावो ॥ मुल्लाँ लड़कों यही बिचारी । एक किताब धरी ले भारी ॥ जो तुम सुख न सांचही बोलो । याकूं पढ़ि पढ़ि माने खोलो ॥ हँसके फिर बोले बड़ भागे । जो नहिं कहो किसी के आगे ॥ तो हम पढ़कर तुम्हैं दिखावें । तुम्हरे दिलका शुभा मिटावें ॥ ६८ ॥

दोहा ॥

जब लड़कों मुल्लाँ कही हमसूं सौगंद लेहु ॥
कभी किसीसूं नाकहैं यह किताब पढ़िदेहु ॥६९॥

चौपाई ॥

जब किताब कर लई सुभागे । पढ़ पढ़ माने कहने लागे ॥ सुनकरि सबगये हैरतमाहीं । मुल्लाँ जबही चुंबे पांहीं ॥ हाथ जोड़ फिर अस्तुति करिया । बारबार चरणों शिरधरिया ॥ तुम्हरे बचन सांच हम मानैं । इल्मलदुन्नी पढे पिछानैं ॥

जबसों आवलहो या ठांई। करो आजलौं माफ गुसाईं॥ जब सकुचे महराज दयाला। नीचे नैन किये ततकाला॥ अरु शीतल मुख बचन उचारे। तुम उस्ताद जु बड़े हमारे॥ तुमकूं ऐसा कहा न चहिये। मुझपै मिहरबानही रहिये॥७०॥

दोहा॥

सांझ भये सबही गये अपने अपने गेह॥
आप आयकै घर विषे नीरपखाली देह॥७१॥

चौपाई॥

तड़के भये दरब ले हाथा। दे मुल्लांकूं नायो माथा॥ कहा कि पढ़ने अब नहिं ऐहूं। निरबंध ह्वैकै हरिगुण गैहूं॥ मुल्लां कही चहो सो कीजै। कभी कभी ह्यां दरशन दीजै॥ घरघरमें यह बात जु भई। मुल्लांने नानासूं कही॥ नाना ने सब सांची जानी। पिछली बातैं आप बखानी॥ दोनों मिल कहि कहि सुखलया। मुल्लां उठ मकतब कूं गया॥७२॥

दोहा॥

नाना कुंजोसूं कही सुन पुत्री यह बात॥

रनजीता कहै नापढूं त्यागूं जग उतपात॥ ७३॥

चौपाई॥

सुनि कुंजो मनमें मुरझानी। अबहीं सूं बोलत सुत बानी॥ ढीठ बड़ा काहू कि न मानै। जहां तहां अपनीही ठानै॥ होन फकीर कहै सब आगे। डाटि सकूं नहिं डर यह लागे॥ निकस जानका भय बहु देवै। मेरी कही सीख नहिं लेवै॥ तादिन करन सगाई आये। वादिन भी यह कहि डरपाये॥ जो अब पढ़नेकाज दबाऊं। निकस जाय तो फिर कहँ पाऊं॥ सोच सोचकरि आंसूडारे। सबमें से जा बैठी न्यारे॥ ह्यांसे उठ चौबारे धाई। तहांलिया रनजीत बुलाई॥ ७४॥

अथ मातापुत्रको संवाद॥

दोहा॥

पुचकारा बैठायकरि और कही यह बात॥
तेरे भाई और ना शिरपै नाहीं तात॥ ७५॥

चौपाई ॥

सगा चचा ताऊ कोइ नाहीं। तुमहीं हो दादे घरमाहीं॥ अरु मोकूं नितही यह आसा। बड़ा भये करिहै परगासा॥ बाप ददाका भवन जगे है। अरु उनकाही नाम करैहै॥ अरु मैं तोहिं देखकरि जीऊं। तुझ बिन पानी भी नहिंपीऊं॥ अबभी हिये कहा ममआनौ। अड़कूं छोड़ सीख मेरि मानौ॥ बैठौ मुल्लाँ के अरु पढ़िये। जासे ऊंची पदवी चढ़िये॥ अरु तेरी मैं लेहुं सगाई। हरष होय मनकरूं बधाई॥ अरु वैसी खोटी मत भाषो। अतीत होनकी मननहिं राखो॥ ७६॥

दोहा॥

ऊंचे घरके पुत्र जो कहै न ऐसी बात॥
कुललाजै जगहांसहो अरु परतीत घटात॥७७॥

चौपाई॥

अतीतहोयँ रूठे अरु भूखे। कै तनरोग करम के दूखे॥ जिनके मात पिता नहिं कोइ। वै फकीर होजावैं सोई॥ जाकूं कुलकी लाज

न भावे । सो वह मांगि मांगि करि खावै ॥ लाज खोइकै घर घर डोलै । मुखसों दीन बचनही बोलै ॥ कोई कूकर ज्यों भिड़कारै । कोई दे कोई फिटकारै ॥ कोई गाली देकरि भाषै । कोई जूठा टुकड़ा नाषै ॥ द्वार धसै तो मारन लागैं । येअ-तीत होने की साखैं ॥ तुमभी देखो अपनेद्वारे ॥ मांगन आवैं बहु बजमारे ॥ ७८ ॥

दोहा ॥

ऐसा कबहुँ न भाषिये सुनहो पुत्र विशेष ॥
काहूसुनीकाहूनासुनी फिरमतकहियोतेक॥७९॥

चौपाई ॥

महाराज सुनिकै मुसक्यायो । हाथ जोड़कै शीश नवायो ॥ हेतुसहित सब बचन तुम्हारे । कैसे उलटूं जाय न टारे ॥ माताकासा प्यार न कोई । करै न और बिचारा सोई ॥ बड़ी दया मोपै तुम कीनी । अपना जान सीख मोहिंदी-नी ॥ अब तुम सुनिये अरज हमारी । सबही कहूं हिये जो धारी ॥ जो तुम सुनिकै रोष न मा-नौं । जो मैं कहूं सांचही जानौ ॥ जादिन जीव

देह धरि आया । कुटुँबलोग कोइ संग न ला-
या ॥ बिछुरत साथ न लीया कोई । आंखिन
देखि बतावो सोई ॥ ८० ॥

दोहा ॥

या जग में परलोक में कुटुँब न आवै काम ॥
करम किये ह्यां ह्वां सदा कै इकसंगीराम ॥ ८१ ॥

चौपाई ॥

बाप ददा कोइ संग न साथी । काम न आवैं
सुत अरु नाती ॥ जीव अकेला भरमतआया ।
तन तजिकै भटकतही धाया ॥ ऐसेही चौरासी
ठांई । आवागमनमें बहु दुख पाई ॥ जहां कु-
टुँब बहुताही कीया । तहां चला दीयेसे दीया ॥
पशु पक्षी अरु मनुषो माहीं । कुटुँब बिना कोइ
दीखै नाहीं ॥ सबहीके पग बन्धन बांधे । छुटन
उपाव करैं नहिं आंधे ॥ घरसाजैं तामें उरझावैं ।
अपनी ऊंची बात दिखावैं ॥ समझैं ना जड़मूढ़
गँवारे । दुख अरु बोझ लिये अतिभारे ॥ ८२ ॥

दोहा ॥

बापमुवा बेटा हुआ उसही घर का राव ॥

कष्टभार के लेनका उनहूं किया उपाव ॥ ८३ ॥

चौपाई ॥

जीवत कष्ट जगत में पावैं । तन छूटे यमपुर को जावैं ॥ ह्वां जाके दुख सहैं अपारा । कोट बहत्तर में छुटकारा ॥ पाछे मनुष देहधरिआवैं । योंहीं वेद पुराण जो गावैं ॥ ऐसेही नरदेहीजानौं । दुर्लभ पाई यों पहिंचानौं ॥ ऐसा जनमपाय नहिं खोवै । जाकी बुद्धिबड़ी जो होवै ॥ कुटुँब जाल फन्दे नहिं परिहै । जुदाहोय हरिका जपु करिहै ॥ प्रभुकी भक्ति करै जो कोई । हरिपद जाय परापत होई ॥ ८४ ॥

दोहा ॥

या जग में आवै नहीं लहै परम सुखधाम ॥
जनममरनछुटजायदुख पावैअतिविश्राम ॥ ८५ ॥

चौपाई ॥

जगतछोड़ बिरकत जो होई । आनँद पद पावत है सोई ॥ गर्भ योनिमें फिर नहिंआवै । चौरासी यमदण्ड नशावै ॥ इकोत्रसै कुल अपने तारे । और जगतके जीव उवारे ॥ कछू कामना

हिये न राखै । आशा तृष्णा सबही नाखै ॥ सिद्ध मुक्तिकी चाह न जाकै । सो भिक्षा क्यों मांगै आकै ॥ जो राजों सों दीन न बोलैं । सो नहीं घर घर मांगत डोलैं ॥ सबकुछ तजिकै भये जु न्यारे । सो कहु कैसे हाथ पसारे ॥ जिनके हरिके प्रेम की पीड़ा । सो वै निश्चय हुये फकीरा ॥ ८६ ॥

दोहा ॥

भूमि तजी धनहूं तज्यो तज्यो नारि को रूप ॥
जिनके आगे तुच्छहैं छत्तरधारी भूप ॥ ८७ ॥

चौपाई ॥

जो मांगै सो मँगता जानौं । ताको तुम कंगाल पिछानौं ॥ रूठा भूखा रोगीभया । कै कुछ नाहिं कमाया गया ॥ कै निरधन कै जग सर मन्दा । लँगड़ा लूलाकै कोइ अन्धा ॥ काजपेट के भेष बनाया । मांगै खाय जु पालैं काया ॥ जिनके पटतल साध लगाये । जो भूपन सों हैं अधिकाये ॥ ऊंची पदवी देव न सेतू । जिनका नहीं स्वर्ग से हेतू ॥ स्यामवियोगी सदा उदासी ।

आठ सिद्धि नवनिध रहैं दासी ॥ जिनकी ओरी नेंक न देखे। छार बराबर तिनको लेखै ॥ वै गलतान रहैं ब्रह्मओरी। पाहनकी सम लाख करोरी ॥ ८८ ॥

दोहा ॥

जिनके ऊंचे भागहों सोहों निकस अतीत ॥
जगसों नेह उठायकै करैं कृष्णसों प्रीत ॥ ८९ ॥
फिर माता बोली हँसी पुत्तरके सुन बैन ॥
रामरूप यों कहतहै मनमें पायों चैन ॥ ९० ॥

चौपाई ॥

माता उलट कहैये बैना। धनि धनि बालक तुम सुखदैना ॥ ऐसा ज्ञान कहां से पाया। कथा सुनी नहीं गुरुनहीं ध्याया ॥ मैं तो बड़ा अचंभा माना। मेरे मनका भरम बिलाना ॥ मेरे भाग बड़ेही जागे। तुमसे पुत्तर भये सुभागे ॥ जनम आदिलौंकी सुधिआई। तुम्हरे गुण अचरज अधिकाई ॥ अरु मैंने यह निहचै जानी। तुम औतार परम सुख दानी ॥ अपने कुल पारायण करिहौ। जिनके पाप दोष सब हरिहौ ॥ सोई

सपूत दोऊ कुल तारै। सो मैं तुमहीं नैन निहारै॥ ९१॥

दोहा॥

समझभई जबमातको कहन लगी ये बोल॥
गुरभक्तानँद यों कहै तिनकेभाग अलोल॥९२॥

चौपाई॥

जब बालक बोलै करजोरी। ज्ञानभया सब किरपा तोरी॥ तुम्हरे गर्भ लिया औतारा। हमरे घट याते उजियारा॥ दूध तुम्हारे का परतापा। हियमाहीं उपजा हरिजापा॥ किरपा प्यार यही अब करिये। मेरे मनकी दुबिधा हरिये॥ या जगसेती मोहिं छुटावो। खुशीहोय हरिओर लगावो॥ व्याह पढ़नकी फिर मत कहियो। सदा दया यह करती रहियो॥ मुल्लां के फिरना बैठावो। निरबन्धन के सुख दिखलावो॥ जब मैं चाहूं डोलूं बैठूं। जब चाहूं जब खाऊं लेटूं॥ ९३॥

दोहा॥

जबचाहूं हरिजपकरूं गाऊं गुन गोविन्द॥

हरिभक्तन में मिलरहूं उपजै आनँदकन्द ॥

चौपाई ॥

फिर माता बोली सुन लाला । नाहिं पढ़ाऊं जग जंजाला ॥ अरु तेरा अब ब्याह न करिहौं । कुटुँब भार सिरपै नहिंधरिहौं ॥जो तेरेमन ऐसी आई । हमहूँ अज्ञा दई सुखदाई ॥ एक वचन मोसों अब कहिये।जबलगजीऊं ढिगहीरहिये ॥ कीजो भक्ति हमारे पासा । हूजो हमसों नाहिं उदासा ॥ जंगल पर्वत मत उठिजैयो । दृष्टि हमारी आगे रहियो ॥ रहिहैं शीतल नैना मेरे । सरवन वचन सुनतरहौं तेरे ॥ आप भक्तिकरि मोहिं करावो । माताहूको पार लगावो ॥ ९५ ॥

दोहा ॥

मोलायक उपदेशकरि दीजै सेवा ध्यान ॥
अबतक मैं जानीनहीं रही सदा अज्ञान ॥९६॥

चौपाई ॥

वचन तुम्हारेचेती जानी । हरिकी भक्तिसांच पहिंचानी ॥ या बिन जीका ना छुटकारा । दुख दाई भौसागर सारा ॥ आज वचन कीना हरि येका । सुमिरूं रामपकड़करिटेका ॥ काहूकी अब

कही न मानूं । कही तुम्हारी सांची जानूं ॥ सुन औतार खुशी हिय भरिया । माता के पग में शिर धरिया ॥ दे परिकर्मा नायो माथा । पुरवे सभी मनोरथ नाथा ॥ बैठे कही जोड़ दोउ हाथा । करिहौं भक्ति तुम्हारे साथा ॥ दृष्टि तुम्हारी आगे रहिहौं । बहुत दिना को कहूं न जैहौं ॥ बड़ाहोय जोपै कहीं जैहूं । तौ ह्वांसे तुमहीं ढिग ऐहूं ॥ १७ ॥

दोहा ॥

वचन तुम्हारे मानिकै राखिलिये हियमाहिं ॥
करूं तपस्या भक्तिजोतुम चरणनकीछाहिं॥१८॥
मात पुत्र भये एकमत्त भक्ति करनके दाय ॥
धन्यघड़ी वा द्योसकी रामरूप बलिजाय॥१९॥

चौपाई ॥

मात कही खेलो अरु खावो । बालपने के सुख दिखलावो ॥ मनमानै ह्वां बैठो डोलो । हरिभक्तनसूं हँसि हँसि बोलो ॥ मैं मुकलायदिया सब भांती । शीतल भई हमारी छाती ॥ यह कहिकै

नीचे उठिआई। कछू कामकूं माय बुलाई॥ भक्तराज बाहर उठिआये। भये मनोरथ अति हुलसाये॥ मनमेंथी सो अज्ञापाई। खुशी मान मन करी बधाई॥ मनमानै जब भीतर आवै। मनमानै तब बाहर जावै॥ रहने लगे महासुखदाई। माताने दीनी मुकताई॥ १००॥

दोहा॥

अब कहूं नौमें बरसकी लीला परम पुनीत॥
गलीमाहिं निकसनलगे महाराजरनजीत १०१॥

चौपाई॥

सुन्दरमाला करमें लीये। माथे ऊपर टीका दीये॥ भूखा देख दया उपजावैं। घरमेंसे ले देदे आवैं॥ साधुरूप कूं शीश नवावैं। भक्तिरीति कछुकही न जावैं॥ लड़कोंमें नहिं खेलमचावैं। उलटी और भक्ति सिखलावैं॥ कबहूं दो चाकर लेलारे। जाबैठे बाजार मँझारे॥ कबहूं बैठ भवन के माहीं। परमेश्वर को ध्यान लगाहीं॥ कथा होय नाना पै ह्लाईं। कबहूं सुनबेकूं तहँ जाईं॥ कथा माहिं जेतेनर आवैं। इनकी ओरी सबै ल-

खावैं ॥ अस्तुति सुनि सुनि नैन लुभावैं । कहैं धन्य हम दरशन पावैं ॥ नाना भीथा बहुतै भगता । सवापहर पूजा में लगता ॥ १०२ ॥

दोहा ॥

पूजासूं उठ दान करि बागा पहर सँवार ॥
फिरजाता दरबारकूं होकेही असवार ॥ १०३ ॥
राय भिखारीदास था नानाही का नांव ॥
दोयसदा बृतही चलैं इकदिल्ली इकगांव॥१०४॥

चौपाई ॥

दाताथे धरमी उपकारी । दयालई हिंसा सब डारी ॥ पापकरन सूं डरते रहते । हरिका ध्यान अधिकही धरते ॥ भक्तराजके सो वै नाना । करते प्यार बहुत मन माना ॥ देख देख अतिही हुलसाते । खुशीहोय करि निकट बुलाते ॥ कहते वचन जु इन्हैं सुहाता । हिलमिल करते हरिकी बाता ॥ कबहूं माताके ढिगजावैं । नारी सिमट सबै तहँ आवैं ॥ जिनकूं हरिकी भक्ति सुनावैं । उनके मुख हरिनाम जपावैं ॥ बाहर जेते चाकर होई । लागे भक्तिकरन सब कोई ॥ १०५ ॥

दोहा॥

अब सब दशवें बरसके कौतुक देहुँ सुनाय॥
रामरूप जनकहतहै सुनौसंतचितलाय॥१०६॥

चौपाई॥

आवन जान जहां तहँ लागे। हरिके नेह रहैं नितपागे॥ जावैं बाग बगीचों माहीं। काहूकूं सँग लेवें नाहीं॥ साधुसन्त के निकटै जावैं। दरशन देख बहुत सुखपावैं॥ कबहूं जावैं ठाकुरद्वारे। कबहूं बैठैं सन्तों लारे॥ और भांतिकी बात न भावै। हरिके गुणाबादही गावैं॥ माता के ढिग बेगी जावै। ज्योंवै मनमें ना कलपावै॥ ऐसे दयावन्त उपकारी। जिनकी हरिसूं लागी यारी॥ रामरूपजन पूजेपाई। मेरे और आसरो नाहीं॥१०७॥

इतिश्रीगुरुभक्तिप्रकाशेश्रीस्वामिरामरूपजीकृतबालचरित्रेद्वितीयोविश्रामः॥२॥

अथ श्रीकृष्णजीसूं प्रेमलगना ॥

दोहा ॥

बरस ग्यारवें की कहूं अद्भुत बात पुनीत ॥
प्रेमपौध उपजी हिये बढ़ी श्यामसूं प्रीत ॥ १ ॥
प्रेम वृक्ष बढ़ने लगा तरुण भया अतिजोर ॥
तनमन पै छायापड़ी बाहर आया फोर ॥ २ ॥

चौपाई ॥

बरस बारवें पर बल हूवा। हरिबिन और सुहाय न दूवा ॥ रोम रोमही सूं अतिपागे। प्रभु के ध्यान रहैं लिवलागे ॥ चलत फिरत छांई मन राखैं। श्याम मिलन बिन और न भाखैं ॥ लागा नेह देह सुध नाहीं। खान औ पान सबै बिसराहीं॥ कबहूं नैनन सों जलधारा। उठै प्रेम नहिं जाय सँभारा ॥ श्याम मिलन की मनमें आवै। घरबाहर कछु नाहिं सुनावै॥ मिलैंसाधु जासूंयहि बूझैं। मोकूं गोविंद कैसे सूझैं ॥ ऐसे कहि अँसुवा भरिलावै। लहरहिये सूं उमँगी आवै ॥३॥

दोहा॥

ऐसे बीतै चारही बरस प्रेमके माहिं॥
एक दिनाही कथामें जाबैठे वा ठाहिं॥ ४॥

चौपाई॥

कथा समाप्तीही के पाछे। चरचा करनलगे जन आछे॥ घनेहुते जहँ भक्त बिनानी। बोले अपनी अपनी बानी॥ गोष्ठभई जहँ बहुतीबारा। ऊतर देहिं सँभार संभारा॥ महाराज उन केही साथा। पूछा यही जोर दोउ हाथा॥ गुपाल मिलन को भेद बतावो। मेरे मनको दुःख मिटावो॥ यों कहिकरि छाती भरआई। गदगद बानी कही न जाई॥ ऐसा प्रेम देख सब छाके। इनकी ओर सकल जन ताके॥ कही कि धनि धनि प्रेम तुम्हारा। यही गुपाल मिलावन हारा॥ ५॥

दोहा॥

सब साधन ऐसे कहो निश्चय करि यह भेद॥
गुरुबिन गोबिंद नामिलैं छुटैं न मनके खेद॥६॥

यह सुनके महराज के हिये बढ़ो अति नेह ॥
करूं शिताबी ढूंढ़गुरु दुखछुटाय सबदेह ॥ ७ ॥

चौपाई ॥

वा दिनसूं मन यही सँभारी । भई अगरबल चिंताभारी ॥ बढ़ो प्रेम अति अधिक अपारा । ज्यों पावक में ईंधनडारा ॥ अब तो चैनपरै नहिं कैसे । जल बिन मछली तरफै जैसे ॥ चातक स्वाति बूंदकूं तरसैं । ज्यों चकोर बिन चन्दा परसैं ॥ जैसे पियबिन बिरहिनि दुखिया । मणिपाये बिन नाग न सुखिया ॥ ऐसेही बिरह अगिन तन लागी । गई भूख अरु निद्राभागी ॥ सतगुरुकूं ढूंढ़नही लागे । ढूंढे बिरकत तपसी नागे ॥ ढूंढ़ें योगी अरु संन्यासी । ढूंढ़ें सब मत पन्थ उदासी ॥ ८ ॥

दोहा ॥

ऐसा दृष्टि न आवई जहां नवावैं माथ ॥
सतगुरु करिचरनों लगैं शीश धरावैं हाथ ॥ ९ ॥

चौपाई ॥

दिल्लीही के आसा पासी । ढूंढ़े गिरही अरु

नवासी ॥ लिये दीनता सबसूं बोलै । चारों दिशा ढूंढ़ते डोलै ॥ खोज खोज पचि पचि करि हारे । सतगुरु कहीं न नैन निहारे ॥ मनकी तप बुझावन हारा । लाल मिलाय करै सुखसारा ॥ ताते बिरह अग्नि तनजारे । बौरेभये देह अंग सारे ॥ बस्तर पहरनकी सुधनायें । दशदश घोस होहिं अनखायें ॥ सुधकी लैलै रोवनलागैं । जग सोवै ये दुख में पागैं ॥ घर बाहर सब बौरा जानैं । इनका भेद नहीं पहचानैं ॥ १० ॥

दोहा ॥

कुटुँब जाति ऐसे कहैं भया पिता सम पूत ॥
बौरेका बौरा भया होगया सूत कुसूत ॥ ११ ॥

चौपाई ॥

रोवत पलकै सब उड़गइयां । रोम रोममें सइ-यां सइयां ॥ दो दो मास रहैं बनमाहीं । होहिं व्य-तीत रात दिन छाहीं ॥ ऐसे लगा वर्ष उन्नीसा । जानिकसे जहँ मोरनां तीसा ॥ गंगा यमुना के मधि जानौ । शुक्रतार पास पहिंचानौ ॥ जहां कथा शुकदेव सुनाई । राजा परीक्षितको समु-

झाई ॥ ताते शुकतार भया नाऊं। उत्तम अ-
धिक पवित्तर ठाऊं ॥ कृष्णभक्तिकी दाता सोई।
फलदायक वरदायक होई ॥ जनके भावै यही
निज धामा। मुक्ति करन पूरन सब कामा ॥ १२ ॥

अथ श्रीशुकदेवजीके द-
र्शन होना ॥

दोहा ॥

पौन कोस वा पास जो जातैं वाईं ओर ॥
ऊंचा टीला जानिये सहज गये वा ठौर ॥ १३ ॥
लखो अचानक पुरुष ह्वां लघुतरवरकी छांहि ॥
किशोर अवस्था सांवरी तनमें बस्तरनाहिं १४ ॥

चौपाई ॥

आसन पद्म महा दृढ़ कीयें। बैठे नैनन के
पट दीयें ॥ मनको हरिकी ओर लगाये।
ध्यान माहिं अस्थिर ह्वै छाये ॥ श्यामगात
लख मनमथ लाजै। चरन कमल दोउ अति
छबि छाजै ॥ पिण्डली जंघ कहा कहूं सोभा।

ता देखनकूं मनरहै लोभा ॥ कमरपेट छाती अतिसोहै । शोभा बरनसकै कविको है ॥ आजानु बाहु बिबगोल बिराजैं । दोऊहाथ घुटनों पै-साजैं ॥ मुखद्युति गोल अधिक उजियारे । बड़े नैन सुन्दर रतनारे ॥ सनकादि की बाबरी राजैं। मधुर शरीर निरख दुखभाजैं ॥ दूसर पति यह दरशन पाया । होय प्रसन्न हिया हुलसाया १५॥

दोहा ॥

खड़ाहोय ऐसे कही मनहीं मन हुलसाय ॥
सतगुरु कूं ढूंढ़तहुता सो अवलीन्हें पाय ॥ १६ ॥

चौपाई ॥

ठाढ़ेभये भई चौघड़ियां । तबै पुरुषकी आंखि उघड़ियां ॥ मुरली सुतकी ओर निहारे । इनडण्डों तक शीतन सारे ॥ फिरठाढ़े रहे जोड़ें हाथा । आंसू नैन नवायो माथा ॥ देखि देखि मीठी कह बाता । बैठनकी आज्ञा दई नाथा ॥ और कही तुम कितसूं आये। काके बालक कहा दुखपाये ॥ क्यों रोवतकहां तुम्हारा देसा । क्यों होरहे बिरही के भेसा ॥ कौनहेत जङ्गलकूं धाये।

हमकूं देखि बिरह उपजाये ॥ कौन काम ना मनमें राखो। हमसूं सभी खोलकरिभाखो ॥ १७ ॥

दोहा ॥

महाराज शिर नायके बोलै ऐसे बैन ॥
कहुं सिरेसूं खोलकै सुनौ परमसुख दैन ॥ १८ ॥

चौपाई ॥

शीश नवा बोले मृदुबानी । मेरी बिथा न तुमसूं छानी ॥ तुमसे छिपी नहीं गति म्हारी । मोमनकी सबलई निहारी ॥ अन्तर्यामी सबतुम जानौ । ह्वै अजान पूछन की ठानौ ॥ मैं ब्योहार मात्र अबकहिहूं । सब बातन को उत्तर देहूं ॥ मैवात देस मैंडहरा गाऊं । जहां जन मरन जीतानाऊं ॥ दूसर जाति चिमनसे भयऊ । अब दिल्लीमें बासालयऊ ॥ बालपने सों यह रँगलागा । कृष्णचरण सूं अति मनपागा ॥ जिनके मिलन काज दिनरैना । बिरह अगन दुखपरै न चैना ॥ कौन उपाव करूं वापाऊं । नैन हियेकी तपन बुझाऊं ॥ सत सङ्गत में यह सुधपाई । गुरुबिन दरशन होय न काई ॥ १९ ॥

दोहा ॥

ऐसे सुन हियमें धरी करूं ढूंढ गुरुदेव ॥
वैमनसा पूरनकरें देकरिभेव अभेव ॥ २० ॥

चौपाई ॥

वाही दिनसूं ढूंढतभया । घरसूं जहाँ तहाँ उठगया ॥ ढूंढे सन्यासी वैरागी । पै मेरी बुधकहूं न लागी ॥ ढूंढे पंथ सकल मैं जाई । कहीं न मनमें निश्चय आई ॥ वनहीं बन ढूंढत बौराया॥ फिरत फिरत मैं ह्यांहूं आया॥ भये अचानक तुम्हरे दरशन। मनभया अस्थिर तनभया परम सन ॥ डोलन फिरन बिपत सब खोई । तुमचरणन में सुरति समोई ॥ तुम देखत हो सब फलदायक । दृष्टतुम्हारी सब कुछ लायक ॥ यही जान निश्चय अब कीना । तनमन भेंट तुम्हारी दीना ॥ २१ ॥

दोहा ॥

थाल किया दोऊ हाथका धरा शीश तिह माहिं ॥
तुम चरणन परिवारियामैं कुछरहा जुनाहिं ॥२२॥

चौपाई॥

यह कहिकरि नैना भरिआये। उनउठ पकड़ कण्ठसूं लाये॥ फिर बैठाय बहुत हित कीना। बालपने का पता जु दीना॥ अपने गांव नदीके पाहीं। तुम खेलतहे लड़कनमाहीं॥ फिरता एक अतीत जु आया। हँसकरि तुमकूं निकट बुलाया॥ फिर उनगह के कन्धचढ़ाया। जा बैठा बड़ही की छाया॥ बातैं कही गोदमें लीने पेड़ेदोय हाथ में दीने॥ वाकी सुधवी है कछु दाईं। मिलै पिछानौ अकि तुमनाहीं॥ सकि राजसुन सुधमें आये। हँसके चरण कवँल लिपटाये॥ २३॥

दोहा॥

यह वह सूरति यक लखरहे टक टकी लाय॥
रोम२ हरषत भये आनँद अतिहीपाय॥ २४॥

चौपाई॥

औतारी धनि धनि बहुकीनी। कही कि अपनेकी सुधलीनी॥ बड़े बचन अपना जो पावैं।

जिसपर हाथ धरैं वातारैं ॥ बालपने तुम दरशन दीना । मेरासकल तिमिर हरिलीना ॥ वाही दिनसूं ऐसी भई । भक्तिकृष्णकी हिरदै छई ॥ सब कुछ तुम्हराही परतापा । अब किरपा दरशाया आ-पा ॥ मैं अज्ञान कछू नाहिंजानी । तुम्हरी दया नाहिं पहिंचानी ॥ कहा जीभ यह अस्तुति कहै । तुम किरपाको अन्तनलहै ॥ बार बार ऐसीचित धरूं । शीश उतार वारनै करूं ॥ मैं नहिं मैंनहिं मैं नहिं स्वामी । तुमहीं तुमहो अन्तर्यामी॥ऐसी कहिकरि शीश नवाया ॥ फिर जवहीं बोले ऋषि राया ॥ २५ ॥

दोहा ॥

कही कृष्णका अंसतुम लिया भक्ति औतार ॥
जीव उबारन आइया ऐसैं बहुतकबार ॥ २६ ॥

चौपाई ॥

जब जब पापबढ़ै जगमाहीं । भक्ति बिगड़ औरैहोजाहीं ॥ तब तब तुम धरिधरि औतारा । भक्ति बीजको आन सँभारा ॥ यही जान हम देखन आये । तुम ज्योंके त्यों साँचेही पा-

ये ॥ वैसेही लक्षणको तिगसारे। वैसेही लखे सुभाव तुम्हारे ॥ यह सुनके नीचे दृगकीने। सुकचलियेहीं उत्तरदीने ॥ तुम सतगुरु मैं दास तिहारा। अब अपना करि मोहिं निहारा ॥ जान आपना देत बड़ाई। जैसे मातपिता सुखदाई ॥ जब बालककूं गोद खिलावैं। ऊंचाकहि कहि ताहि सुनावैं ॥ २७ ॥

दोहा ॥

कभी कहैं मेरा भूप है कभी बादही शाह ॥
कभी कन्हैयासा कहे योंलोरी दे वाहि ॥ २८ ॥

चौपाई ॥

मैं तुम्हारा भावैं ज्यों भाषो। भावैं कांधे चरनों राषो ॥ तुमहीं सबकुछ मैं कुछनाहीं। अबगह लीजै मेरी बाहीं ॥ मोकूं शिष्य सुगन अबकीजे शीशहाथ धरि दिच्यादीजे ॥ आसाधरि जित तित फिर आया। अपना गुरु ढूंढ़अब पाया ॥ आसदास की पूरी करिये। करो अतीत सबै दुख हरिये ॥ यह सुनके बोले ऋषबानी। बात तुम्हारी सब हम जानी ॥ कही तुम्हारी हिरदेरा-

खी। करिहूं वही जो तुमने भाखी ॥ तुमतौ अब हूं जगते न्यारे। कहा तजनकूं सो कहु प्यारे २९॥

दोहा ॥

औतारी ऐसे कही सुनहो दीन दयाल ॥
बिरह तजूं पियसूं मिलूं कीजेमोहिं निहाल ३०॥

अथ भक्तिराजको शिष्य होना ॥

दोहा ॥

ऋषिने बूटी एक तब ह्वाँई दई बताय ॥
याको पीसो तोड़िकै फिर मोपै लै आय३१ ॥
जब बूटी महराज ने तोड़ी पीसी लाय ॥
सतगुरु के करमेंदई चरनौंसीस नवाय ३२ ॥
ऋषि ने जब परसन्न ह्वै लिये पास बैठाय ॥
हँसकर शिर नांगा किया बूटीदई लगाय३३ ॥

चौपाई ॥

सारे शिरपै लेपन कीन्हीं। घड़ी एकलाये जब चीन्हीं ॥ फिर न्हांणे की अज्ञादई। जभीं

पोषरी झांइक भई ॥ भक्तिराज न्हायेतिहमा-
हीं। पहलैं दोऊ हाथ सिर लाहीं ॥ मलकरि
सीस नीर सों धोया। उतरवाल सब निरमल
होया ॥ न्हाय आय बैठे जब पासा। ऋषिकही
कंकर घसला दासा ॥ जबहीं उठ कंकर घस
लाये। आगे हाथ किया हुलसाये ॥ ऋषिक-
हीटीका मेरे कीजै। तन मन भेट हमारीदीजै॥
भक्तिराज ने ऐसेही किया। टीका काढ़ भेट
सब दिया ॥ ३४ ॥

दोहा ॥

मुनी हाथ ऊंचा किया इक्षा कीनी तेक ॥
आई कण्ठी गैबसों करमें सुन्दर एक ३५ ॥

चौपाई ॥

ले कण्ठी दोऊ करमें साँधी। भक्तिराज के गल
में बांधी ॥ माथेतिलक झिलमिली कीया। श्री
जोति रेषा कहिदिया ॥ अरु गुरुमन्त्रर कान
सुनाया। उत्तमविधि नितनेम बताया ॥ कही
कि पहिले करि अस्नाना। फिर बैठे नीके अ-
स्थाना ॥ चन्दन घस करमांहीं लीजै। फेरगुरू

का ध्यान जु कीजे॥ ध्यानबँधे जब सीस नवावे। गुरुके मस्तक तिलक चढ़ावे॥ सबहीविधि सों पुजा करै। फिर चरणों पर माथा धरै॥ दहिने सात परिक्रमा कीजे। बैठ दण्डौत चरण चित दीजै॥ फिर कहिये जोड़ें दोउ हाथा। भक्तिदान वरदीजै नाथा॥ दीनहोय करि ऐसे बोलै। ताके पीछे नैनां खोलै ३६॥

दोहा॥

फिर अपने टीका करै तनमें द्वादस ठांम॥
अचवनलेकरि हाथ धो कीजे प्राणायाम॥३७॥
सोलह ॐकारले पूरक कीजै धार॥
चौंसठ ॐकार को कुम्भक रखो सँभार॥३८॥
फिर ॐ बत्तीसही रेचक सहज उतार॥
प्राणायामकी तीनबिध यहतुम लेहु निहार३९॥
ऐसे प्राणायामही कीजे चौबिस बार॥
सम्पूर्ण नहिं होसके तो आधा जु बिचार४०॥

चौपाई॥

पूरक बायें स्वरसों लीजे। दहिने स्वरसों रेचक कीजे॥ फिर दहिने स्वर पूरक धारो। बायेंस्वर

रेचक निरवारो ॥ ऐसे वारी वारी करिये । सुर-
ति निरति त्रिकुटी में धरिये ॥ ताके पीछे और
सँभारो । श्रीकृष्ण का ध्यान विचारो ॥ सुन्दर
मन्दिर नीके रचिये । गोलसिधा सनता में स-
जिये ॥ पाये अष्ट कँवल आकारो । कंचन का नग
जटित निहारो ॥ तापैश्री राधा स्यामसुजाना ।
चा छवि को निरखै करि ध्याना ॥ फूलन की
माला पहिरावै । चन्दन तिलक लिलाट चढ़ा-
वै ॥ सकल सौंज सों पूजा सरै । तन मन धन
न्योछावर करै ॥ दे परिक्रमा शीश नवावै । च-
रनन सों दोउ नैन छुवावै ॥ ४१ ॥

दोहा ॥

कहै कि यह किरपा करो लीजै मोहिं उबार ॥
भक्ति आपनी दीजिये प्रभुजी बारम्बार ॥ ४२ ॥

चौपाई ॥

वन्दन करि पीछे हटिआवै । तहां बैठ टकटकी
लगावै ॥ निरषै छवि जवलग मन भावै । वारम
वार वारने जावै ॥ नैन छकैं अरु हिया सिरावै ।
ऐसा ध्यान किये सुख पावै ॥ जाके पीछे

दसही माला। गुरु मन्तर जप होय निहाला॥ ताके पीछे तर्पण कीजै। यह पूजा की विधि सुनिलीजै॥ दुःख सुख सदा कियेही जैये। बिन नित नेम कभूं नहिं रहिये॥ भोगलगाकर भोजन खइये। सन्ध्या भोर आरती गैये॥ भक्तिराज सुनकै चित धारा। बहुरि दीन कै बचन उचारा॥ दयाकरी बहुतै सुख पाया। किरपा करि मोहिं चरण लगाया ४३॥

दोहा॥

अपना नाम बताइये करूं सोई मैं जाप॥
और कहो अस्थानकित जहां बिराजोआप ४४॥

चौपाई॥

जब चाहूं जब ह्वां मै आऊं। तहां आयकरि दर्शन पाऊं॥ अब मैं जनम तुम्हारे पाया। तुम करि चरन कँवल की छाया॥ नांव दासका औरै धरिये। अरु मन की दुबिधा सब हरिये॥ बाना कहो कहां अब राखूं। काको गहूं कौनको नाखूं॥ योग भक्ति अरु ज्ञान बताओ। किरपा करिकै तत्त लखाओ॥ अरु कहिये चौथा बैरा-

ग। और बताओ मन सों त्याग ॥ रहनी गहनी की विधि कहिये। वही बताओ ज्योंकरि रहिये ॥ अब इच्छा यह पूरी कीजै। अभै दान सतगुरु मोहिं दीजै ॥ यह सुनिकै ऋषि उत्तर दीनों। चितदे सुनिये नीके चीनों ४५ ॥

अथ श्रीशुकदेवजीसे उपदेशलेनो लिख्यते॥

दोहा ॥

या शरीर का नांव है व्यासपुत्र शुकदेव ॥
मन्दिरकहीं न साजियोयही सिष्यसुनलेव ४६ ॥

चौपाई ॥

विरकत वही जु घर नहिं साजै। रहै ठहर तौ वाना लाजै ॥ कबहूं न छूवै आठौ धाता। काहू से बांधै नहिं नाता ॥ हर्ष शोगनहिं वैरी मीता। कबहूं मन उपजै नहिं चीता ॥ नित आनन्द परम गति पावै। धूनी तपै न आग जलावै ॥

गर्मी में नाहिं पवन ढुरावै। पात फूल फल पड़े जु खावै॥ बिन कोपीन और नाहिं बस्तर। सुई बराबर रखै न शस्तर॥ मुक्ति आदि दे रखै न आसा। रूखे बिरखै जंगल बासा॥ ध्यान धनी का सुध नहिं देही। हरि गुरु बिना न और सनेही॥ ४७॥

दोहा॥

यही समझ हम ना किया कहीं ठौर अस्थान॥
जहां तहां रमता रहूं मोहिंपरी यहबान॥४८॥

चौपाई॥

एक ठांव नहीं जहां तुम ऐहो। ध्यानमाहहीं दर्शन पैहौं॥ जब दर्शन की चितमें लावो। उहीं समैं तुम ध्यान लगावो॥ रूप हमारा दर्शन लागै। संसै चाह सभी ह्वां भागै॥ कोई मन संदेह जो होई। ध्यानहिं माहिं पूछियो सोई॥ वाको उत्तर सब मैं देहों। तुमरे निकट सदाही रहिहों॥ जब चाहूं जब परघट मिलहूं। यही वचन निहचै करि भलहूं॥ नांव दूसरा चर नहीं दासा। भक्तिमांह हूजो परगा-

सा ॥ हरिके चरण कँवल करि बासा। जगसों रहिहौं सदा उदासा ॥ ४९ ॥

दोहा ॥

पीत बसन सब राखियो मांटी का रँग होय ॥
गहियो मत भागवत का धर्म बैसनों सोय ५० ॥
ऐसे गुरु आज्ञा दई सिसनैं लीनी धार ॥
रामरूप जन दोऊ परिवारा बारम बार ५१ ॥

चौपाई ॥

सुखदेव गुरू तब योग बताया। कछू न राखा सब समझाया ॥ प्रेमभक्ति हियहुती सदाई। व्योहारमात्र तो भी समुझाई ॥ दिया ज्ञान भया घट उजियारा। ताते अपना रूप निहारा ॥ समुझाया वैराग बसेषा। मुक्तिआदि फल सूक्ष्म देखा ॥ आठसिद्ध बिष्टा समजानी। इन्दर पदवी छारस मानी ॥ छिपाभेद और कुछ दीया। सब विधि अपना महरम कीया ॥ ऐसे सतगुरु परम दयाला। अपने शिष्यको किया निहाला ॥ सब विधि करिकै मेटी प्यासी। संबत् सत्रहसै उणासी ॥ चैत महीने के मध्य

माहीं। पड़िवा बृहस्पति वार सुहाहीं॥ रामरूप जिन के जस गावै। यही इनाम भक्ति दृढ़ पावै॥ ५२॥

दोहा॥

साढ़ेपांच पहर रहा दोनों का ह्वां साथ॥
डेढ़ पहर जब दिन हुता चारपहरकी राति ५३॥

चौपाई॥

भोर भये सुखदेव गुसाईं। बोले अब हम बन को जाईं॥ तुमहूं अब दिल्ली को जावो। अपनी मा की आंखि सिरावो॥ इतना सुनछाती भरि आई। नैंनन सों जलधार बहाई॥ ऐसा देख लाय उर नाथा। आंसू पोंछे दहिनेहाथा॥ कहि बिछुरन दुख हिये न लावो। ध्यान करो जब दर्शन पावो॥ हमतो तुमरे नितही साथा। ऐसे कहिकरि छोड़ी बाथा॥ भक्तिराज ने तब यों चीन्हीं। दे परिकरमा दण्डवत कीन्हीं॥ कही कि मो देखत मतजावो। पहलेही अब मोहिं पठावो॥ ५४॥

दोहा॥

तब गुरु ने आज्ञा दई पहलेही तुम जाव॥

बैठा देखो भांति जिह यही ध्यान हियलाव ५५

चौपाई ॥

करि दण्डवत चलनकी धारी। चला न जाय भये पग भारी॥ तन कांपै पग परै न आगे। बिरह अग्नि उठ रोवन लागे॥ कण्ठ उसास कहा नहिं जाई। धीरज दृढ़ता सबै गँवाई॥ ऐसे देखि दया मन आई। फिर गुरुने ढिग लिया बुलाई॥ दीनी दृढ़ता बहुती भांता। कछु यक मन आई जब सांता॥ तब कहि हाथ जोड़ यह बाता। पहिले आप पधारो नाथा॥ दै धीरज चाले जब स्वामी। निरमोही अरुअति निहकामी॥ ये ठाढ़े ह्वां देखन लागे। वै पग धरैं सुआगेहि आगे॥ ५६॥

दोहा ॥

दृगन सों भए ओटही दीखे ना जब नाथ॥
तब धरनीपरबैठिया तनमन अति उकलात५७॥

चौपाई ॥

गुरु बिछोह दुखमय अति पागे। कही कि फूटे नैन अभागे॥ कहा करूं रघतन के माहीं।

जिनसों स्वामी दीखत नाहीं ॥ गुरु बिछुरे व्याकुल तन सारा। ज्यों सूरज बिन जग अँधियारा ॥ जैसे तरफत जल बिन मीना। जैसे नाग खोय मणिहीना ॥ ऐसे ह्वैगई दसा हमारी। जैसे बालक बिन महतारी ॥ भक्तिराज ऐसे मन सोचैं। बार बार वा ओरी लोचैं ॥ घड़ीचार लों यह गति रही। समझ समझ फिर धीरज गही ॥ ५८ ॥

अथ श्रीशुकदेव जीके दर्शन करके महाराज चरनदासजीने दिल्ली को गवनकीना माता जीसों मिलके बाना पहरा लिख्यते ॥

दोहा ॥

दण्डवत करी वा ठांवको दे परिकरमा सात ॥
नैंना किये उदासही उतरे ढीले गात ॥ ५९ ॥

चौपाई ॥

चले थके से मन को हारैं। मुड़ मुड़ कै वा

ओर निहारैं ॥ ह्वांसे आय प्रोजपुर माहीं । बैठ रहे भोजन कियो नाहीं॥ ध्यान माहिं फिर दर्शन पाये। गुरुने हितकरिकै बहु समुझाये॥ कहाकि जब जब ध्यान करैहो । ऐसेही तुम दर्शनपैहो॥ अरु हम तुम कभूं जुदे जु नाहीं । तुम मों मैं मैं तुम्हरे माहीं ॥ मगनहोयहिय आनँद लावो। सुखी होय दिल्ली को जावो ॥ तबहीं खुली आंखि सुखछाये । गुरु किरपा लखि अति हुलसाये ॥ भोर भये कछु भोजन लीना । दिल्ली ओर गवन फिर कीना ॥ दिन बारह में दिल्ली माहीं । आ पहुँचे चरनदास गुसाईं ॥ ६० ॥

दोहा ॥

लगतेही बैशाख में आये दिल्ली माहिं॥
बहुत सुखी आनन्दसों पहुँचे माता पाहिं ६१ ॥

चौपाई ॥

करि दण्डवत परिक्रमा दीनी। हाथ जोड़ह्वै अति आधीनी ॥ कुंजो ने उठ कण्ठ मिलाये । मात पुत्र मिल बहु सुख पाये ॥ पूछी थे कहां कितसों आये । अब कैतो दिन बहुत लगाये ॥

जब बोले हँसिके सुखदाई । सुक्रतार की कथा सुनाई ॥ ज्योंक रिगये मिले गुरुजैसे ॥ भिन्न भिन्न सब खोली तैसे ॥ और कही यह किरपा तेरी । भई कामना पूरन मेरी ॥ जिह कारन डोलत भटकायो । अबमेरो मन निहचल आयो ॥ अब कहीं बैठ धरूं हरि ध्याना । सबही छोड़ा आ-वन जाना ॥ ६२ ॥

दोहा ॥

जब माता ऐसे कही धन्य तुम्हारे भाग ॥
पूरे गुरु तुमको मिले मिटे बिरह के दाग ६३ ॥

चौपाई ॥

एक एक के उठ पग लागे । खोल कही सब नानां आगे ॥ गुरु दीक्ष्या की सबही बाता । कही ओडसूं सारी काथा ॥ नाना सुन बहुतै हरषाये । कही धन्य ऐसे गुरु पाये ॥ पूरे गुरु भागन सों पावै । बहुत जनम तपकरताआवै ॥ तुम्हरा संसकार कोइ भारी । ऐसे गुरू मिले उपकारी ॥ बाल पने से निहचै जानूं । तुम को औतारी पहिंचानूं ॥ तुमको ऐसेही गुरुचाहिये ।

सर्व कला सम्पूर्ण लहिये ॥ ऐसी सुन नानांकी वाता। भक्तिराज बोले सुखदाता ॥ ६४ ॥

दोहा ॥

यह किरपा तुम बड़ेन की तुम्हरे पुण्य प्रताप ॥
भक्ति उपज गुरुहू मिले भई दृढ़ता अस्थाप ६५ ॥

चौपाई ॥

फिर जवहीं माता बुलवाये। किये सु भोजन बैठ जिमाये ॥ दूजे दिन बस्तर बनवाये। टोपी चोला दोय सिमाये ॥ पीली माटीके रँग बोरे। कर में लेकरि तबै निचोरे॥ सुखायलाय माता के आगे। धरि दण्डौत करनही लागे ॥ कही कि माता यह सुन लीजै। गुरु आज्ञादई तुम भी दीजै॥ पहरूं बस्तर खुसी मनाऊं। और अतीत को भेष बनाऊं ॥ माता चोला लिया उठाई। हाथ दिया टोपी पहिराई ॥ माथे तिलक ज्योतिही रेखा। सुन्दर धरा बैसनों भेषा ॥ ६६ ॥

दोहा ॥

सुक्रतार की ओर को करि दण्डवत अनेक ॥

गुरु सरूपमन धारिकै जिनौंदिया यहभेष ६७॥

चौपाई॥

फेर करी माताकी ओरी। वै मुसकानी छवि-लखि औरी॥ दई असीस जानि बहु प्यारा। होय प्रताप बहुत बिस्तारा॥ शीस नवायकरबा-हर आये। ह्वां नांनां के दर्शन पाये॥ वेहू हँसे देखि छवि न्यारी। शोभा अधिक लगी जो प्यारी॥ होय प्रसन्न रहन जब लागे। अतिही प्रेम भक्ति मैं पागे॥ बार बार मन में यहीआ-वै। करूं जोग जागहि कहीं पावै॥ फिर बाहर दिल्ली के माहीं। एक हितूने ठौरबताहीं॥ जाय गुफा अपने करभारी। लेसी लपी खूब सँवारी॥ ६८॥

अथ श्रीसतगुरु चरन दासजी ने दिल्लीमें गुफा बनवायके चौदह वर्ष योग साधनाकरी॥

दोहा॥

आसन जहां बिछाय के जा बैठे वा ठौर॥

मन में धीरज धारिकै रहन लगे निसभोर ६९॥
सिमट ओर प्रभुकी लगे तजिकै जगतअसार॥
रामरूप यों कहतहैं रहा न और बिचार ७० ॥
उन्नीस वर्ष जो उतरिकै लगा बीसवां साल॥
योग करन को बैठिया सतगुरुदीनदयाल ७१ ॥

चौपाई॥

सात पहर रहैं गुफा मँझारी। एक पहर निकसैं अति बारी॥ होतहोत पुन ऐसा होई। दो दो दिन निकसैं नहिं कोई॥ फिर भयाआठ आठ दिन लागैं। दिना नवैं ताड़ी सों जागैं॥ फेर कछू गिनती नहीं रही। जब समाधि पूरी-ही भई॥ चौदह वर्ष योग यों कीया। अपना मन जगओर न दीया॥ पहिले आसन संयम साधे। छहों कर्म नीके आराधे॥ नौनाड़ीसाधी दस वाई। सनइ सनइ बस में सब आई॥ तीनों बँध साधे जो ठीके॥ पांचौ मुद्रा साधी नीके॥ सुरति निरति दोऊ परमोधे। फिरषट चक्करसबही सोधे॥ ७२॥

दोहा॥

सबही साधन साधिकै पायो घटको भेव॥

मनराजाको जीतिकै संगलियो गुरुदेव ७३ ॥

चौपाई ॥

भँवर गुफा ब्रह्मरन्धर देखा । बंकनाल को लहा बसेखा ॥ सहस कँवलदल ऊपर राजै। तेज पुंज जहां अधिक बिराजै ॥ अमर लोक ताऊपर होई। कोटों मध्ये पावै सोई ॥ कुंभक आठ साध जो लीन्हा। फिर केवल कुम्भकही कीन्हा ॥ दसवें द्वार सुरति ले दीनी । देखी अचरज ठौर नवीनी ॥ अनहद शब्द जहां घन घोरै । चन्दन सूर नहीं निस भोरै ॥ निरगुन सेज महा सुखदाई। सोए महाराज लौलाई ॥ दसइन्द्री मन के वस करिया। मनको रोंक पवन में धरिया ॥ ७४ ॥

दोहा ॥

पवन रोक अनहद लगे पायो पद निरवान ॥
तीनों मिल एकैभये ध्ये ध्याता अरु ध्यान ७५॥

चौपाई॥

लगीसमाधि सुरति नहिं कोई। सेवकस्वामी रहा न दोई ॥ ऐसी दशा होय जब नाहीं।

ज़ाड़ा गर्मी धूप न छाहीं ॥ पापपुण्य दुख सुख नहिं शोगा। नरक स्वर्ग का जहां न भोगा॥ राजस तामस गुण नहीं साती। चन्द्र न सूर दिवस नहिं राती॥पद निरबान आनसबभूले। सोरा तुरी पालने झूले॥ गुरुबिन ऐसी सेज न पावै। जहांपियासँग रली मनावै॥ दोनोंमिल एकै होजाई। जब आनँद होवै अधिकाई॥ ऐसे सुख पै सर्बस वारूं। आठ सिद्धि नवनिधि सब डारूं॥ ७६॥

दोहा॥

अर्थ धर्म काम मोक्षको सन्तन चाहत तेक॥
श्यामामिलन सुखकारने धराअतीतक भेष ७७॥

चौपाई॥

अष्टांग योग हठ योग जु कीया। राजयोग सब साध जु लीया॥ भक्तियोग कीन्हा करि हेती। सांख्य योग साधा हित सेती॥ परकाया परबेश बिचारा। साधा तन सों होना न्यारा॥ भांति भांति किरिया आराधी। जिन से पाया भेद अगाधी॥ और पपील बिहंगम लेखै। दोनों मारग नीके देखै॥ एक राति ऐसी कछु भई।

आग पड़ोसीके लगगई॥ छप्पर हुता गुफा के आगे। उड़े पतंगे ह्वां आ लागे ॥ छप्परजला गुफापर गिरिया। वाके संग गुफा भी जरिया ॥ बलती गुफा सबन जो चीन्ही। दौड़े लोग बुझावन कीन्ही ॥ भक्तिराज की ताड़ी लागी। बहदाभया तऊ नहिं जागी ॥ ७८ ॥

दोहा ॥

भोरभयें ताड़ी खुली नेक न आई आंच ॥
एकरोमहू ना जरी ऐसा रक्षक सांच ॥ ७९ ॥

चौपाई ॥

लोगन सुनी देखने आये। महाराजको नीके पाये ॥ धनिधनि सबही कहने लागे। हरषे बहुत अधिक सुख पागे ॥ मुरली सुत यह उत्तर दीन्हा। जो कुछ किया सो हरिने कीन्हा॥ फिर ह्वां से मन भया उदासा। कही कि और करूं कहीं बासा ॥ आछी ठौर जहां चित लागै। अस्थल साजूं ऐसी जागै ॥ ८० ॥

इति श्रीगुरुभक्तिप्रकाशेस्वामीरामरूपजीकृतप्रेमप्रभावसद्गुरुभासेतृतीयोऽविश्राम ॥ ३ ॥

अथ श्रीमहाराजजीको राजविध रहनो लिख्यते॥

चौपाई॥

फतेपुरी के बाग मँझारी। ह्यां की ठांवलगी जो प्यारी॥ बीरमदेके नाले पासा। करि अस्थल जहां लियो निवासा॥ ध्यानमाहिं गुरुआज्ञा दीनी। कोइकदिन रहो भांति नवीनी॥ गद्दी राज साज करि रहिये। उहीं रहो ज्यों भूपन चहिये॥ ८१॥

दोहा॥

वाही विधि रहनेलगे राज रीति की भांति॥
रामरूप यों कहतहैं भूपनकी सी कांति॥८२॥

चौपाई॥

तीस आदमी चाकर किये। सेवा टहल बांट सब दिये॥ कोई विछौनो सुघर बिछावै। कुरसी जहां सुधार धरावै॥ काहू टहल मोरछल लीनी। काहू पीकदान की दीनी॥ कोऊ टहलुवा सेज

बिछावै। कोई बागाचुनि पहिरावै ॥ ब्राह्मण राखा करन रसोई। द्वार पौरिया राखेदोई॥ चारकलावँत गावैं साखे। प्यादे दसड्यो-ढ़ी परराखे ॥ एक मुसद्दी को रखिलीना। अपना एक मुसाहिब कीना॥ कहार एकपा-नी भरिलावै। नाईएक मसाल जलावै॥ और एक आसेबरदारा। राखा एक न्हुलावनवा-रा॥ वही टहल पूजा की करै। सकल सौंज लै आगे धरै॥ दोवै हाट बजारन जावैं। काम काज हो सो करि आवैं॥ ८३॥

दोहा॥

टहल दई सब बांटिकै चरणदास महराज॥
आनँदसों रहने लगे करिकै सुख केसाज॥८४॥

चौपाई॥

रहनी छांकी सबही गाऊं। जो कुछ किया सो खोल दिखाऊं॥ पहर एकके तड़के जागैं। न्हाय धोय पूजा में लागैं॥ पूजा करि करमें जल लेवैं। करि संकल्प द्विजनको देवैं॥ब्रा-ह्मण नया बोलाय गुप्तही। रुपये साठ दान

दें नितही ॥ नित्य नेम सों निबड़े जबहीं। सुन्दर बस्तर पहिरें तबहीं ॥ कुरसी ऊपर बैठें छबिसों। नर दर्शन को आवैं जबसों ॥ हाथी और पालकी वारे। हिन्दू तुरक भीड़ हो भारे ॥ रावरंक दोऊ चल आवैं। हितसों सब की ओर लखावैं ॥ एक दृष्टि सब ओर निहारें। सब सों प्यारकरैं इक सारें ॥ जो कोइ दुष्ट कहे इनआगें। ताकीचितदै सुननेलागें ॥ सब विधि वाकी करैं सहायी। तन मनसों सब के सुखदायी ॥ पै काहू की भेंट न राखैं। दुखी मिलै वाको कछु नाखैं ॥ एक पहरलौं सजिदरबारा। फिर आ बैठें भवन मँझारा ॥ ८५ ॥

दोहा ॥

फिर दूजे दरबारही सजें पहर दिन होय ॥
आवन जाना नरनका भीड़ सांझलगसोय॥८६॥

चौपाई ॥

सांझ समय आरती करहीं। मन में ध्यान धनी का धरहीं ॥ ताके पीछे होय समाजा। गद्दीपर बैठें महराजा ॥ गावनवारे चारौं आवैं। सहित ताल स्वरसाज मिलावैं ॥ गुणाबाद

अमृत बरषावैं । डेढ़ पहर ऐसे नित गावैं ॥ भक्तिराज फिर भवन मँझाई । पौढ़ैं शय्याऊपर जाई ॥ ये जो कही राज की रीतैं । आठ पहर ऐसेही बीतैं ॥ आनँद करैं गुरू का दीया । धन ऐसे पुरुषों का जीया ॥ ऐसेरहैं सदा वह ठाईं । तन सों ह्वां परि मन हरिपाईं ॥ आठों सिद्धिरहैं पग लागी । टहल करन कारन बड़ भागी ॥ सोंहींतकै रहै दिन राती । कब आज्ञा दें हमैं सुहाती ॥ ८७ ॥

दोहा ॥

आठौं सिधि ठाढ़ी रहैं जैसे खिदमतगार ॥
टहल करन के कारणे संगदई करतार ॥ ८८ ॥
शोभा श्रीचरणदासकी अब मैं बरणौं जान ॥
रामरूप जन कहतहैं सुनियो सन्तसुजान ॥ ८९ ॥

चौपाई ॥

सिंहासन पर बैठे सोहैं । छबि बरणें ऐसे कवि कोहैं ॥ अपनी बुधि लाय कछु गाऊं । अब उनके चरणन शिर नाऊं ॥ मिहँदी रचन कही नहिं जाई । मन लागो नख सुन्दरताई ॥ दहिने

तोड़ा सोने केरा। बायें पग में कँगना गेरा॥ पीरा फेंटा शिरपर राजै। तुर्रा कलँगी अधिक विराजै॥ पीरा जीमा तनके माहीं। घेरदार अतिही घुमराहीं॥ घुण्डी लगी जड़ाव विशाला। बड़े बड़े मोतियन गल माला॥ नौ रतनों के बाजू बांहू। दोउ कर पहुँची रतन जड़ाऊ॥ अंगुरी अंगुरी पहर अँगूठी। मिहँदी हाथौं लगी अनूठी॥ ९०॥

दोहा॥

प्रेमभरे नैना बड़े बदन श्यामही रंग॥
बांकी मूंछैं सोहनी हिय में हर्ष उमंग॥ ९१॥
मुसक्याते दीखैं सदा अधरन यही सुभाय॥
माथे टीका झिलमिली रामरूप बलिजाय॥९२॥
रूपेकी चौंरी लिये ढोरै खिदमतगार॥
महाराजको ध्यान यह लीजो हियमें धार॥९३॥

अथ श्रीरनजीत गुसाईं के एकसौ आठ नामकीमाला लिख्यते ॥

राग काफी ॥

मनुषा देह धरी है परमारथ के हेत। विष्णु देव पूरण अविनाशी जैत जैत नित जैत॥ नाम तुम्हारे अनगिन जगमें कछु यक कहूं बखानि। जाके जपे लाभ बहुतेरे पापन की होय हानि॥ जगन्नाथ॥ १॥ घट घटके बासी॥ २॥ सुंदर श्याम सुजान॥ ३॥ दीनानाथ॥ ४॥ चतुर्भुज॥ ५॥ ठाकुर॥ ६॥ तिमिरहरंणकूभान॥ ७॥ दीनदयाल॥ ८॥ दीनबन्धु॥ ९॥ स्वामी॥ १०॥ ढूसरपति॥ ११॥ उद्दार॥ १२॥ मुरलीसुत॥ १३॥ अरु कुंजोनन्दन॥ १४॥ प्रागदास उरहार॥ १५॥ सोभनजी के कुलके दीपक॥ १६॥ भक्तिकरन परकाश॥ १७॥ भक्तिराज॥ १८॥ महाराज॥ १९॥ गुसाईं॥ २०॥ जनकी पूरणआश॥ २१॥ लज्जाधारी॥ २२॥

करनसुखारी ॥ २३ ॥ चरनदास धर्मपाल ॥ २४ ॥ जनसुखदैना ॥ २५ ॥ दुखहरिलैना ॥ २६ ॥ मानसरोवरताल ॥ २७ ॥ गुणके सागर ॥ २८ ॥ महाउजागर ॥ २९ ॥ भक्तनके रक्षपाल ॥ ३० ॥ गुप्तीधारण ॥ ३१ ॥ दुष्टनिवारण ॥ ३२ ॥ दुरजनके उरशाल ॥ ३३ ॥ रणजीता ॥ ३४ ॥ सूरा ॥ ३५ ॥ अरुपूरा ॥ ३६ ॥ सतबादी ॥ ३७ ॥ सतरूप ॥ ३८ ॥ आनँदरूप ॥ ३९ क्षमाधर ॥ ४० ॥ मोहन ॥ ४१ ॥ लीलाकरनअनूप ॥ ४२ ॥ बैरागी ॥ ४३ ॥ त्यागी ॥ ४४ ॥ संतोषी ॥ ४५ ॥ बोधरूप ॥ ४६ ॥ योगेश ॥ ४७ ॥ शीलवंत ॥ ४८ ॥ यत ॥ ४९ ॥ अरु निरबानी ॥ ५० ॥ निर्मोही ॥ ५१ ॥ लोकेश ॥ ५२ ॥ अल्पअ-हारी ॥ ५३ ॥ निद्राटारी ॥ ५४ ॥ परमहंस ॥ ५५ ॥ गंभीर ॥ ५६ ॥ दयावंत ॥ ५७ ॥ अरु जगनिस्तारन ॥ ५८ ॥ जगबंदन ॥ ५९ ॥ अतिधीर ॥ ६० ॥ पीतांबरधारी ॥ ६१ ॥ ब्रह्म ॥ ६२ ॥ बिहारी ॥ ६३ ॥ निरबैरी ॥ ६४ ॥ निह-काम ॥ ६५ ॥ तृष्णाजारी ॥ ६६ ॥ प्रेमखिलारी ॥ ६७ ॥ मनभावन ॥ ६८ ॥ अभिराम ॥ ६९ ॥

मायाजीतन ॥ ७० ॥ होतुमनिजमन ॥ ७१ ॥ इन्द्रीजित ॥ ७२ ॥ शुभध्यान ॥ ७३ ॥ दुबिधा मेटन ॥ ७४ ॥ सुन्नमेंलेटन ॥ ७५ ॥ लैधारी ॥ ७६ ॥ बिज्ञान ॥ ७७ ॥ निराकार ॥ ७८ ॥ निरलेप ॥ ७९ ॥ निरञ्जन ॥ ८० ॥ अविगति ॥ ८१ ॥ अरु जगदीश ॥ ८२ ॥ जगतगुरू ॥ ८३ ॥ जगजीव चितावन ॥ ८४ ॥ संकटमेटन ॥ ८५ ॥ ईश ॥ ८६ ॥ कामजीत ॥ ८७ ॥ अरु आशाहारी ॥ ८८ ॥ दानी ॥ ८९ ॥ अरु शुकलाल ॥ ९० ॥ कमलनैन ॥ ९१ ॥ नारायण ॥ ९२ ॥ नरहरि ॥ ९३ ॥ बिश्वपोषन ॥ ९४ ॥ जगपाल ॥ ९५ ॥ अंतर्यामी ॥ ९६ ॥ प्रभु ॥ ९७ ॥ निज धामी ॥ ९८ ॥ संतनके शिरमौर ॥ ९९ ॥ कृष्ण देव ॥ १०० ॥ हरिदेव ॥ १०१ ॥ तुहीं है तुम समान नहीं और ॥ शब्दसनेही ॥ १०२ ॥ महाबिदेही ॥ १०३ ॥ जैजैराम ॥ १०४ ॥ हरी ॥ १०५ ॥ बंधछुटावन ॥ १०६ ॥ मुक्तिकरावन ॥ १०६ ॥ मस्तक श्रीधरी ॥ परमेश्वर ॥ १०७ ॥ पुरुषोत्तमप्यारे ॥ १०८ ॥ तुम्हरी शरणगही ॥ सौ और आठ नामकी माला जनरामरूपकही ॥

पढ़ै सुनै बहुते फलपावै हिरदै भक्तिलसै॥
जो गुरुभक्तिकरै निहचैसे जा बैकुण्ठबसै॥९४॥

चौपाई॥

एकदिना को अचरज गाऊं। भिन्न भिन्न करि सबै सुनाऊं॥ कायथ एक गरीब बिचारा। सो था भक्तिराज का प्यारा॥ वाके समधी ब्याह उठाया। भेजी चिट्ठी बहुत दबाया॥ अबहीं करि या छोड़ सगाई। नहीं और दो सुता बिवाही॥ वह अनाथ था धनका हीना। घरके सब मिल संशय कीना॥ कीजै कहा कहां अब जइये। येता दरब कहां सों लइये॥ भोर भये दरशनको आया। अपने पुत्तर को सँगलाया॥ कहने की मनमाहिं उठावै। सकुच लाजसों रहि रहि जावै॥९५॥

दोहा॥

महाराज वा देखकर आपी लीन्हीं जान॥
कही कि सुतको ब्याहकब हमसूंकहौबखान॥९६॥

चौपाई॥

हाथजोड़ उन बिथा सुनाई। अपने घरकी

खोल दिखाई॥ महाराज कहि ह्यांसे लीजै। या को व्याह शिताबी कीजै॥ यों कहि कछू दरब वा दीनों। वाके मनको दुख हरिलीनों॥ खुशी होय कायथ घर आया। सकल सौंज साजि व्याह रचाया॥ सजि बरात पूजन को आये। भक्तिराज को शीश नवाये॥ महाराज उनपै कि-रपाकरि। दस ढलैत दिये अपने चाकर॥ चो-बदार अरु दिये खवासा। उनका सबबिधि मेटा सांसा॥ चाकर सब उनके संग दीये। अपने पास चार रखलीये॥ वेतौ उत व्याहनको धाये। उसही राति चोर नौ आये॥ भक्तिराज के अ-स्थल माहीं। ह्यांकी बस्तें बहुत चोराईं॥ आ-वत चोर देख जो लीया। जानबूझ करि टारा दीया॥ ९७॥

दोहा॥

बासन बसन समेटि करि गठरी बांधी चार॥
शिरपर धरिकै लेचले कहीं न पावैं द्वार॥ ९८॥

चौपाई॥

चहूं ओर भटकतही डोलैं। हौरैं हौरैं मुख सों बोलैं॥ अंधेरे भये राह नहिं पावैं। कौन बाट

हो बाहर जावैं ॥ इतनेही में उठे गोसाईं। जा ठाढ़े चोरनके माहीं ॥ उनको राह बतावनलागे। सुनिकै चौंके चोर सुभागे ॥ कही चोर कछु सूझै नाहीं। हम बाहर को कैसे जाईं ॥ महापुरुष की चीज चुराई। ताते अपनी आंखि गँवाई ॥ हम को डर लागत है भारा। पकड़े जावैं होय स-कारा ॥ ऐसे सुन बोले औतारी। अब तुम सुनौ जु बात हमारी ॥ ९९ ॥

दोहा ॥

या अस्थल का धनी मैं चरनदास ममनावँ ॥
आंखिदई अरु चीजसब लेजावोअपगावँ१००॥

चौपाई ॥

तुमने मिहनत बहुतै कीनी। ताते गठरी चारो दीनी ॥ लेजावो मोहिं करो निहाला। होता आवै बेग सकाला ॥ यह कहि गठरी उन शिर धरिया। अरु ना लेत करिक्या करिया ॥ किरपासागर दया विचारी। परमारथ को देही धारी ॥ पहुँचा करि अस्थल में आये। जब सब सूते लोग जगाये ॥ कहा जु नीर गरम करि अ-

वहीं । न्हाकरि ध्यान करूं हरि जपहीं ॥ चौंक उठे बरतन नहिं पावै । हक धक रहे कहा नहिं जावै । हाथजोर चारौं भये ठाढ़े ॥ बोले बचन किये मन गाढ़े ॥ १०१ ॥

दोहा ॥

जिसमकान परि हो तुम्हीं सभीरही तिहमाहिं ॥ बाहर बाहर की सबै चीजरही कुछनाहिं॥१०२॥

चौपाई ॥

महाराज जहँ बचन सुनाया । कोई चोर ले गया चुराया ॥ हम तुम सोवत ऐसी भई । जागे बिना चीज सब गई ॥ लेगया जाको प्रभु ने दई । हमरे भागनकी सो रही ॥ अपने मन में मत कलपावो । तड़का भये और लै आवो ॥ एक पड़ोसी नांव जु लेखा । उन सब अपनी आंखौं देखा ॥ भोर भये बिखरी यह बाती । भया चरित्र जो कछू राती ॥ दूजी लीला गाऊं औरै । अद्भुत बात भई वा ठौरै॥ खत्री सेवक एक विचारा । डेढ़ बरसतकदीवा बारा ॥ १०३ ॥

अथ खत्री को परचादिये लिख्यते।

दोहा॥

सभी सौंजको ल्यायकै दीवा बालै आय॥
आशा राखै पुत्रकी सेव करैं चितलाय॥१०४॥

चौपाई॥

वाके बेटी सातक भई। पुत्तरकी आशा मन रही॥ क्योंहीं पूरी होय न कबहूं। दिये दान अरु कीये जपहूं॥ देवी देवा बहुत मनाये। वाड़ी और अवाह लुटाये॥ बिप्रन सों महादेव कराये। भई न समता बहु कलपाये॥ एकदिना पग दावत बोला। महाराज सों अन्तर खोला॥ पुत्तरकी चाहत मनमाहीं। सकुच शरम सों कही न जाई॥ अरज दास की यह सुनि लीजे। हमरे घर में पुत्तर दीजे॥ भक्तिराज कही दो फल दिये। दो सुत होंगे राखो हिये॥ १०५॥

दोहा॥

केते चौसन माहहीं भयीं जु बेटी दोय॥

जिनजिन आगे कहीथी हँसनेलागे सोय ॥१०६॥

चौपाई ॥

पै खत्री वह आवै जावै। महाराजको नाहिं सुनावै ॥ एक दिना सहजन के माहीं। वासों पूछनलगे गोसाईं ॥ तुमको दो पुत्तरदिये हम हीं। ताको तुमने कही न कबहीं ॥ गिरहीकही सुनोहो स्वामी। कहा कहूं तुम अन्तर्यामी ॥ सब कुछ जानतहौ तुम नीके। मेरे निश्चय अपने जीके ॥ भक्तिराज कही तौभी कहिये। बिना कहे कैसे कर लहिये ॥ जब गिरहीकही बचन तुम्हारे। जब तब निकसे सांच निहारे ॥ तुम किरपाकरि बालक दिये। सो निहचै धरी लेकर हिये ॥ १०७ ॥

दोहा ॥

लड़कों की लड़की भई ऐसे भाग हमार ॥
तीनमहीनाबीतिया सकुचन कहीतुम्हार १०८॥

चौपाई ॥

मेरे मुखसों जित तित सुनिया। जहां तहां हांसीकरै दुनिया ॥ सुताजोड़ली कृपातुम्हारी।

सातन सों दोउ अधिक पियारी ॥ सुनचौंके किरपाल दयाला । शरण लगै तेहि करैं निहाला ॥ कही कि दोनों ह्यां लै आवो । उनकी सूरत हमैं दिखावो ॥ उठि गिरहीअपने गृह धाया । नार सहित पुत्री लै आया ॥ आगे डार दई करजोरे । दृष्टि परत पलटीगति ओरे ॥ रामरूप चरनदास उचारे । तुम बौरे बौरे नर सारे ॥ लड़कों को लड़की बतलावो । कहो भांग तुम केतिक खावो ॥ १०९ ॥

दोहा ॥

सब अचरज में आइया जो बैठे वा ठौर ॥
लड़कीसों लड़के भयेभया अचम्भा जोर ॥ ११० ॥

अथ सिंहको दीक्षा देनी ॥

दोहा ॥

एक समय महराज के मनमें उठो बिचार ॥
दोय महीने जाइये रामतकूं यहि बार ॥ १११ ॥
छोड़े सब अस्थानपरि दुरा चाकरलियेसाथ ॥

म्यानेमें चढ़िकैगये गंगा ओर सुहात॥ ११२ ॥
जेठ महीना था जबै न्हाने के दिन नाहिं॥
जंगलकीकरिहौंसही खुशीहोय मनमाहिं ११३॥

चौपाई॥

एकदिना सतगुरु उपकारी। चलेजातथे बाट मँझारी॥ आगे एक दुराहा आयो। बड़े बड़े झाऊ बन छायो॥ निकसा सिंह जँभाई लीन्ही। संगके लोग महाभय कीन्ही॥ पीछेहीको सब वै भागे। कहार भगे म्यानाधरि आगे॥ धीरे धीरे केहरि आया। महाराज का दर्शन पाया॥ भक्तिराज ढिग लिया बुलाई। पुचकारा अरु बात सुनाई॥ चौरासी भुगती बहुबारा। चेत भजन करि मूढ़ गँवारा॥ ऐसे कहि माला पहिराई। कान ऐंठ लीना शरणाई॥ नाहर सों ताको कियो हंसा। जनम मरन को मेटो संसा॥ सिख करिकै दीयो उपदेशा। जो कोइ मिलै संतके भेशा॥ ताको तुम दण्डौत जु कीजे। अपने तनसों दुख मतदीजे॥ यह सुनि बनपति शीश नवायो। हर्षवान्हो बनको धायो ११४॥

सोरठा॥

श्रीसत्तगुरु चरनदास सिंहहि शिष ऐसे कियो॥
लोगनभयोहुलासपगपरसेगतिदेखियों॥११५॥

दोहा॥

खुसीहोय रामतकरी जंगल और पहाड़॥
सुरतधरीअस्थान को आयेशहरमँझार ११६॥

अथ सिद्धको दीक्षा देनी॥

दोहा॥

अस्थल में रनहने लगे वाहीविधि वहि रीति॥
आवैंदर्शन करै जो तिनसों राखैं प्रीति ११७॥

चौपाई॥

एक सिद्ध दिल्ली में आयो। वाने बहु अभिमान बढ़ायो॥ बहुतक नर दर्शन को धावैं। जाय चरण में शीश नवावैं॥ माला तिलक न कण्ठी राखै। मुखसों कबहूं गुरू न भाखै॥ कोइ पूंछै कहँ गुरू तुम्हारे। कौन संप्रदा

कौन दुआरे ॥ कण्ठी माला तिलक न राखो। सतगुरु का कभी नाम न भाखो ॥ जबै सिद्ध वह ऐसे बोलैं। अपने मनका भेद जो खोलैं॥ हमरा सतगुरु राम पियारा। जानै यह सब जग बिस्तारा॥ जगमें सतगुरु करिहौं वाको। कण्ठी बांधे ज्यों मैं भाखों॥ कूयें पर चादर जु बिछाऊं। ता ऊपर जा आसन लाऊं ११८ ॥

दोहा ॥

ह्वां जो आकर बैठकरि कण्ठी बांधै मोर ॥ ताहिकरूं मैं सतगुरू गहूंचरणकर जोर ११९ ॥

चौपाई॥

ऐसेही कहै सबके आगे। जो टोकै तेहि कहने लागे॥ नगरमाहिं यह बात जु छाई। चली चली अस्थल में आई॥ जो कोई दर्शन को आवैं। भक्तिराज ढिग बात चलावैं॥ महाराज बोले मुसकाई। वाके कण्ठी बांधो जाई॥ दूजे दिन गये वाके पासा। वासों कही कि पुरऊं आसा॥ बात तुम्हारी सुनि मैं आया। देखो यह कण्ठीभी लाया॥ कूयेंपर चादर बिछवावो।

चारौं कोने ईंट धरावो ॥ वापरबैठो ह्वां मैं आऊं। कंठी बांधूं मंत्र सुनाऊं १२० ॥

दोहा ॥

जो तुम पूरेबचन के तौ कंठी बंधवाव ॥
नातर याही नगरसूं बेग उठो भगजाव १२१॥

चौपाई ॥

सिद्धकही मैं नाहिं डराऊं । कूयेपर चादर बिछवाऊं॥ मैं बैठूं ह्वां तुमभी आवो। कंठी बांधो मंत्रसुनावो ॥ भक्तिराज जब योंहीं कीनी । वाही सिद्धको दिक्षादीनी ॥ जो जो लोग तमाशे आये। अचरज देख बहुत हरषाये ॥ वाही सिद्ध को लेकै साथा। अस्थल आये फुल्लतनाथा ॥ फिर वा सिध को रुखसत कीना। टोपी सेली चोला दीना ॥ ऐसे सतगुरु पर उपकारी। खुसीरहैं अस्थान मँझारी॥ आनंदलेना आनंद देना। सबसोंबोलैं मीठेबैना १२२॥

दोहा ॥

आवैं दरशन करनजो रामरूप नरलोय ॥
देखतदुख बिसरैंसबै तन मनखुसीजुहोय १२३॥

अथ नादरशाह को परचा दिया मुहम्मदशाह दर्शनको आया ॥

चौपाई ॥

पंचम परचा अब सुन लीजे । सुनि सुनि भक्तिबढ़ै मन भीजे ॥ बैठेहुते ध्यानके माहीं । सिमट रहे हरिचरनौं ठाहीं ॥ जहां कछू आगम दरशाया । भोरभये कागज लिखवाया ॥ ईरान मुलक सों नादरशाहा । छत्तरधारी अइहै नाहा ॥ हिंदुस्तान की ओरी झाका । पहले लेहै काबुल नाका ॥ फिर वह आय अटकके वारा । दल को साजे बहुतही भारा ॥ तहमांच कुलीखां संग वजीरा । लाहौर शहरके पहुँचैतीरा ॥ सूबेदार लड़ने के काजै । निकस नगरसों फौजही साजै ॥ १२४ ॥

दोहा ॥

बहुत बार लिख भेज है दिल्ली सैन गुहार ॥
जब मिल जैहै साहसों झांका सूबेदार १२५ ॥

चौपाई ॥

सूबेदार कोभी संगलेवै । सरहिंदकी ओरी पगदेवै ॥ दिल्ली आवनकी मनमाहीं । धीरेधीरे आवत जाहीं ॥ अबदिल्ली की लिखमो मीना । बादशाहकोही बहुचीता ॥ सब उमरावन कोजु बुलावै । अपने साथ लेयकरि धावै ॥ दलको साज कटकको जोड़ी । वहभी चालैवाकी ओड़ी ॥ करनालखेत में होय लड़ाई । मारेजां बकसी दोऊ भाई ॥ और नवाब दोय मिलजावै । छिपे छिपेही भेद लगावै ॥ हारैं बादशापकड़ाजावै । जीतै नादरशा सुखपावै १२६ ॥

दोहा ॥

गहकरि नादरशाहही आवै दिल्ली माहिं ॥
तहसील कतलह्यांहोयगी क्योंहीं छूटैनाहिं १२७
दसमी फागुन सुदी को दाखिलह्वैहै आय ॥
आठैंसुदी वैशाखका वतन आपने जाय १२८ ॥
दोय मास रहै शहरमें ज्यादा रहै न कोय ॥
माल बहुतले किलेसों कूचदेशाको होय १२९ ॥
मुहम्मदशाहको मुलकदे फिर करिकै बादशाह ॥
नायब अपनाआपके जैहै नादरशाह १३० ॥

महाराज यह देखिकरि कागज माहिं लिखाय ॥
राखा अपने पासही बहुतन दिया पढ़ाय १३१ ॥
सादुदीखां उमरावथा क्षांतकपहुँची बात ॥
एकमुसद्दी ने कही चारघड़ी गै रात १३२ ॥
नवाबकही तू लाव लिखि वाकी नकल उतार ॥
दिखलावैं बादशाहको पहले आप निहार १३३ ॥

चौपाई ॥

आयमुसद्दी बिनती कीनी । लिखने कारन आज्ञा लीनी ॥ लिख करि सभी उतारी बाता । दीनी जाय उसीके हाथा ॥ पढ़करि आप जेब में राखी । दूजे दिन बादशाहसों भाखी ॥ फतेपुरी बाग के माहीं । रहैं जहां चरनदास गुसाईं ॥ ध्यान माहिं उन अचरज पाया । सो वह कागज में लिखवाया ॥ कहिनहिं सकूं आपके आगे । डर अरु सकुच बहुत मोहिं लागे ॥ कही डरोमत कहिये सारी । महापुरुष जो बात बिचारी ॥ वह था मंत्री बहु अधिकाई । बादशाहको फरद दिखाई ॥ पढ़करि शोच किया बहु भारा । सादुदीखांकी ओर निहारा ॥ कही कि उनपै अब तुम जावो । उनके मुखसों सब सुन आवो १३४ ॥

दोहा ॥

और हमारी तरफ सूं कहियो जाय सलाम ॥
मैंफुकराकी जात का दिलसूं सदा गुलाम १३५ ॥

चौपाई ॥

जब नवाबको रुखसत कीना। मेवा कछू न-ज़रको दीना ॥ चला चला स्वामी पै आया। भेट धरी औ बचन सुनाया ॥ बादशाहने मुझ को भेजा। सलाम अरज यक कहा संदेशा ॥ भक्तिराज गह वाकी बाहीं। लेजा बैठे खिलवत माहीं ॥ जो कुछ कही सो सब कहदीजे। जाका उतर अबहीं लीजे ॥ जब नवाब यह बात सुनाई। रामरूप सो कहै बनाई ॥ बादशाह को फर्द दिखाई। नीकीभांति सबै पढ़वाई ॥ फिर हजरत कही तुम ह्वांजाओ। उनके मुखसों भी सुन आवो ॥ महाराज कही सचहै योंहीं। बात फरदकी टरै न क्योंहीं १३६ ॥

दोहा ॥

सुनि नवाब निहचै करी हजरत सों कहीजाय ॥
चरनदासके बचनसत हिरदेल्योह बसाय १३७ ॥

चौपाई ॥

जबै फरद पर दसखत कीने । सो नवाबके हाथौं दीने ॥ कही कि इसको आछैं राखो । सभी भेद अजमावैं याको ॥ जब नवाब राखी वह नीके । अति संभार प्यारकरि जीके ॥ फेर महीने पांचक माहीं । तहमां चकुलीकी खबर सुनाहीं ॥ आयों अटक फौजले गैली । घरघर मांहि बात यह फैली ॥ बार उतर चालो पुनशाहा । ताके पीछे नादरशाहा ॥ जब लाहौर हद्दमें आये । सूबे-दार मिलावह जाये ॥ ह्वांसूं लेकर दिल्लीताईं । बरसैंही भई पहल बताईं ॥ १३८ ॥

दोहा ॥

पहले कहा सो सब भया गया न एकै बोल ॥
नादरशाहको बादशाह सबै सुनाई खोल १३९ ॥
शहर हमारे में रहै चरनहीं दास अतीत ॥
सब हमसों पहलेकही गईसबै जो बीत १४० ॥
लूटि कतल जब होचुकी बैठ बंगले माहिं ॥
बातनही में सब कही राखी कोई नाहिं ॥ १४१ ॥

चौपाई ॥

तुम्हरे आवनकी सब भाखी । सोहमकागज

में लिखिराखी ॥ चौंक उठा कही फरद पढ़ावो। उस अतीत को हमैं दिखावो ॥ मुहम्मद शाह जब फरद मँगाई। पढ़ि पढ़ि कै सब वाहि सुनाई ॥ अचरजमान अचम्भै रहिया। बादशाह सों ऐसे कहिया ॥ अबतक हम कोइ नाहिं निहारा। तारीख महीने कहनेवारा ॥ पीर औलियोसे नाहिंभई। तारीख बंधकीन्ही नाहींकही॥ इन सबही आगम बतलाया। सो तुम्हरे देखन में आया ॥ वा अतीतिको लेहु बुलाई। हम हूं देखैं नैन अघाई ॥ १४२ ॥

दोहा ॥

मुहम्मद शाह जब खुशी हो भेजाखोजा एक ॥
भक्तिराज आयेनहीं बेपरवाही भेक॥ १४२ ॥

चौपाई॥

सुनिकै नादरशाह रिसाया। मुगल भेज दस पकरि बुलाया ॥ देख तेज बैठा नहींरहा। खड़ाहोय करसों कर गहा ॥ बैठगये दोनों इक ठाईं। नादर शाह यह बात चलाई ॥ पहिलेसूधे क्यों नाहिं आये। अब आये जब पकड़ मँगाये ॥ भक्तिराज बोले निरबानी। पहल आंव-

ना मन नहीं मानी ॥ दूजे मनमें सहजै आई । लोग विलायत देखैं जाई ॥ हम जु अतीतगहे नहिं आवैं । रोके रुकैं न पकड़े जावैं ॥ शाह कही कुदरत क्या राखो । हमैंदिखावो अजमत भाखो ॥ १४४ ॥

दोहा ॥

भक्तिराज कही शाहसों सुनो नसीहत कान ॥
करामात तो कह रहे देखैमतयही जान १४५ ॥
शाह कही जो कहरहे यही दिखावो मोहिं ॥
जो कुछ देखै नाहिंनै देहुँनतीजा तोहिं १४६ ॥

चौपाई ॥

महाराज हँसओर निहारे । नादरशाहगयो सोच मँझारे ॥ सिरकी कलँगी पंछी भई । सबके देखतही उड़गई ॥ देख शाह मन अचरज आया । जादूगर इनको ठहराया ॥ तबै पांव में बेरी डारी । कोठे में दे सांकर मारी ॥ तालादै चौकी बैठाई । कहा कि कालह करूं मन भाई ॥ दूजे दिन क़ाज़ी बुलवाया । सबै बखेड़ा वाहिसुनाया ॥ हिन्दू जादूगर क्या कीजे । कहानतीजा याकूं दीजै ॥ क़ाज़ी कही करो संगसारा । इस

को यही दण्ड बहुभारा ॥ यह सुनिकै कोठा खुलवाया । भक्तिराजको ह्वां नहिं पाया ॥ गुप्त भये घर पहुंचेआई । बेड़ीह्वांई पड़ी जो पाईं॥१४७॥

दोहा ॥

नादरशाह अचरज लखा गया भरमके माहिं ॥
मुगलौंने आछीतरहबंधकियाअकिनाहिं॥१४८॥

चौपाई ॥

भलीभांति जब किला ढुंढ़ाया । सारे देखा कहीं न पाया ॥ फिर अरुथलको मुगल पठाये । महाराजह्वां बैठेपाये ॥ खबर एकने दीनी जाके । नादरशाह कही खिसियाके ॥ वाको वेग पकड़ कै ल्यावो । बेड़ी पांय तौक पहिरावो ॥ वहीमुगल उलटा फिर धाया । शाहनशाहका हुकुम सुनाया ॥ सबमिल कही चलो अबसाथा । तुम्हैं बुलावै हमरा नाथा ॥ भक्तिराज सुनि कला बिचारी । छिनमेंआये किलेमझारी ॥ मुगल देखि हकधकहोरहे। कहाकिगायबहोकितगये॥१४९॥

दोहा ॥

कहा कहैंगे शाह सों माना दुःख अपार ॥
डरते चाले किलेको मत वह डारै मार ॥१५०॥

चौपाई ॥

मुगलौं राह संदेशा पाया। फुकरा पहल कि लैमें आया ॥ सुनकरि बेग चले भैभाजा। वहां आय देखे महराजा ॥ नादरशाह बेड़ी पहराई। कोठे में दीना बैठाई ॥ ताला दे चौकस सजि साजा। अपने हाथ किये सब काजा ॥ करिमज-बूती महल पधारा। शोचकिया जादूगर भारा ॥ सोयरहा आनंद मनमाना। अपनी पूरी करिकै आना ॥ भक्तिराजका कौतुक जानौं। आधीराति गये पहचानौं ॥ जहां शाह सोवत हां माता। वाके शिरमें मारी लाता ॥ ॥ १५१ ॥

दोहा ॥

चौंक जगा उठबैठि करि दोऊ नैन भर देख ॥
उतर पलंगसो तुरतही चरणौंपड़ाबशेष॥१५२॥

चौपाई ॥

हाथजोड़ यों कहने लागा। मैं दुर्मति में पड़ा अभागा ॥ तुम्हरी महिमा कछू न जानी। मैं मनमें कुछ औरैठानी ॥ अब मैं जानी तुम द-रवेश। तुमको दुनियां सो नहिंलेश ॥ तुम फक्कर हो खुदा रसीद। मेरे गुनह करो बकसीद ॥ मैं

सब अजमावन को कीना। इतना दुःख जो तुम को दीना॥ मुहमदशाह जब स्तुति कहिया। मैं अभिमानी कछू न लहिया॥ अब मैं समझा बिसुवा बीस। मेरे हक्कमें करो असीस॥ तनकांपै मनमें डरलागे। करोमिहर मेराभै भागै॥१५३॥

दोहा॥

भक्तिराज फिर यों कही शाहंशाह सुन बात॥
दुविधा मेरे है नहीं जासों तू जो डरात॥ १५४॥

चौपाई॥

तक्सीर माफकरि तुम किये मीता। कछू न राखो मनमें चीता॥ यों कहिकै फिर गले लगाया। पीठ ठोंक करि कीन्हीं छाया॥ दोऊ बैठ करि खुशी मनाई। प्रीति ज्ञान की बात चलाई। तुरकी अरबी बोलनलागे। बैत रुबाई खोलन लागे॥ बातनहीं में अरु कही बाता। नादरशाह जोड़ दोउ हाथा॥ गांव परगना अब कुछ लीजै। करो नजात यही खुशकीजै॥ जब बोले महराज गोसाई। जमीन बीघा भरल्यौं नाहीं॥ जन जमीन जर सब दुखदाई। तीनों फक्करने बिस-

राई ॥ इन तीनों में दुखहै भारी। जो राखै सो मूढ़ अनारी ॥ लागै फिकर जिकर सब भागै। हरिचरनन सूं कैसे लागै ॥ १५५ ॥

दोहा ॥

बोल्योनादरशाहजब समझ समझ मनमाहिं ॥
ऐसा फक्कर दूसरा और हिंद में नाहिं १५६ ॥

चौपाई ॥

एक पहर बातें ह्वां रहिया। भक्तिराज फिर ऐसे कहिया ॥ तुमको देख खुशी बहुमानी। अब अस्थल की मनमें आनी ॥ ह्वां जाऊं मैं रुखसत कीजै। एक बात मोहिं मांगे दीजै ॥ कोई फकीर कैसा जो होई। करामात मांगो मत कोई ॥ मुसलमान हिन्दू मत जानौ। ज़ात खुदा कीही पहिंचानौ ॥ शाह कही मैं योंहीं करिहौं। फक्कर के कदमों शिर धरिहौं ॥ मुहर मंगाई सौ और एका। भेट धरी कहो लेहु बशेषा ॥ भक्तिराज वै लीनी नाहीं। झटपट उठ चाले वहि घाईं ॥ १५७ ॥

दोहा ॥

नादरशाह उठ बाहँ गह खड़े किये महाराज ॥

वेग मँगाई नालकी लई तुरतही साज १५८॥

चौपाई॥

भक्तिराज तापर बैठाये। दो उमराव जु संग पठाये॥ ह्वां से चल अस्थल में आये। बहुत लोग उठ देखन धाये॥ वै पहुँचाकरि उलटे गइया। महाराज सुखसों ह्वां रहिया॥ कोइक दिनमें ऐसा भया। नादरशाह वतन को गया॥ वैशाख सुदी आठैं एतवारा। बहुत खजाना लेय सिधारा॥ तीनमहीने पीछे चीन्हों। मुहमदशाह मिलनको कीन्हों॥ रामरूप कहै दरशको आया। बहुत भेंट देने को लाया॥ नजर धरी अरु दर-शन कीन्हा। वैठन कारण आयसु लीन्हा १५९॥

दोहा॥

चारघड़ी वैठे रहे विनती करी बनाय॥
महाराज किरपा करी उरसे लियालगाय १६०॥

चौपाई॥

फेर कही अब रुखसत लीजै। हमैं फराकत वेगी दीजै॥ द्रव्य जवाहिर सब लेजइये। यह तो हमको कछू न चहिये॥ याही में है खुशी ह-

सारी। कछू न छोड़ो लेजासारी ॥ कही बादशाह मैं नहिं लेहूं। उलटी घर कैसे लैजैहूं ॥ आप राख काहू देहु उठाई। अपने करसों देउ बरताई ॥ यही बीनती मेरी मानों। फेरनकी मत मनमें ठानों ॥ दूसरपति खुश होय बिशेखा। खोल जवाहिर सबही देखा ॥ नौरतनन की पहुँची लीनी। वाके मनकी खुशी जु कीनी १६१ ॥

दोहा ॥

और सभी दिया फेरकै कही कि तुम लेजाव ॥
यासों बरकत होयगी फिर मत ना दुहराव१६२॥
बादशाह जब लेय करि कीनी निहुर सलाम ॥
तखतहोय असवार तब गयो आपनेधाम१६३॥
बादशाह महाराज की कथा कही सब बोल ॥
रामरूप जन कहतहै आगे लीला खोल १६४॥

चौपाई ॥

बहुतभीड़ फिर होनेलागी। दरशन करैं अमीर सुभागी ॥ राजा राव राय बहु आवैं। साहूकारलोग बहुधावैं ॥ भक्तिराजको यह न सुहाई। उन बेकारन सुरति चलाई ॥ यह अस्थान छोड़ कहीं जइये। होय अकेले बहुसुख पइये ॥ एक

दिना ऐसी मनआई। चीज बस्तु सब दई लु-टाई॥ चाकर दूर किये फिर सारा। बाहरही को गवन बिचारा॥ पांच बरष रहे वा अस्थाना। ब्रिरज और को फिर किया जाना॥ खिलकाटोपीलै मृगछाला। मातासों मिलचले दयाला १६५॥

इति श्रीगुरुभक्तिप्रकाशेस्वामीरामरूपजीकृतफतेपुरी बाग के चरित्रचतुर्थोविश्राम॥

अथ श्रीचरणदासजी का ब्रज ओर को गमन॥

दोहा॥

बाट माहिं अचरज भया मिले सातठग आय॥
पाछे सों फांसी दई हरिने लिये बचाय॥ १॥

चौपाई॥

फांसी जलकरि हाथ जलाने। तनके कपड़े सभी तपाने॥ भक्तिराज फिर लिये बुझाई। साध बिना को करै भलाई॥ करसों मींड मींड दुख मेटा। ठग ब्याकुलह्वो धरणी लेटा॥ और सबै ठग चरणों परिया। हाथजोड़ कही तुम दुख

हरिया ॥ हमरा खोट माफ अब कीजै । कंठी बांधो हाथ धरीजै ॥ अबहीं सों हम ठगई छांड़ी। मनसों भक्ति रामकी मांड़ी ॥ योंहीं करेंगे राम दुहाई । भजनकरैं सुतलोगलुगाई ॥ हम सातों ने यह मत लीया । तन मन भेंट तुम्हारी कीया ॥ महाराज हँसि कंठ लगाये । कंठी बांधी तिलक चढ़ाये ॥ करिकै साधु कुटिलता खोई । देकरि भक्ति बिदाकिये सोई ॥ २ ॥

दोहा ॥

ठग अपने घरको गये महाराज ब्रजओर ॥
साधन सों यह होत है खोटकरो कईकोर ३ ॥

चौपाई ॥

महाराज सुखसेती धाये ॥ चलेचले बृंदाबन आये ॥ नांगे पैर न पांयन पनहीं । ऐसे पहुँचे हरिके जनहीं ॥ कुञ्ज कुञ्ज सब ठौर निहारी । सेवा कुञ्ज लगी अतिप्यारी ॥ जहां न कोई रहने पावै । दिनहीं सों झाड़ा होजावै ॥ पिय प्यारी जहँ गुप्त बिराजैं । लीला रास रैनकों साजैं ॥ यह सुनकर मन भया हु-

लासा। छिपकरि रहूं कही चरणदासा॥ ह्यां की लीला सभी निहारूं। मनका बिरह बिपति सब डारूं॥ भक्तिराज ह्वां छिपकरि रहिया। तिनका भेद न काहू लहिया॥ सन्ध्या समय आरती पाछे। ओट वृक्षकी लुक रहे आछे॥ पूजारी झाडा ले आया। पट देकरि जहँ कुफल लगाया॥ ४॥

दोहा॥

भक्तिराज उठ तहां से आये मन्दिर पास॥
जहां राधिका चरणहैं बैठे उमँग हुलास ५॥

चौपाई॥

जब यह जानी अन्तर्यामी। आये सन्त हमारे धामी॥ उनको चलकरि आदर कीजै। दरशन की निधि उनको दीजै॥ अरध रैनगये यही विचारी। युगलकिशोर संग बहु नारी॥ आन अचानक परगट भये। भक्तिराजको दर्शनदये॥ येतौ उठ चरणन को धाये॥ कृष्ण बांह गहि कण्ठ लगाये॥ फिर बैठे ह्वां साहब दासा। दोऊ ओर अतिप्रेम हुलासा॥ पूछी कृष्ण कुँवर कुसराता। चरणही दास जोड़ लिये हा-

था ॥ शीश नवायो कहने लागे । बिरह बिपति ब्याधा सब भागे ॥ सबै भई कुशलात हमारी । सुन्दर सूरत नैन निहारी ॥ चरणनके ढिगदीजै बासा । नितही राखो अपने पासा ६ ॥

दोहा ॥

कृष्ण कुँवर जब यों कही सुनौ भक्त महराज ॥
भेजाथा जिस कामको सो नहिं होवै काज ७ ॥
परमारथ के कारने करने को उपदेश ॥
भक्ति जगावन को दिया तुम्हैं साधुका भेश ८॥
योग ध्यान को छांड़कर नौधा भक्ति सँभार ॥
यही करो अस्थापना यही धारना धार ९ ॥
यह सुनिकै बिस्मयभये फिर सुधिआई चेत ॥
गदगद बानी होयकै लगे जनावन हेत १० ॥
बिरह अगिन हियेमें हुती तरसरहत थे नैन ॥
तुम दर्शन सियरेभये अब मन पायो चैन ११ ॥

चौपाई ॥

तुम चन्दा मोहिं जान चकोरा । मुदितभया करि दर्शन तोरा ॥ तुम पर्वत मैं तुम्हरा मोरा । खुशी भया ज्यों सुनि घनघोरा ॥ तुमहो कँवल

भवँर मैं तोरा। तुम ठाकुर मैं तुम्हरा चेरा॥ स्वाति बूंद तुम चातक मैंहूं। तुमको छोंड़ कहां अब जैहौं॥ तुम पारध मैं मृगा तुम्हारो। भावै छांड़ौ भावै मारो॥ तुम गंगाजल गहर नवीना। मोको जानौ अपना मीना॥ तुम माता मैं सुतहौं बारा। क्योंकरि जीऊं जोहूं न्यारा॥ तुम सुरभी मैं तुम्हरा बछरा। कैसे मोहिं सुहावै बिछरा॥ तुम दीपक मोहिं जान पतंगा। तुमपै वार भसमकरूं अंगा॥ १२॥

दोहा॥

रहूं तुम्हारे संगही यही जु मेरी चाह॥
मिलिके जो बिछुरनकरूं लगै हिये में दाह १३॥
कैसे याहि सँभार हूं बिरहअगिन की आंच॥
दृढ़ धीरज रहसीनहीं यहीतुममानो सांच १४॥
जब बोले श्रीकृष्णजी सुनौ चरणही दास॥
ध्यान हिये में राखियो रहूं तुम्हारे पास १५॥
जो हमने आज्ञा दई कारज कीजै सोय॥
भक्ति बखेरो जगत में जीवनकी गतिहोय १६॥

चौपाई॥

यह सुन हिया नैन भरिआये। भक्तिराज

फिर वचन सुनाये ॥ सुनहो पूरण पुरुष गुसा-ईं। तुम्हरी आज्ञा मेटूं नाईं ॥ जग में जाय यही अब करिहौं। तुम्हरो ध्यान हिये में धरि-हौं ॥ पै छोटीसी अरज हमारी। चितदे सुनिये कृष्ण मुरारी ॥ निज बृन्दाबन मोहिं लखावो। अपना रास बिलास दिखावो ॥ यह सुनिकै मो-हन परबीना। नैनमूंदयों आयसु दीना ॥ भक्ति राज जब नैना झांपे। खोलकही फिर गोबिंद आपे ॥ खोलत आंख अचम्भा सूझा। परगट भया हुता जो गूझा ॥ १७ ॥

दोहा ॥

निजबृन्दाबन देखिया नितअखण्ड जहँ रास ॥
पियप्यारी बिहरतसदा जापहुँचे ह्वां दास १८ ॥

चौपाई ॥

रतन जटित जहँ भूमि निहारी। चहूंओर देखी गुलजारी ॥ बृच्छन की कुंजें अतिसोहैं। लिपटी लता अधिक मन मोहैं ॥ जाड़ा गरमी पावस नाहीं। नित बसन्त ताही के माहीं ॥ नाना भांति पुहुप जहँ फूले। दुरमन में फल

जित तित झूले ॥ चौंसठ खम्भा मध्य विराजै। अद्भुत रूप अधिक छविछाजै ॥ तामें सिंहासन की शोभा। देखत उपजै आनँद गोभा ॥ तापै ललित लाल अरु प्यारी। लीला कररही बहुतक नारी। येह सखी रूप होगये। सिंहासन ढिग ठाढ़े भये ॥ १९ ॥

दोहा ॥

जबै लाल मुसक्याइ कै लीनों पास बिठाय ॥
ऐसे अद्भुत समयपर रामरूप बलिजाय २० ॥
फेर प्रभू बहुरूप धरि कीन्हों रास विलास ॥
बृन्दावनकी भांति ज्यों जनकी पुरई आस २१॥

चौपाई ॥

बहुत दासको परसन कीना। फेर विदाका आयसु दीना ॥ दास मान आज्ञा जो लीनी। दे परिक्रमा दण्डवत कीनी ॥ हाथ जोड़ ठाढ़े जब रहिया। नैन मूंद हरिने यों कहिया ॥ भक्तिराज जब नैना मूंदे। दोऊ कान केरो जन रूंधे ॥ मूंदें आंख घड़ी दो भई। जब अकाश सों बानी अई ॥ खोल दोऊदृग प्रेमपियारे। तुमसों हम कबहूं नहिं न्यारे ॥ खोलत चढ़ वंशी-

वट आयो। अतीतरूप आपन को पायो॥ ह्वां वीते सो गिनती नाहीं। तीन दिना भये जग के माहीं॥ २२॥

दोहा॥

करिकै शोच उदासह्वै उमड़ो प्रेम अपार॥
व्याकुलह्वै धरणीगिरे नयननसों जलधार २३॥

चौपाई॥

इसी भांति करि दिवस विताया। यौंहीं रैन समय फिर आया॥ घड़ी चार राति जवजाई। सतगुरु दरशन दीने आई॥ गुरुको देख उठे घबराये। धरिकै शीश गहे दोउ पाये॥ पीठहाथ धर कहनै लागे। चरणदास तुम बड़े सुभागे॥ परमेश्वर तुम सों हित ठानौं। ब्रह्मादिक को दुरलभ जानौं॥ नारदमुनि जिनको यश गावैं। गणपति शारद अन्त न पावैं॥ निज करि भक्ति आपनो चीन्हों। जिस कारण प्रभु दरशन दीन्हों॥ नितही तुम्हरे संगबिराजैं। हिरदैमाहिं भवनही साजैं॥ तामें क्यों न उलटही आवो। आठ पहर जो दरशन पावो॥ २४॥

दोहा ॥

शीश उठा सनमुख भये दी परिक्रमा सात ॥
फिर बैठे आयसु लई जोड़लिये दोउहाथ ॥ २५ ॥

चौपाई ॥

सतगुरुजी इक अरज सुनाऊं। एकबार दरशन फिर पाऊं ॥ तौ यह तपत बुझै हियसारी। नयनन सों देखूं पिय प्यारी ॥ मनमें यह अभिलाषा रही। यही पीर मैं तुमसों कही ॥ ज्यों जानौं त्यों वेगि मिटावो। युगल रूपकी झलक दिखावो ॥ यह सुनिकर शुकदेव गुसाईं। उलट समाये हियके माहीं ॥ फिर उठाय ग्रीवा मुसक्याये। चरणदास दहिने बैठाये ॥ अपना हाथ शीश पर राखा। सौंहीं देख बचन यों भाखा ॥ भक्तिराज तब ताकनलागे। सनमुख निरखे रस के पागे ॥ गलबाहीं डारैं वह जोरी। नवल लाड़िलो नवल किशोरी ॥ फिर गुरुदेव कहा छकि लीजै। बिरह अग्नि सब सीरीकीजै ॥ २६ ॥

दोहा ॥

लख दरशन परसनभये मिटी बिरहकी प्यास ॥
हियमाहीं शीतल हुये पुरई मनकी आस ॥ २७ ॥

चौपाई ॥

जबलग हाथ उठायो नाहीं। तबलग दरशे वाही ठाहीं ॥ जभी हाथ शिरसों सरकाया। वह अचरज फिर दृष्टि न आया ॥ उठाय शीश चरणों पै राखा। धन गुरुदेव बचन यों भाखा ॥ तुम किरपा हम दरशन पायो। अजब अचम्भा करि दिखलायो ॥ ऐसी तुमहीं सों बनिआवै। मम रसना कहँ अस्तुति गावै ॥ आनँद भये परम सुख दीना। मोको जान निपट आधीना ॥ हमरे सदा सहायक तुमहीं। तुम्हरी शरण पड़े नित हमहीं ॥ पहिलैं दरशन जो हम पाये। तुम्हरी कृपा जभूं दिखाये ॥ २८ ॥

दोहा ॥

दया तुम्हारी संगही जहां तहां गुरुदेव ॥
मम सहाय करतीरहै यह जानो हम भेव ॥ २९ ॥

चौपाई ॥

तुम ईश्वर किरपा के सागर। भक्तियोग में अधिक उजागर ॥ ज्ञान स्वरूप महावैरागी। जनम लेतहीं माया त्यागी ॥ मनजीता इन्द्री बश कीनी। जगत व्याधि मैं सुरत न दीनी ॥

सदा असंगी उनमत नाथा। सबही ऋषि मुनि नावैं माथा॥सब मिल तुम्हरी पूजा करहीं। तुमको ऊंचा हिय में धरहीं॥ब्रह्मव्रत लिये आनँदरूपा। तुमको व्यापै छांह न धूपा॥ तिरगुन ते ऊपर निर्वाना। निरभैपद तुम नीके जाना॥ आदि पुरुष तुमहीं को जानूं। तुम्हरे परे और नहिं मानूं॥३०॥

दोहा॥

निरगुन तुम सरगुन तुम्हीं धरआये औतार॥
पिरथी भार उतारकै लीला करी अपार॥ ३१॥
बांधी है मरयाद तुम चौवीसौं बपुधार॥
अब भागवतपुराण कहि जीव किये बहुपार॥३२॥
तुमको अरु श्रीकृष्ण को देखूं एकहि रूप॥
कबहूँ मुकुटकुंडल सहित कबहूं नगन सरूप॥३३॥
कबहूं देखूं रासमैं कबहूं जंगल ठाहिं॥
ह्वांदेखूं क्रीड़ा करत उहां ध्यान के माहिं॥३४॥

चौपाई॥

दोऊ रूप तुम्हरे पहचानूं। अरु दोनों से न्यारा जानूं॥ तुमहींहो जगके करतारा। रूप विराट तुम्हींने धारा॥ तुमहीं आदि अंत हौ तुमहीं। यह नीके जानत हैं हमहीं॥ यह सबही

जग खेल तुम्हारा । सदा रहो माया सों न्यारा ॥
उपजावो पालो बिनशावो । नाना कौतुक करि
दिखलावो ॥ आतमरूप सकल घटमाहीं । जल
थलमें व्यापक सबठाहीं ॥ श्रीगुरुदेव दयायह
कीजै । नितही भक्ति आपनी दीजै ॥ हिरदे
ध्यान तुम्हारो रहै । मन मेरो कहुँ अन्त न
बहै ॥ श्रवणन से सुनूं कथा तुम्हारी । उज्ज्वल
बुधि रहै सदा हमारी ॥ गुणावाद मुख सेती
भाषूं । रसना नाम तुम्हारो राषूं ॥३५॥

दोहा ॥

शरण तुम्हारी नितरहूं जन्म जन्म रहूं दास ॥
भक्ति तुम्हारी के बिना और न कोई आस॥३६॥
गुरु अस्तुति जैसे करी तैसे कही बनाय ॥
ज्ञान गोष्ठ की कथाको राम रूपकहै गाय॥३७॥
भक्तिराज फिर यों कही सुनिये दीनानाथ ॥
किरपा कीजै और अब मैंहूं निपट अनाथ ३८ ॥
अपना सरगुन रूप तुम नैनन दिया दिखाय ॥
सो लेकर मन में धरा रहा हिये में छाय ॥ ३९ ॥

इति श्रीगुरुभक्तिप्रकाशेस्वामीरामरूपजीकृतअमरलोकजानों
श्रीकृष्णाजीकोदर्शनकरनोश्रीशुकदेवजीकातीसरैं
दर्शनहोनोपंचमोविश्राम ॥ ५ ॥

अथ श्रीस्वामी रामरूपजी कृत गुरुचेलेकी गोष्ट लिख्यते ॥

दोहा ॥

गुरु चेलेकी गोष्टको बरणौं रामही रूप ॥
वाही को परगट करै हुती धरीथी गूप ॥ १ ॥
जैसे इन पूंछन करी उत्तरदियो कृपाल ॥
रामरूप वा गोष्टसों तुरतै भयो निहाल ॥ २ ॥
राजाजनक प्रतापसों शुकदेव के परताप ॥
चरणदास गुरुसोंसुनी भाषा करी जो आप ॥३॥
ज्योंकीज्यों जैसेधरी सुनि सुनि वचन बिशाल ॥
नाहिं मिलाई आपनी चतुराई की चाल ॥ ४ ॥
गुप्त भेद पायो सबै रह्यो नहीं सन्देह ॥
ज्ञानभक्ति उपजी हिये फुल्लतभई जु देह ॥ ५ ॥
भक्तिराज पूंछनकरी अब कहूं जैसे खोल ॥
शुकदेवखोलीगुढ़ीज्यों अज्ञानमिटाया झोल ६॥
चरणदास बिनती करै सुनो श्रीशुकदेव ॥
तत्तज्ञान बिज्ञानको मोहिं बताओ भेव ॥ ७ ॥

आगे निर्गुन रूप तुम मोहिं दिया समझाय ॥
कछूरहा सन्देह जो अवदीजै दरशाय ॥ ८ ॥
फिरबोले शुकदेव जी चित दे सुनिये काथ ॥
निर्गुन सर्गुन भेदकी सब तुम जानौ बात ॥ ९ ॥
हम तुम दोऊ एकहैं एकहि रूप अनास ॥
ह्वांईसों परगट भये ह्वांई करिहैं बास ॥ १० ॥
तुम इच्छा के कारणै कहूं बोध समुझाय ॥
तत्त्वज्ञानकी कथाको अब सुनिये चितलाय ११ ॥
राजाजनक बिदेह ने कहाजो मोसों ज्ञान ॥
मोक्षधर्म में सो कहूं परमेश्वर पहिंचान ॥ १२ ॥
तीनों गुन सों हैं परे निराकार निर्बान ॥
मूल प्रकृतिसे रहत है ताकूं निर्गुन जान ॥ १३ ॥
काया बचन जहांनहीं जहां न धूप न छांह ॥
रातद्योस जहँहैनहीं नहिं बिकार तेहिमांह ॥ १४ ॥
रूप नांव किरिया नहीं पंचकोससों दूर ॥
है अखण्ड अद्वैतता ताहि न जानत कूर ॥ १५ ॥
निराकार निरलेप है छोटा बड़ा न कोय ॥
ऊंचानीचा है नहीं नारि पुरुष नहिं सोय ॥ १६ ॥
चारअवस्था ह्वां नहीं बानी नहीं जु चार ॥
बुधि थकिथकि उलटीफिरै पावैनाहिं बिचार १७ ॥

इन्द्रीजान सकैं नहीं मननाहीं ठहराय ॥
ध्यानमाहिं आवै नहीं सकै न कोई पाय ॥ १८ ॥
ध्येयध्याता ध्यानौ नहीं ज्ञाताज्ञान न ज्ञेय ॥
अन्वय और वितर्कणा चरणदास सुनि लेय ॥ १९ ॥
त्वंपद तत्पदसों रहत नहिंछाया प्रतिबिंब ॥
सत् चित् आनँदहैसदा निराधार निरलंभ ॥ २० ॥
नेत नेत कहैं वेदही थके जु ब्रह्मा आदि ॥
हारे ज्ञानी पण्डिता करि करि बहुतक बाद ॥ २१ ॥
ओर छोर वाके नहीं वाके नाहीं मध्य ॥
घटै बढ़ै कबहूं नहीं नहींसूक्ष्म नहिं गद्य ॥ २२ ॥
इन्द्रिनसों मनहै परे ताके परे जु बुद्ध ॥
अनभै तासों है परे कछूक पावत सुद्ध ॥ २३ ॥
ताहीसों मैं कहतहौं करिकै बहुत न खेद ॥
कहन सुनन तामेंनहींअविगतअचलअभेद २४ ॥
वचन बिलासके बीचकर कहौं तोहिं समुझाय ॥
सरगुन मैं हो कहत हूं अनभैही सों गाय ॥ २५ ॥
सबसों न्यारा सब विषे ज्यों व्यापक आकास ॥
ऐसेही वह ब्रह्महै तामें अण्ड निवास ॥ २६ ॥
भीतर बाहर अण्डके पूररहो सब ठौर ॥
वाबिन कछू न पाइये तिलसमानकोइऔर ॥ २७ ॥

शिष्यवचन॥

चरनदास पूंछन करै तुमको हिरदै धार॥
भयोमोहिं सन्देह अतिसतगुरुदेउ निवार॥२८॥
पहिले तुम ऐसीकही ब्रह्मसदा अद्वैत॥
व्यापकता के बचनमें निकसतहै अब द्वैत॥२९॥
सबमाहीं जो तुम कहा सो वह दूजा कौन॥
काहे का यह अण्डहै मोहिं बताओजौन॥३०॥
बिनती सुन महराज की जैसे कह सुखदेव॥
रामरूप वर्णन करै जो कुछ दीया भेव॥३१॥

गुरु वचन॥

फिर बोले सुखदेवजी किरपा करी अपार॥
बीज मंत्र तोसों कहूं ताको हिरदे धार॥३२॥
ब्रह्मजवै इच्छाकरी भई मूल परकृत्त॥
तासोंमिल अंडाभई फैली नाना बृत्त॥३३॥
तामें आप बिराजहीं कोइन पावत भेव॥
नाना कौतुक खेलहीं सदा रहै निरलेव॥३४॥
तीन भांति ब्रह्माण्ड में आदि पुरुषकोजान॥
ज्ञानी वाको जानिये ताको यह पहचान॥३५॥
प्रथमै सूक्षम प्राणहीं सब भूतन के माहिं॥
बिरला पावत भेदयह बहुत लहतहैं नाहिं॥३६॥

दूजो रूप बैराटही धारि रहो है शिष्ट ॥
प्रानी जीवनमुक्तहो जाके ऐसो इष्ट ॥ ३७ ॥
तीजे व्यापक होरहो सत् चित् आनँदरूप ॥
बुधबानी सेहैं अगह निर्मल अचल अरूप॥३८॥
माया के आवरण सों ढको गयो वह नाथ ॥
घट मठ हो आडैभई हुई जुवाके साथ ॥ ३९ ॥
जैसे पानी सों भयो सरवर माहिं सिवाल ॥
सूरज रोक्यौ मेरुने होगयो सकल तिमाल॥४०॥
माया दीखत है सबै आतम दरशै नाहिं ॥
दूध मध्य ज्यों घीवहै अग्नि काष्ठके माहिं॥४१॥
मूल प्रकृति अस्थूल हो होय गई ब्रह्मंड ॥
तिरगुन के बिस्तार सों भयेजु नाना पिंड ॥४२॥
पांच तत्त्व तनमात्रा तासम सेती जान ॥
दश इन्द्री जोराभई राजसगुण सोंमान ॥ ४३ ॥
सातकसों चारौं भरा चित बुधमन अहंकार ॥
इनहीं सेती घटहुये नाना रूप अपार ॥ ४४ ॥
तिन में व्यापे जीवहो चेतन राम अरूप ॥
माया जड़ परगट रहै धरिकै बहुतकरूप ॥ ४५ ॥
काले पीले. सेतजो हरे श्याम बहुभांति ॥
चमकदमक छलसेघने बिजली कीसी कांति॥४६॥

फैलै सिमटै आयकर जात रहै छिनमाहिं ॥
यह सुपनो सो देखिये दिष्खुलै जबनांहि ॥४७॥
उपजावै पालै हनैं माया बाजी जान ॥
आतम नित इकरसरहै तामें लाभ न हान ॥४८॥
घटैं बढ़ैं वाकी कला ससियर को थिरजोय ॥
ऐसे पुरुष परकृत है समझैं ज्ञानी होय ॥४९॥
भांति भांति कौतुक किये गुणवन्ती परवीन ॥
झूठी सांचीसी लगै तासों गुणभये तीन ॥५०॥
राजस सों उपजै जगत सात्विकपालनयोग ॥
तामस करै जुनाशही आतम सदा असोग॥५१॥
माया छाई चतुर हो रोकलिया हरि पंथ ॥
कंचन अरु बस्तरभई कामिनि सुन्दरकंथ ॥५२॥
हाथी घोड़े पालकी मंदिर भई अनूप ॥
बहुबिधि सों परजाभई छत्तरधारी भूप ॥५३॥
हीरा मोती लाल मणि भईजु आठो धातु ॥
दोदल जोड़ै वहलड़ै बहुत रचै उतपात ॥५४॥
कहीं काम कहिं क्रोधहो कहीं प्रीति कहिंद्रोह ॥
गर्ब भरी फूलैघनी अधिक बढ़ावै मोह ॥५५॥
जित तित पसरी अंगवर वशकिया सबसंसार ॥
संगलगाई बासना आशबिछाया जार ॥५६॥

इन्द्रीहो रसहूभई मनदिये बहुतक स्वाद॥
पाप पुण्य दुखसुख भई नरक स्वर्ग दोउबाद५७॥
कहिं बालक कहिं तरुनहो कहिं वूढ़ी कहिंवृद्ध॥
कहीं तपस्या कामना कहींजु आठौं सिद्ध॥५८॥
कहीं यज्ञ कहिं भोगहो कहीं योग कहिं ध्यान॥
कहिं अकरम सुकरमकहीं कहीं ज्ञान अज्ञान५९॥
कहीं भक्ति नवधाभई रंग लगावनहार॥
कहींविद्या पण्डितभई अरथविचारविचार॥६०॥
नैन देख सरवन सुनै मुखसे कहै जुबाक॥
सबही मायाजानिये यों बेदन को साख॥६१॥
यह सबही आकार है इन्द्री पावैं ताहि॥
निराकार यासोंपरै मनसों गहा न जाय॥६२॥

शिष्य वचन॥

फिर बोले चरनदासजी गुरू अरजसुनि लेव॥
इक पूछा संदेह मैं ताको उत्तर देव॥६३॥
कैसे पावैं पुरुष को मो मन यह सन्देह॥
प्रकृत बताई दूरलौं ज्ञानयोग अरुनेह॥६४॥

गुरु वचन॥

वचन कहा गुरुदेवजी आछी पूछी येह॥
भिन्न भिन्न अब कहतहूं मेटूं सब सन्देह॥६५॥

कहन लगे सुखदेवजी रामरूप के ईश॥
चरनदास सुननैंलगे तिनपरवारूं शीश॥६६॥
माया दोय प्रकार की ताको कहूं विचार॥
एक बँधावै जगत में एक उतारै पार॥ ६७॥
मूल प्रकृति माया भई खेली दो पद दांव॥
एक आसुरी ईश्वरी ताके ये दो नाव॥६८॥
आसुरी अंग प्रवर्त्त है रोकिरही हरि बाट॥
ईश्वरी अंग निवर्त्त है सोइ उतारै घाट॥६९॥
ईश्वर के सँग ईश्वरी आसुरीजीव के साथ॥
बिसै दिये अपबश कियो राखो अपनेहाथ॥७०॥
ईश्वर के सँग ईश्वरी पतिव्रत रखमनमाहिं॥
आज्ञा कारिनही रहै नेकहु बाहर नाहिं॥७१॥
ईश्वर वामें ना बँधै कबहूं लिप्त न होय॥
ताही ते स्वाधीन है माया बश नहिं कोय॥७२॥
राक्षसिनी हो आसुरी किया जीवको हीन॥
पंच बिषय के बश भयो याही ते आधीन॥७३॥
इन्द्रिनही के स्वाद सों फँसो जगतके मध्य॥
कुटुँब कियो आपादियो भई बासना गध्य॥७४॥
बढ़ो प्रेत अहंकारही आपा लीनों मान॥
करमलगा बहुभांतिके लिपरि बढ़ो अज्ञाना॥७५॥

अँधरा हो बौराइया चहुँ दिशि लागै मार ॥
गिरो आपदा कूपमें वाको अधिक बिकार॥७६॥
ईश्वर को अहंकार ना करम लिप्त नहिं होय ॥
जीवलिये अहंकारही करमों बांधा सोय॥७७॥
ईश्वर अपने रूपको भूलो नाहीं नेक ॥
जीव जो अपने रूपको बिसरो पड़गइ बेंक॥७८॥
अपने जनम अरु करम को ईश्वर जानै तत्त्व ॥
जीव जो जानतहै नहीं ताते पड़ो कुसत्त्व॥७९॥
ईश्वर के सँग ईश्वरी ताके गुण सुनिलेह ॥
बंध छुटावनहार है ताही में चितदेह ॥ ८० ॥

चौपाई ॥

जो कोइ वाके शरणै जावै। निश्चय ताको राम मिलावै ॥ मुक्तकरै मेटै जगतापी। चौथेपद लेजाय शिताबी ॥ पिय प्यारीके अंग सुनाऊं। खोल खोलके सब दिखलाऊं ॥ सब शुभकरम और नितनेमा। नवधाभक्ति जु दशमी प्रेमा ॥ तीरथ बरत प्रियतमा सेवा। पूजा करै जान सब भेवा ॥ यज्ञकरै देवै कुछ दाना। करिकैयोग धरै हरिध्याना ॥ सत वैराग और तप साधै। इन्द्री जीतनको आराधै ॥ सब में आतमरूप

पिछानो। अरु जो ब्रह्मज्ञान को जानो॥ ८१॥

दोहा॥

यह जो माया ईश्वरी याहि सतोगुण जान॥
या में होकरि कीजिये आदि पुरुष पहिंचान॥ ८२॥
सबही अंग सुलच्छणी सुन्दर अरु परवीन॥
सतसंगति का रूपधरि करै तिमिरका छीन॥ ८३॥
सतसङ्गति महिमा बड़ी शोभा अगम अपार॥
दूरकरै अज्ञान तिमि करै ज्ञान उजियार॥ ८४॥

चौपाई॥

जो प्राणी सतसँग में जावै। निहचै ताहि भक्ति उपजावै॥ भक्तिराम के हियकी प्यारी। जगसों करै बुद्धिको न्यारी॥ उपजे शील दया सन्तोषा। इनसों लगै न जग का दोषा॥ उपजै क्षमा दीनता ध्यान। तासे छूटैं जग बन्धान॥ उपजै त्याग और बैराग। तासों रहै न जग सों पाग॥ उपजै ज्ञान विवेक विचारा। तासों होय जगतसों पारा॥ और सभी शुभ लक्षण आवैं। ताको पाय परमगति पावैं॥ जो मैं कही करो थिर वासा। आगे कहूं सुनो चरणदासा॥ ८५॥

दोहा ॥

जो जो यह मैंनेकही तामें थिरकर बास ॥
अरुजु आसुरीगुननको सुनौं चरणहीदास॥८६॥

चौपाई॥

जग जंजाल मोह का जाला। कुलनाते अरु सुन्दर बाला॥ सुत पुत्री अरु सब परि-वारा। ममता धरा शीश पर भारा॥ राखैद्रव्य दान करै नाहीं। तृष्णा आशा रखमनमाहीं॥ काम क्रोध की ज्वाला भारी। तामें सुलगैं नर अरु नारी॥ लोभकाज इत उत को दौरैं। गर्ब करत नहीं लाजै बौरैं॥ हिंसा करैं दया नहिं जानैं। जहां तहां झगराई ठानैं॥ महाअशौच और व्यभिचारी। झूठ बचन कहैं सभा मँझा-री॥ जग ब्यौहार सभी पहिंचानौं। कलाखेल आसुरी जानौं ८७॥

दोहा ॥

महाअयोगी भक्ति बिन इन्द्रिय बश नरनार ॥
जानैं ना परलोकको लोक भोग में रत्नार॥८८॥

चौपाई॥

सतसंगत के निकट न जावैं। सेढ़ मसाढ़ी

भूत मनावैं ॥ निगुरे बेमुख तप नहिं साधैं । जगत कामना को आराधैं ॥ कथा कीरतन चित नहिं देई । सुपने हरिको नाम न लेई ॥ कुकरम करि आयुरदा खोवैं । नींद अविद्याहीमें सोवैं ॥ जीव परे माया के फन्दे । किये आसुरी सबही अन्धे ॥ लड़ैं भोमपरि दोजहां राजे । कटक जोड़करि दोदल साजें ॥ मेरी मेरी करिकै मूये । हरिसों सन्मुख नेक न हूये ॥ बाद लड़ाई द्वंद्वजो होई । मध्यम माया कहिये सोई ॥ डिंभ कपट छल भगल विधानों । ताहि आसुरी मन में आनों ॥ जन्म मरण अरु आवागौना । अरु कहिये चौरासी जौना ॥ ८९ ॥

दोहा ॥

राजस तामस रूपधरि लियो जीव को घेर ॥
धन मदमें बहरे किये सुनै न गुरुकी टेर ॥९०॥

चौपाई ॥

बहुतक मोह कला उपजावैं । सो तो जगके माहिं फँसावैं ॥ तासों कुमत भरमता भारी । तब वाडारै नरक मँझारी ॥ फिर चौरासीही भरमावै । काल पायकरि बाहर आवै ॥ पावै बहुरि म-

नुष की देही। जुदी होय नहिं परम सनेही॥ धुरसों संग चलीही आवै। जहां तहां वह घात लगावै॥ मायाजाल अधिक उरझेरा। गुरु बिन कैसे हो सुरझेरा॥ करै आसुरी हित बहु भारी। जान न देवै भौजलपारी॥ कनक कामिनी दे फुसलावै। ताते हरिकी ओर न जावै॥९१॥

दोहा॥

जो कबहूं सतसंग मिल जावै हरिकी ओर॥
पांचौ इन्द्री बीचहो लावै ह्वांसों मोर॥९२॥

चौपाई॥

लेकरि कुटुंब माहिं उरझावै। चेता सुना सभी बिसरावै॥ योग ध्यान जो यह नरधारै। रोग होयकरि ताहि पछारै॥ जो यज्ञासी ज्ञानी होवै। होय विषय रस ताको खोवै॥ भक्ति करन जो यह नरलागै। डिम्भरूप होवा घट जागै॥ तपसी को फल होकर आसा। वाके मन में करै निवासा॥ बैरागीको मोह लगावै। त्यागी को लालच उपजावै॥ यह हत्यारी कहूं न छोड़ै। बहुत भांतिहो जीको गोड़ै॥ कोइक साध बिबेक पिछानैं। याके सबही कौतुक

जानैं॥ ऐसे जनके शरणै जावै। छलरूपी सों सोई बचावै॥ ९३॥

दोहा॥

कही आसुरी ईश्वरी दोनों अंग दिखाय॥
अब्याकृत माया यही दीनी तोहिंचिताय॥९४॥
अब्याकृत मोटी भई होगइ नाना रूप॥
चरणदास निश्चयकरो बहुते धरे स्वरूप॥९५॥
तीनौं गुण लेखेलई कौतुक अधिक अपार॥
उपजावत है सृष्टिको पालै करै संहार॥९६॥
आपहि करता भोगता आपहि प्रेरनहार॥
ब्रह्म अकरताहै सदा तीनों गुणसों न्यार॥९७॥

शिष्यबचन॥

पहिले तुम कही एकही फिरकही माया ब्रह्म॥
जीव ईश्वरकहेऔर दो मोको उपजाभर्म॥९८॥
भरम छुटावनहारहो द्वैत मिटावन योग॥
तन मनही के मेटिये मेरे सगरे रोग॥९९॥

गुरुबचन॥

हँसबोले शुकदेवजी तुम भक्ता औतार॥
आये जीव चितावनै प्रभुकी कृपा अपार॥१००॥
तुमको अनुभव आदिसों हिये ज्ञान परगास॥

जगमें दीखो लिप्तसे हो तुम सदा उदास॥१०१॥
तन सेती निर्लेप हो मनमें कोई न रोग ॥
रहो सदाआनन्दमें तुमको हर्ष न शोग॥१०२॥

शिष्यवचन ॥

जब बोले चरणदासजी मैं हूं मूढ़ अयान ॥
तुम किरपासों होयगो मोकोनिर्मलज्ञान॥१०३॥
देत बड़ाई दासको जान आपना अंश ॥
शुकअवतार जब करधरो बहुतक मेटे संश ॥१०४॥
अब वाको मञ्जन करूं होवै उज्ज्वल ज्ञान ॥
मेरे हिरदेमें रहै सदा तुम्हारो ध्यान ॥ १०५ ॥
जोपै शिष पूरा भवै महाज्ञान परवीन ॥
तो भी पूछनहींकरै सतगुरु सों होदीन॥१०६॥
मोपै किरपाही करो दयासिंध समहीव ॥
एक चार कैसे भये मायाईश्वर जीव॥१०७॥
उलट पुलट बहुतै करी चरणदास महराज ॥
रामरूपसो कहतहै परमारथके काज ॥ १०८ ॥

गुरुबचन ॥

बचनकहा गुरुदेवजी शिष की ओर निहार ॥
सुखउपजावन कारणै कहूंजुबचनविहार॥१०९॥
प्रथम ब्रह्म अद्वैतथा शुद्ध अखण्ड अछेद ॥

इच्छाहीकेकरतही भया जु माया भेद ॥ ११० ॥
मायाही को संगले धरो पुरुष का रूप ॥
ताहीकोईश्वरकहत सुन्दरअधिक अनूप॥१११॥
धरिकै पुरुष स्वरूपही रच्यो सकल संसार ॥
जीवअंशदियो आपनो फैलो बहुबिस्तार॥११२॥
जीवघनीही देह में जाकी गिनती नाहिं ॥
उरझपरोबिषबासनालिप्तभयोतनमाहिं ११३॥
जीव जुबन्धसरूप है ईश्वर मुक्तसरूप ॥
ताही ते स्वाधीनहै भेदकहूं यह गूप ॥ ११४ ॥
कारण माया ईश्वरी सूक्षम जाको अंग ॥
लीलाकौतुक करनको ईश्वरने लई संग ॥११५॥
कारणसों कारजभई भया जो मोटा अंग ॥
ताको कहियेआसुरी चंचल अरु बेढंग ॥११६॥
जीव युवाके बश परो भूलो अपनी आदि ॥
इन्द्री गुणके बीचहो लेकर बिषै सवाद ॥११७॥
क्षेत्र में क्षेत्रगहीर हो बहुत मन लाय ॥
तातेअपनेरूपको गयोअधिकबिसराय ॥११८॥
भयोजु क्षेत्रगरूपही जात वरण गये लाग ॥
देह नांव कुलरूपमें रहा जु मूरख पाग ॥ ११९ ॥
पानी सों मोती भया सीपसंग भई गांठ ॥

यतनकियेजलहोयगा छूटैसबहीआंट ॥ १२० ॥
जीवअंश है ब्रह्मका आया देह मँझार ॥
ताते उपजी बासना तृष्णाबढ़ी अपार ॥१२१॥
करम लगा बौराभयो भूलगयो अपगोत ॥
बैरागसहितलहैज्ञानको मुक्तिरूपजबहोत१२२॥
योगसाधना भक्तिकरि होय जीव सों ब्रह्म ॥
दग्धबासना के भये छूटै सबही भर्म्म ॥ १२३ ॥
ओलापाला लहरहीं जाका पानी होय ॥
ऐसे ईश्वर जानिये मुक्तरूप है सोय ॥ १२४ ॥
त्वंपद जानौ जीवको ततपद ईश्वर जान ॥
असिपदब्रह्मैजानिये मायाकियेबिनान ॥ १२५ ॥
ऐसे इच्छाब्रह्मकरि भया एक सों चार ॥
जो तुम पूछी सोकही याको लेहुबिचार ॥१२६॥

शिष्यबचन ॥

तुम जो कही सो मैं सुनी याको उपजो ज्ञान ॥
अब आगे पूछनकरूं सोभाषो सुखदान॥१२७॥
जीव बिथा तुमनेकही लागी भूल अगाध ॥
कैसे चेतै आपको पावै अपनीआदि ॥ १२८ ॥
कैसे मायासों छुटै जीव ब्रह्म ह्वै जाय ॥
याकोसगरो भेदही संतगुरु देहुसुनाय ॥१२९ ॥

गुरुवचन ॥

मायाने बांध्यो नहीं बँध्यो आपनी आस ॥
जगत बासना के छुटे लहै न काया वास १३०॥
इंद्रीगुण के मिलतही गयो आप को भूल ॥
देही जानै आपको लगैं जु तिरगुनमूल ॥ १३१ ॥
न्यारो जानै देह को गुणइंद्री वा साथ ॥
बिषयभोग चाहै नहीं मनको राखै हाथ ॥ १३२ ॥
इंद्री रोकै मन रुकै मनराखै बुधि ओर ॥
बुधिराखै आतम बिषे लाख बातका जोड़॥१३३॥
ऐसे ध्यान सदा करै आशा सकल निवार ॥
करमबंधना से छुटै रहै रूप ततसार ॥ १३४ ॥
आपन में आतम लखै और सबन के माहिं ॥
ऐसो उपजै ज्ञानजब सकलबंध छुटिजाहिं१३५॥
निरमलहो ब्रह्में मिलै बहुरि न पहिरै देह ॥
याको यही उपावहै हे शिष तू सुनलेह ॥ १३६ ॥
दूजो और उपावही कहूं तोहिं समझाय ॥
जीव मिलै ईश्वर बिषे मुक्तिरूप होजाय॥१३७॥
ब्रह्म अपनी इच्छा सहित धरो जु ईश्वररूप ॥
जग उपजावन कारने सरगुन भये सरूप॥१३८॥
मायाही के बीचमें आप किया परवेश ॥

धरे तीन जहँ रूपही ब्रह्मा बिष्णु महेश ॥१३९॥
मायाही की ओट में खेलै खेल अपार॥
उपजावै पालै हनैं बहुरो करै संहार ॥ १४० ॥
माया के आधीन ना वासों लिप्त न होय॥
चाहे जब परगट करै चाहे डारै खोय॥ १४१ ॥
ऐसी रचना बहु रची अद्भुत बारंबार॥
आप लिप्त तामें नहीं रहै सदा निरधार॥ १४२॥
चतुरानन अस्तुति करैं ध्यान धरैं शिवआदि ॥
नारद से गुणगावईं ताहि रटैं बहु साध॥ १४३॥
देवा ऋषि मुनि पूजईं इंद्रादिक थहराय॥
चंद सूर आज्ञा विना नेकहु ना ठहराय॥ १४४॥
भीर परै जब सबन पै धरिआवैं औतार॥
मर्यादा के कारने पृथिवी भार उतार॥ १४५॥
गुण अनंत कोटिक घने वर्णि सकै कबि कौन ॥
थकेजुगणपतिअतिचतुरगहोशारदामौन १४६॥
अपनी अपनी बुधि बिषे सबहुन कियो बखान ॥
लीला अगमअपारगति लही न काहू जान १४७॥
कालस्वरूपी काल को दुष्टन को भयरूप॥
भक्तन को भगवानही सुंदर श्यामस्वरूप १४८॥
भक्तों के हीये बिषे सदा बिराजैं आय॥

तन छूटे वा संतको लेवें धाम बुलाय ॥ १४९ ॥
चार मुक्तिहैं धाम में मनमानें सो लेव ॥
संतनसों ऐसे कहैं करैं बहुतही हेव ॥ १५० ॥
सालोक मुक्ति सामीपता तीजी है सारूप ॥
चौथीहै सायुज्यता करैं ब्रह्म के रूप ॥ १५१ ॥
भक्त पियारे पुरुष को इन समान नहिं कोय ॥
औरनकीतौ कहकहूं लक्ष्मीहोय तौ होय ॥१५२॥

शिष्य वचन ॥

पूंछू जान अजान हो परमारथ के हेत ॥
भक्त होन लक्षण कहा ईश्वरपद गहलेत १५३ ॥
तुम्हरे बचन चितावने पार उतारन हार ॥
पतितन के पातक हरण देह मिलायमुरार १५४॥

गुरु बचन ॥

भक्ति करै सोई भगत आन धरम तज देह ॥
सकल कामना त्यागकरि हरिसोंराखैनेह १५५॥
ग्रह नक्षत्ररु देवता तिनकी ओर न जाय ॥
सगुण सौंण मानैं नहीं रहै रामलौलाय ॥ १५६ ॥
ज्ञानदेव बरषैं रतन आठ सिद्ध फलदेत ॥
हरिके जो निज भक्तहैं करैं न तिनसों हेत ॥१५७॥
भांति भांति भै लावई डरपावै बहुभांति ॥

तौभी निहचलही रहैं नाहिं नवावैं माथ ॥ १५८ ॥
ध्यान करै हरिओर का रसना प्रभुका नाम ॥
गुणाबाद गावत रहै सदा रहै निहकाम ॥ १५९ ॥
प्रीति लगावै रामसों तनमन डारैं वार ॥
दरशनही के बावरे चरणकमल आधार ॥ १६० ॥
लेवै प्रेम बिसाहि करि देवै शीश अकोड़ ॥
मुड़ैनहीं प्रभु ओरसों यत्नकरो कोइक्रोड़ ॥ १६१ ॥
हरिधन सों धनवन्त हैं और सकल धन छार ॥
राज बड़ाई सीटसम स्वर्गौके सुखलार ॥ १६२ ॥
जो सुखपाये भक्ति में अरु साधन के मांहि ॥
सो सुखतिरलोकी बिषैंसुपनेहू कहुं नाहिं ॥ १६३ ॥
ताते जग फीको लगो करी न वाकी चाह ॥
डार बोझ हलके भये चलेप्रेमकी राह ॥ १६४ ॥
जिनके ऐसी नेष्ठा जाय मिले गोबिन्द ॥
पीछा फिरदेखा नहीं तजिकै ममता बन्ध ॥ १६५ ॥
राम रसीले संत की शोभा अगम अपार ॥
जिनकी अस्तुति करतही शेषहू जावेहार ॥ १६६ ॥
बिना भक्तिचाहै नहीं अर्थ धर्म काम मोक्ष ॥
और बिमौनीचैरही सोतौ कहिये छोछ ॥ १६७ ॥
ऐसे हरि प्यारे उन्है हरि को प्यारे वेह ॥

संतही हरिकी आतमा संतही हरिकी देह॥१६८॥
संतही हरि के धनगिनों संतही है परिवार ॥
आठ पहर साठोंघड़ी हरिजीकरैं सँभार॥१६९॥
संतहि हरि के इष्ट है संतहि को करैं ध्यान ॥
ओत पोतकी प्रीतिको कोकरसकै बखान॥१७०॥
दोनों मिलकरि एक है दुई न उन के माहिं ॥
जीवनमुक्ता होरहे चरणकमलकी छाहिं॥१७१॥
रामरूप कहै जब सुनी ओत पोतकी प्रीत ॥
आगे फिर पूछनकरी सतगुरुसों रनजीत॥१७२॥

शिष्य बचन ॥

भक्तन की शोभा कही सुनि मनभयो हुलास ॥
और एकपूछनकरैं तुम्हरे चरणहीदास॥१७३॥
धुरिसों आवैं भक्तही कै जग में उपजन्त ॥
कै करनी लच्छन सहित कैसेहोवै सन्त॥१७४॥

गुरु बचन ॥

कोई भक्त धुरिसों उतर ईश्वर आयसुपाय ॥
भक्तिचलावै जगतमें तारनतरन कहाय॥१७५॥
दयावन्त दाता अधिक बन्धछुड़ावन हार ॥
नरनारिन उपदेशदे करैंजु भवजलपार॥१७६॥
कोई जगत का मनुष जो संगत बैठे आय ॥

भक्तनके उपदेशते सोऊ भक्त ह्वैजाय ॥ १७७ ॥
मलयागिरि धुरिसों बनों ताकी महकी बास ॥
लगसुगन्ध चन्दनभये जोथे निकटपलास १७८ ॥
ऐसे धुरिके साधसंग मिलभिल होवै सन्त ॥
शिद्याले करनी करें पावें पद भगवन्त ॥ १७९ ॥
संस्कार पिछलाकछू तासों मन ललचाय ॥
बुधमें अंकुर भक्तिका संगत में लेजाय ॥ १८० ॥
जहांजाय चरचासुनै अधिकी उपजै हेत ॥
चावलगै हरिभक्तिका नौधाको रसलेत ॥ १८१ ॥
शनइहि शनइहि तासुसों दिन दिन भक्ति बढ़ै ॥
संतन के परतापसों प्रेमा अमलचढ़ै ॥ १८२ ॥
जब रीझै करतारही करै आपनो दास ॥
वाको देवै लोकमें चरणोंपास निवास ॥ १८३ ॥
दोय तरह के भक्तये ईश्वर के मनभाय ॥
जो शिष्यतैं पूछनकरी मैंनेकही सुनाय ॥ १८४ ॥

शिष्य बचन ॥

मोहिं पियारे अतिलगैं वचन तुम्हारे मुक्ख ॥
किरपा करि जो तुमकहीभयोहियेमेंसुक्ख ॥ १८५ ॥
सब संसारी एक से खेलै पाप अरु पुन्न ॥
संसकार जो भक्तिका पिछलेकौने गुन्न ॥ १८६ ॥

गुरु बचन ॥

पाप पुण्य जो करतहैं ताको फल नरलेत ॥
काहूकीये शुभकरम फलत्यागेहरिहेत ॥ १८७ ॥
बहुत जन्म शुभकर्मकरि हरिही को फलदीन ॥
समयपाय ऐसोभयो उपजी भक्तिनवीन ॥ १८८ ॥
भक्तिकरत तनछुटिगयो फिरभयो नर औतार ॥
संसकार बढ़तो चलो ऐसे बारम्बार ॥ १८९ ॥
एकबार ऐसीभई बाढ़ो प्रेम अपार ॥
भक्तिफली मानीरली अपनायो करतार ॥ १९० ॥

शिष्य बचन ॥

खोल गुरू अबभाखिये नवधा के नौ अंग ॥
दशवीं प्रेमाके कहो कहलक्षण कह ढंग ॥ १९१ ॥
जुदे जुदे भाषनलगे नवधा के नौ भेव ॥
रामरूपयों कहत हैं परमगुरू सुखदेव ॥ १९२ ॥

गुरु बचन ॥

प्रथम अंग सरवन कहूं सुनै गुरू के बाक ॥
कथासुनै चरचासुनैं धरै हियमें ताक ॥ १९३ ॥
अंग दूसरो कीरतन हरिही के गुणगाय ॥
मनको करे अकन्तही प्रभुसों नेहलगाय ॥ १९४ ॥
तीजे सुमिरन कीजिये मन में देकर चित्त ॥

रोम रोम जपरामहीं तासों उपजै हित्त ॥ १९५॥
चौथे सेवाही करै चरनन राखै ध्यान॥
रूपखुलै मननाहलै होय जहां ठहरान॥ १९६॥
पँचवें पूजाही करै सबही सौंज सकेर॥
तामें हितचित देरहै मनको राखैघेर॥ १९७॥
करो राजसी मानसी मन में आवै जौन॥
जबलग पूजाहीकरै जबलग गहैजुमौन॥ १९८॥
दोऊ हाथ को जोड़करि बचन कहै ह्वैदीन॥
मैं अपराधीशरणहूं करनी मेरी हीन॥ १९९॥
साधुनको अरु गुरुनको गोबिंदको दंडौत॥
यही बन्दना अंगहैं यासे सन्मुखहोत॥ २००॥
मन में दासा तन रहै यही सातवां अंग॥
सेवकहो सेवाकरै स्वामीके रहै संग॥ २०१॥

चौपाई॥

दासभाव अपना को जानै। अपने स्वामी को पहिंचानै॥ नखशिख वाको रूप निहारै। अपना को चरणन में डारै॥ प्रभुकी इच्छाही में रहै। दुख सुख सब शिरही पै सहै॥ पतिव्रता को अंग बिचारै। सो वहले आपनहू धारै॥ ऐसे आज्ञाकारी होवै। अपना जाति बरनकुल

खोवै ॥ दासन में मिलि दास कहावै । आनदे-
वता सबबिसरावै ॥ सपने सरन औरकीनाहीं ।
दृढ़ता टेक गहै मनमाहीं ॥ जग भोगनसों रहै
उदासी । मुक्ति कामना सों निरबासी ॥ २०२ ॥

दोहा ॥

हरिदर्शन की वासना और न कोई आस ॥
प्रभुके पदपंकज बिषे कीया चाहै वास ॥ २०३ ॥
अठवें मितरता करै सो वहै सुषोपति अंग ॥
तासों उपजैप्रेमही चढ़ै भक्तिकोरंग ॥ २०४ ॥
नौमें तन अर्पण करै जग के नाते तोड़ ॥
बेमुखहो संसारसों सनमुखहरिकीओड़ ॥ २०५ ॥
काहू से नातानहीं काहू से नहिं प्रीति ॥
निराजु हरिहीको भवै रखै न कोई मीत ॥ २०६ ॥
नवधा के नौ अंगही तोको दिये सुनाय ॥
अबदशवींप्रेमाकहूं सुनोशिष्यमनलाय ॥ २०७ ॥
नौऊअंग जो भक्तिके साधै धारन धार ॥
नौधासों प्रेमाभवै उपजै प्रेम अपार ॥ २०८ ॥
चोर जु आवै भवन में पहिले दीप बुझाय ॥
ऐसे आवत प्रेमके जैहै बुद्धिसिराय ॥ २०९ ॥

चौपाई ॥

आवत प्रेम जाय बुधि नासे । भांति भांति के होहिं तमासे ॥ कबहूं उठकर नाचन लागै । कबहूं जंगलही को भागै ॥ कबहूं चरन कमल करि बासा । कबहूं गावै उमँग हुलासा ॥ कबहूं रोम उठैं तन सारे । कबहूं नैननसों जल डारे ॥ सुबकी रोवै होय उदासा॥गद्गदवाणी कंठउसासा ॥ कभी मगन ह्वै रूप निहारै । कबहूं तनकी सुरति बिसारै ॥ कबहूं हँसै जिमींपर लोटै । वाके शरम सकुच नहिं ओटै ॥ कबहूं अकबक बानी बोलै । कबहुं अचक रहै आंखे खोलै ॥ कबहूं दृग मूंदे हिये माहीं । बड़ी बारलौं वा सुधिनाहीं ॥२१०॥

दोहा ॥

प्रेम अवस्था यह कही कोइक पावै संत ॥
ऐसे प्रेमी भक्त के बशहोवैं भगवंत ॥ २११ ॥
भक्ति शिरोमन सबन में चतुर सुहागिनि नार ॥
अपनी अधिकीप्रीतिसों बशकीनेकरतार॥२१२॥
सोतौ दुर्लभ पावनी जाको तरसैं देव ॥
सत्संगति में पाइये गुरु सेवा करिलेव ॥ २१३ ॥
भक्ति बिना करै योगही ताहि तपस्या जान ॥

चाहै फल अरु कामना सो वह मूढ़ अयान २१४॥
बोध कथै जो भक्ति बिन ज्ञान भ्रष्ट तेहि मान॥
निश्चय विषयी होय वह पड़ै कूप अज्ञान २१५॥
जैसे माता के बिना बालक भ्रष्टल होय॥
भक्तिबिना ज्ञानीजना निश्चयभ्रष्टलसोय २१६॥
रानी भक्ति शिरोमणी सब धर्मन शिरमोर॥
पुरुष ओर सम्मुखकरै जगसों लावैमोर॥ २१७॥
ऐसी भक्ति करै नहीं सो नर पशू समान॥
सर्बस खोवै आपना सबबिधि होवै हान॥ २१८॥
ज्वारी की ज्यों हार है ऐसी मनुषा देह॥
संगी कोई न होयगा जिनसे बांधा नेह॥ २१९॥
जन्म खोय पछताय हैं मलि मलि दोऊ हाथ॥
महलकुटंबतिरियादरब चला नकोऊसाथ२२०॥
प्रानी जानैं रहूंगा या दुनियां के माहिं॥
ताते जगफैलाव को मनसों छोड़ै नाहिं॥ २२१॥
जगत बासना में फँसै नेक न करै उपाव॥
भूला फूलाही फिरै हमरा भला बनाव॥ २२२॥
कबहूं देखै द्रब्य को कबहूं यौबन ओर॥
कबहूं देखै महलको कबहूं अपना जोर॥२२३॥
कबहूं देखै नारि को सुंदर अधिक अनूप॥

कबहूं देखै सुतन को कबहूं मितरभूप ॥ २२४ ॥
कबहूं अपना कुल लखै बाप ददा का नांव ॥
उनके अपने कियेको देखै ऊंची दांव ॥ २२५ ॥
ऐसे अभिमानी भये रहैं जु मनके माहिं ॥
लगी मोहता मछरता निरखैं अपनीछाहिं २२६॥
पांचौ इंद्री स्वाद में रहै लपेटे नित्त ॥
पागे सुख संसारमें वाही सौं कर हित्त ॥ २२७ ॥
ऐसे मूरख आंधेर गई हिया की फूट ॥
चौरासी के फेरसों कभी न पावैं छूट ॥ २२८ ॥

शिष्य बचन ॥

फिर पूंछी चरनदास जी सुनौं श्री गुरुदेव ॥
चौरासी काको कहैं भिन्न भिन्न कहिदेव॥ २२९ ॥

गुरु वचन ॥

फिर बोले सुखदेव जी चरनहिंदास निहार ॥
चौरासीलख योनिका कहूं सबै बिस्तार ॥ २३० ॥
कहन लगे रणजीत सों श्री परम गुरुदेव ॥
रामरूप सब खोलकरि चौरासी को भेव ॥२३१॥

कुंडलिया ॥

नौलख जलकी योनिहैं दसलख पक्षी जंत,।
ग्यारहलख कृमि कीटहैं उपजै बार अनंत ॥

उपजै बार अनंत बीस थावर फिरि आवै।
तीसलाख पशुयोनि तहां बहुतै दुखपावै॥
चारलाख जो योनि है सो है मनुषादेह॥
रामरूपशुकमुनि कही चरनदास सुनलेह॥२३२॥

दोहा॥

करम लगा उरझे घने जैसे मच्छी जाल॥
लेले आवै बासना फिर फिर मारै काल॥२३३॥
जीवहिंसा बहुतै करै घनाजु बोलैं झूठ॥
मनुषों कूं दुख देतहैं ऐसे पतित अहूठ॥२३४॥
चोरी जारी करत हैं अरु परनिन्दा जान॥
परकी हांसीही करैं अपनी ना पहिंचान॥२३५॥
परकूं दुखी जु देखकर आपखुशी होजात॥
पाप करत डरपैं नहीं मनसें अधिकसुहात॥२३६॥
तृष्णा दौड़ीही फिरै द्रव्य कमावन हेत॥
कपट झपट छलही करै परधन कूं ठगलेत॥२३७॥
परनारी को देखि करि बहुत लगावै फंद॥
पाप पुण्य समझै नहीं ऐसे मूरख अंध॥२३८॥
गद्दी गरब बिछाय करि तापरि बैठे फूल॥
आपनको ऊंचा गिनै सभीगँवावैं मूल॥२३९॥
काम क्रोध मोह लोभ का हितसों पलंग बिछाय॥

आशा की डोरी बुणी सोवत है मन लाय॥२४०॥
या काया के भवन में रहै जु अपनी इक्ष॥
कहीं थंभहै हाड़के दीखत है परतिक्ष॥२४१॥

चौपाई॥

जहां तहां नाड़ी लिपटाई॥ रुधिर मांस की भीत बनाई॥ त्वचाछाति जेहि ऊपर छाई॥कुमति कुबुधि पटदियेलगाई॥ तामाहीं दुर्गन्धिजु आवै। भांति भांति के रोग जनावै॥ विष्ठामूत्र तासु मंझारा। तावश होयजन्म सबहारा॥अज्ञान बुढ़ापा चिंतातामें। ऐसे औगुणदीखैं जामें॥ यामें मूरख रहा लुभाना॥ याका मरम भेदनहिं जाना॥ऐसे घरमें कभूंनरंजिये। समझ होय तो वेगहि भजिये॥यामेंरहिये हेत न कीजै। परमातम में हित चित दीजै॥ यह सराय का मन्दिर जानौ। यामें मन को नेक न सानौ॥ शुकदेव कहै सुनहो चरणदासा। यह देही है नरक निवासा॥२४२॥

दोहा॥

रहैजु देही बीचही करै न यासों मोह॥
याको सोंड़ी जानिके यासों लिप्तनहोह॥२४३॥

तामें यह प्राणीरहै सो रहै भवके सिन्ध ॥
पांचतरहका नीरहै शब्दस्पर्शरुगन्ध ॥ २४४ ॥
रस चौथा जानोभले जान पांचवांरूप ॥
स्वादजु इनका भँवरहै कहीबात यहगूप॥२४५॥

चौपाई ॥

तनको कछू भरोसो नाहीं। रहतसदा भवजलके माहीं॥ छिनमें डूबै वाहि डुबावै। ताते काहे चित्त लगावै॥ गुरुधीवर की शरणै जावै। तो वह खैंच बाहरे लावै॥ ज्ञान भक्तिकी नौका जाके। मेख सत्तकी जड़ी जु ताके॥ पानी पाप न भरने पावे। पकड़ बांह जितवा बैठावे॥ त्याग बली सों पार उतारे। जब वह प्राणी लगै किनारे॥ श्वांसों उतर रामके पासा। ऐसेपहुंचै गुरुका दासा २४६॥

दोहा ॥

पै गुरु को ढूंढ़त नहीं ऐसे मूढ़ अयान ॥
राते माते जगविषे नेकनहीं पहचान ॥ २४७॥
कहाजु यह संसार है कहा हमारी देह ॥
कुटुम्ब मित्र एकौनहीं कहाजुसाजा गेह ॥२४८॥
कितसों आया कौनहूं किन करमन के बन्ध ॥
जन्म दियोहै कौनने यहनहिंजाने अन्ध॥२४९॥

को उपजावै को हनै कोहै पालन हार ॥
काकी शरणै जाइये कोहै वह करतार ॥ २५० ॥
आनदेव पूजत फिरै धन पुत्तर के हेत ॥
श्याम करनको चहतहैं करिनहिं जानैसेत ॥ २५१ ॥
करम लगाह्याई रहै फिर फिर आवै छेत ॥
ऐसे सांचे शूरमा मररहिहैं या खेत ॥ २५२ ॥
भजैं न कायर होयकरि करैं न घर की शुद्धि ॥
पांवगाड़ टलतेनहीं धनिधनिइनकीबुद्धि ॥ २५३ ॥
मैली इनकी बुद्धिहै मन है डांवा डोल ॥
तनबौरा भया विषयमें कहैजु बहके बोल ॥ २५४ ॥
जग व्यवहारन में पगे छके जो इंद्री स्वाद ॥
बनजारे हूये फिरैं आवैं जावैं लाद ॥ २५५ ॥
फिर फिर उपजे फिर मरे पाप पुण्य परताप ॥
आवा गवन सूं नाथके रहे न यामूंधाप ॥ २५६ ॥
इन्द्रीछके नस्वाद सूं बहुतक दीये भोग ॥
तृष्णा अधिकी होतहै घना जुलागैरोग ॥ २५७ ॥
रोगभये बहुकष्टही दारुण पावै दुःख ॥
विषयभोग संसारकेकभी नहोवै सुक्ख ॥ २५८ ॥
फैलायो फैलै घनों जहां तहां मन जाय ॥
पातबगूला ज्योंफिरै नेक नहीं ठहराय ॥ २५९ ॥

मनबहै इन्द्री स्वाद मैं जहां बुद्धिहू जाय ॥
उपजै बिषय बिचारही तिमिरहोयअधिकाय २६०

शिष्यबचन ॥

पूछतहूं आधीनहो सुनहो दीनदयाल ॥
मोको अपनाजानकरि बहुतौकिया निहाल २६१॥
भक्ति अंग तुमने कहा मैं जु सुना चितलाय ॥
अरु संसारी नरनकी कही जु व्यथासुनाय २६२॥
यह प्राणी जग में बंधा कर्म लगे बहुभांति ॥
कैसे छूटै दुखन सों कैसे पावै शांति ॥ २६३ ॥
कैसे छूटै बंधसों कैसे होवै मुक्त ॥
कैसे जीतै इंद्रियां कहो कौनसी युक्त ॥ २६४ ॥
तुमकही इंद्री भोग सों परबल होती जाहिं ॥
मनको खैंचेही फिरैं जाते बुधिरहै नाहिं ॥ २६५॥

गुरुबचन ॥

सुनौ शिष्य अब कहतहूं मोक्ष धर्म समझाय ॥
मनके रोकनकी कहूं ताते बुधि ठहराय ॥ २६६॥
मनके ठहरे योगहो मनके ठहरे ध्यान ॥
मनके ठहरे भक्तिहो मनके ठहरे ज्ञान ॥ २६७॥
बिना भोग इंद्री थकैं जो आवै संतोष ॥
आशातृष्णा जायभजि उपजै राग न दोष २६८॥

ज्ञान इंद्रिन सों रोकिये कर्म इंद्रिन को जान ॥
अरु मनसेती रोकिये पांचौ इंद्री ज्ञान ॥ २६९ ॥
मनको रोंकै बुद्धिसों बुधि को हरिके ध्यान ॥
जित ह्यां आवै लीनता छूटै सकल बिनान २७०॥
ध्याता ध्यानरु बुद्धि सब करै ध्यान में लीन ॥
यह साधन करता रहै छूटै जगत मलीन २७१ ॥
बंधन सब छुटिजाहिंगे जग सों छूटै नेह ॥
उपजे से बैराग के मुक्तिपदारथ लेह ॥ २७२ ॥
रहनी गहनी साध करि बहुरि लगावै ध्यान ॥
बिघ्न निकट आवै नहीं ताकी होय न हान २७३॥
संतोष कुल्हाड़ाही करै हनैं क्रोध का मूल ॥
मनकेसंकल्पबिकल्पकी तजै हियासोंशूल २७४
सतगुणहीकी प्रकृति सों करै नींद को दूर ॥
सावधानही होयकै करै जु भयको चूर ॥ २७५ ॥
मेटै मनकी बासना और निवारै द्रोह ॥
धीरजके परतापसों व्याकुलता तजद्योह २७६ ॥
श्रम इन्द्रिन के विषयमें प्राणायाम सों जाहिं ॥
इन अभ्यासन पैठिये सतगुरुजीकी बांहि २७७॥
निंदा करनी रसकबित और सबै रसरीति ॥
ज्ञानकलासों दूरिकरि कनककामिनीप्रीति २७८॥

हलका सूक्षम खान सों सभी बिडारै रोग॥
थिरताही की शक्तिसो तजै लोभकाभोग॥२७९॥
बिनशवान मनकामना सो बिचार सों झार॥
और जो जेते पापहैं नरकों के भेटार॥ २८०॥
शुभ कर्मों के फल तजै तासों हो निःकर्म्म॥
अंतसमयको जानके तज आशा आश्रम्म २८१॥
संसारी का सँग तजै छूटै जग संग्रेह॥
बिनशवानही समझके तजै कुटुंबको नेह २८२॥
दया दंड सों डाटि दे श्वानरूप अभिमान॥
मनके धीरज खड्गसों तृष्णा डारै भान २८३॥
निश्चय सों कर दूर भ्रम बाद तजै गहमौन॥
ढीठ पनेसे मै भजा करै जु निरभय मौन॥२८४॥
मनको बश करै बुद्धिसों बुधिसों उपजै ज्ञान॥
दूरहोय अहंकार जब छुटै देह अभिमान २८५॥
जब होवै परमात्मा भवै आपने रूप॥
हानिलाभ तामें नहीं भेटै पुरुष अरूप॥ २८६॥
मुक्तहोन लक्षण कहे अबयों मुक्ति दिखाय॥
शिष्य आंखि तोहिं देतहूं ताहीसों दरशाय२८७॥
यह जो तेरी देह है सो आपन मत मान॥
तूतो आतम रूपहै अपनीकरिपाहिचान॥ २८८॥

यह जड़ तू चैतन्य है तू अरूप यह रूप ॥
यह अनित्य तू नित्यहै यह परगट तू गूप ॥२८९॥
यह क्षेत्र क्षेत्रज्ञ तू बुध बिचार कर देख ॥
यह क्षर तू अक्षर सदा तू अलेख यह लेख॥२९०॥
चार बर्ण और आश्रम जात नात कुलगोत ॥
रूपनाम किरियायही बालबिरध यहहोत॥२९१॥
यह उपजे विनशै यही याको नाना रोग ॥
तू सतचितआनंदहैइकरसअमरअसोग॥२९२॥
यह भौ भरी विकार सों बहुबिधि लागेलेव ॥
तूअविनाशी भयरहितनिर्बिकारनिरलेव॥२९३॥
यह चौबीसौं तत्त्व की तीनौं गुण हैं साथ ॥
पै तू याके वशनहीं यह तेरे है हाथ ॥ २९४ ॥
यानैं तू पकड़ो नहीं तैं गहि राखी आप ॥
यासों मिलहीके लिये घनेपुण्य अरु पाप२९५॥
बिषय बासना स्वादले यासों बांधो नेह ॥
ताहीतें लिपटो घनो प्यारी लागीदेह २९६ ॥
दुख सुख व्यापै देह को तैंने लीन्हे मान ॥
भयो देहके रूपही भूलो अपनो ज्ञान २९७ ॥
लगी रहै नित बासना फिर फिर पहरे देह ॥
ऐसे चौरासी बिषे नितही तेरो गेह ॥ २९८ ॥

जो तू चाहै मुक्तिही इन्द्रिन के रस छोड़ ॥
तीनौं गुणके संगसों मनको लावोमोड़ २९९ ॥
राजस तामस त्याग के सात्त्विकमें कर वास ॥
याहूसे आगेचलो नरक स्वर्ग तजआस ३०० ॥
शुभ कर्मनको लहत है स्वर्गौं के फल जाय ॥
पुण्य क्षीणहोगिरतहै मृत्युलोकमें आय ३०१ ॥
खोटे कर्मन के किये लहत नरक संताप ॥
फिर आवै मृत्युलोकमें क्षीणहोय जबपाप ३०२ ॥
ऐसेही भरमत फिरै स्वर्ग मर्त्य पाताल ॥
आवागमन लागीरहै फिरफिरमारैकाल ३०३ ॥
पाप पुण्य दोऊ बंधहैं याको छुटा न जान ॥
मुक्ता जबहीं होयगा निर्मल उपजै ज्ञान ३०४ ॥
दोनों बेड़ी काटिकरि यासों बाहर आय ॥
लोहेसों लोहाकटै सो मैं देहुँ बताय ॥ ३०५ ॥
शुभकर्मन को किये ते खोटेकर्मनशाहिं ॥
फिर त्यागेशुभकर्मफल रहैवासना नाहिं ३०६ ॥
नीचे कर्म करै नहीं करै जु ऊंचे कर्म्म ॥
जिनके फल चाहै नहीं यही मोक्षहैधर्म्म ३०७ ॥
ऐसी करनी जो करै सो होवै निःकर्म्म ॥
कर्मोंही के छुटेसे होय जीवसों ब्रह्म ॥ ३०८ ॥

सब कर्मन को त्यागिके जपै सुअजयाजाप ॥
देहीसे न्याराहै लागै पुण्य न पाप ॥ ३०९ ॥
आतमही को ध्यानकरि आतम सों रतिमान ॥
सबही भूतन के बिषे एक आतमा जान ३१० ॥
जैसे सूत्र है एकही मणिके नाना भेक ॥
ठाकुरद्वारे श्वपचघर जैसे दीपक एक ॥ ३११ ॥
जैसे दीवा सब भवन छोटा बड़ा जो गेह ॥
ऐसे आतम सबबिषे लघु दीरघ जोदेह ३१२ ॥
पाहन नानारूपही सब में पावक एक ॥
ऐसे सबहीघट विषे एक आतमा देख ३१३ ॥
ज्यों भांड़े बहुभांति के भरा सुजल सबमाहिं ॥
यों इक आतम सबबिषे दूजा कोई नाहिं ३१४ ॥
सबको देखै आपमें आप सबन के मांहि ॥
ऐसे आतम ज्ञानसों इच्छादुईनशाहिं ३१५ ॥

शिष्य वचन ॥

सुखलेने के कारने फिर यक पूंछूं बात ॥
सरवनतिरपतहोतहैं बचनबिलाससुहात ३१६ ॥
चरनदास ऐसे कही सुनो श्रीगुरुदेव ॥
चेतन सों जड़ज्योंभई याको कहियेभेव ३१७ ॥
मुसकाये सुखदेवजी कहन लगे सब तोल ॥

रामरूप निजभेदको सबै खोलहीखोल ३१८ ॥

गुरु वचन ॥

आदिब्रह्म इच्छाकरी सोई माया तत्त्व ।
फेर होय महत्तत्त्वही अहंकार हो सत्त्व ३१९ ॥
फिर वह तीनों गुणभवै जगत भवै आकार ॥
निराकार साकारहो खेलै बहु वपुधार ३२० ॥
फिर जग उलटै गुणन में जायहोत है लीन ॥
अहंकार के बीचमें जाय मिलैं गुणतीन ३२१ ॥
अहंकार महत्तत्त्वहो महतत माया माहिं ॥
माया ब्रह्महीके बिषे आप एक रहजाहिं ३२२ ॥
जैसे मकड़ी तारको उगिलै अपने ख्याल ॥
बहुरोवाही तारको निगलजाय ततकाल ३२३ ॥
ऐसे जड़ चैतन्य सों उपजै प्रकटै आय ॥
इच्छाही के खैंचते ताको लेय मिलाय॥ ३२४ ॥
जड़ चेतन कहिबे बिषे समझै एक शरीर ॥
भूषण कंचन जानिये ज्यों पाला औ नीर ३२५ ॥
यह वह वह यह एकहै तामें मीन न मेष ॥
अद्वैतीहू चहै तौ ऐसे वाकूं देख॥ ३२६ ॥
चेतन जड़को रूप धरि कौतुक किये अपार ॥
भयो एकसों बहुतही भांति भांति तनधार ३२७ ॥

सब चैतन्य बिलासहै जड़ता नाहीं कोय ॥
ब्रह्म बृत्ति हिरदे धरो डारो दुबिधा खोय ॥ ३२८ ॥
चार भाव बेदांत मैं वर्णन किये बनाय ॥
सो शिष तो सूं कहतहूं ताकूं सुनुचितलाय ३२९ ॥
प्राग भाव अन्योन्य हू और बिध्वंसा जान ॥
और अतीता जानियै याकी करिपहिचान ३३० ॥

शिष्यवचन ॥

अब मैं यह पूछनकरूं सुनौं श्रीगुरुदेव ॥
चारि भाव कहो खोलकरि ताको पाऊं भेव ३३१ ॥

गुरुवचन ॥

सुनौं शिष्य अब कहतहूं भिन्न भिन्न फैलाय ॥
चार भावके समझते सबही दुई नशाय ३३२ ॥
प्रथमै माटी जानिये प्रागभावहै सोय ॥
बहुत भांति बरतन बनै अन्यो अन्याहोय ॥ ३३३ ॥
फेर फूट माटी भये भाव विध्वंसा येह ॥
आदि अंत अरु मध्य में माटी ही सुन लेह ॥ ३३४ ॥
ज्योंकी त्यों माटी रही ऐसी करिपहिंचान ॥
बना मिटाह्वां कुछनहीं भाव अतीता जान ३३५ ॥
माटी का दृष्टांत जो दिया ब्रह्मका आदि ॥
ह्वांबरतन ह्यांजग सबै नाना भया अगाध ३३६ ॥

जगत बिनशि ब्रह्मैं भवै मिटजा सबै विषाद ॥
रूपनांवकिरिया मिटैं नासै बादबिवाद ॥ ३३७॥
आदि अंतहै ब्रह्महो बीच बीच में भर्म्म ॥
ऐसेही जग जानिये समझै गुरुकी गम्म ॥ ३३८ ॥
कहने मात्तर जगतहै हैजु ब्रह्मका रूप ॥
जैसे लहर समुद्रहै ज्यों सूरज अरु धूप ॥ ३३९ ॥
ज्यों तरंग जलमें उठै ज्यों धरती परिरेख ॥
जैसे पुतली थंभमें ऐसे जगकूं देख ॥ ३४० ॥
अज्ञान बिषे जगसांचहै ज्ञान भये नहीं होय ॥
जैसे निकसत भानुके तिमिरजाय सब खोय ३४१॥
एकब्रह्मही ब्रह्म है जगत नहीं त्रैकाल ॥
जैसे रूपा सीपमें मृगतृष्णाको ख्याल ॥ ३४२ ॥
ज्यों स्वप्ने परबत लखै जागत जाय नशाय ॥
सांचहोय तौ जायकित रहै न क्यों ठहराय ३४३ ॥
मनोरथ में कोई भूपहो चलै कटक लै साथ ॥
ऐसे कल्पो जगतही खोजे लगै न हाथ ॥ ३४४ ॥
जैसे अहि रसरी बिषे उपजै ठहर बिलाय ॥
जो कोइ देखै निरखिकै भरम सर्प मिटिजाय ३४५॥
ऐसे उपजन ठहरना मिटन जगतका जान ॥
निःकेवल एक ब्रह्म है दूरभये अज्ञान ॥ ३४६ ॥

मैं तूं ना यह जगत ना नहीं ज्ञान अज्ञान ॥
दूजे कूं नहिं ठौर है यह निश्चय करिजान ॥ ३४७ ॥
दूजा ना एको नहीं नहिं बाचक नहिं मौन ॥
ज्ञाता ज्ञान न ज्ञेय ना कहै सुनै तहँ कौन ॥ ३४८ ॥

शिष्यबचन ॥

प्रथम कहा तुम सांख्यही बहुरि कहा बेदान्त ॥
निश्चल मन मेरो भयो भाजो सबही भ्रान्त ३४९ ॥
अरु इक किरपा कीजिये सुनिके मन हुलसाय ॥
श्रवणन कूं सुख होत है आनँद अधिक बढ़ाय ३५० ॥
ब्रह्मज्ञानी कासूं कहैं ब्रह्मदरशी कहदेव ॥
ब्रह्मभोगी हो कौन बिधि ब्रह्मरूप कह भेव ॥ ३५१ ॥

गुरुबचन ॥

ब्रह्मज्ञानी वासों कहै कहैं ब्रह्म का भेद ॥
इन्द्री गुण से परे जो ताको करैं नखेद ॥ ३५२ ॥
ब्रह्मदरशी वह होय जब खुलें ज्ञान के नैन ॥
जिनसूं देखै ब्रह्मकूं सतगुरु जी की सैन ॥ ३५३ ॥
ब्रह्मभोगी होवो चहै सुरत धरै तेहि माहिं ॥
चेतन आवै लीनता ज्ञान ध्यान सुधि नाहिं ॥ ३५४ ॥
ऐसे हो ब्रह्मरूपही लहै परम आनन्द ॥
वाके हांसी सी लगै मुक्ति होन अरुबन्ध ॥ ३५५ ॥

जब वह व्यापक सबन में सब वाही के माहिं ॥
वैर प्रीति वाकेनहीं हरष शोकभी नाहिं ॥ ३५६ ॥
वाको भय व्यापैनहीं शरणलगै नहिंजाय ॥
जन्म मरणके दुखसबै सहजैगये बिराय ॥ ३५७ ॥
अहँकार मिटाआपागया भई आपदानाश ॥
सकल वासना दग्धहो खुली कर्मकीगांस ३५८ ॥
दुई इच्छा जाकेनहीं भई अवस्था येह ॥
आपा उठसबही गया रहासुभाव नदेह ॥ ३५९ ॥
देखन को इन्द्रीसबै विषय न तिनका नेक ॥
सहजरहैं आनन्दमें जिनकोसीधनवेक ॥ ३६० ॥
ब्रह्माकीसी आयु जो इन्दर कासा राज ॥
सर्वसिद्ध अरुसुखस्वरग तिनकेकिसीनकाज ३६१
जग में दीखे मृत्युसे पै वे अमर अछेद ॥
तिनकोतौ व्यापैनहीं पांचतत्त्वका खेद ॥ ३६२ ॥
अग्नि जलायसकैनहीं जल नहिंडोबै ताहि ॥
पवन उड़ायसकैनहीं धरतीढकैन वाहि ॥ ३६३ ॥
पर्वतकोट अरुभीन की ताकोअटक नमूल ॥
जितचाहै तितहीरमैं शस्तरलगै न शूल ॥ ३६४ ॥
मरने से पहिलेमरै ताहि विनाशै कौन ॥
पीसे से कैसे पिसै पानीहोगया लौन ॥ ३६५ ॥

ज्ञान अवस्था यहकही मृत्तक की ज्योंदेख।
चारबरन आश्रमनका कोइनदीखै भेख॥ ३६६।
गुरू शिष्य वाके नहीं साहिबनाहीं दास।
काहूसुखको हर्षना दुखपावै न उदास ॥ ३६७।
कोई चन्दन चरचकरि पूजाकरै अनेक।
वासोंहर्ष न ऊपजे खुशीहोय नहिंतेक॥ ३६८॥
कोई कीचड़ लेपकरि माटी देवै डार॥
वासोंदुख मानों नहीं कोई जावै मार॥ ३६९।

शिष्य बचन॥

चरनदास ऐसेकही सुनहो दीनानाथ॥
मेरेशिरपर नितरहो तुम्हरा सुन्दरहाथ॥ ३७०।
ज्ञान सिद्धता तुमकही दुर्लभ जगके माहिं॥
कोटोंमें कोइहोयगा लाखोंमें कोइनाहिं॥ ३७१॥
कठिन दिशा यह ज्ञानकी दुर्लभ दई दिखाय॥
सुलभकहेकोइऔरविधिजीवमुक्तिहोजाय३७२॥
सतयुग त्रेता के बिषे द्वापरही के माहिं॥
मनुषोंकी बुधिऔरथीबिषयी होतेनाहिं॥ ३७३॥
उनहींसे बन आवती ब्रह्म होनकी चाल।
इन्द्रीपांचौ जीतते तजते माया जाल॥ ३७४
आगे ऋषिमुनि बहुभये राजा तजते राज॥

गुरुसेलेते ज्ञानही करते अपनाकाज ॥ ३७५ ॥
अब वैसे तपसीकहां वैसे बली न बान ॥
देहतजन वैसाकहां जतसतटेकन आन॥ ३७६ ॥
अब तो कलियुगके विषे भयाजगत विपरीति ॥
नीतिहतीसोउठिगई होनेलगीअनीति॥ ३७७ ॥
तुच्छ उमर बुधि तुच्छ है तुच्छ जुइनका ज्ञान ॥
रहनी गहनी तुच्छहैपुष्टभया अभिमान॥ ३७८ ॥
भक्ति करैं लेडिम्भही कथैंजु वाचक ज्ञान ॥
मनबसना फूलैघने नाकोइ हमीसमान॥ ३७९ ॥
आपा थापन बहुकरैं सबसों वाद बिवाद ॥
बाहरसूरत संतकी फँसेजु इन्द्रिन स्वाद॥ ३८० ॥
बाहर कछु अन्तर कछू तनउज्वल मनमैल ॥
बातबनावै जगठगै शिष्टलगावै गैल ॥ ३८१ ॥
मुखमीठे हिरदे कुटिल ऐसे जग के जीव ॥
अहंकार के मिटेबिन कैसे होवै सीव ॥ ३८२ ॥
कैसे होवै ब्रह्मही अहंकार बस येह ॥
ब्रह्मज्ञान मुखसोंकथैं आपहोरहे देह ॥ ३८३ ॥
मैं कहि मनुषन की दशा बहुतनकी यहचाल ॥
सुगमराह बतलाइये पहुंचे होय निहाल॥ ३८४॥
किरपाकरि मोसों कहो मोमन में यह चाह ॥

जन्म मरण जासों मिटै सुगम मुक्ति की राह॥ ३८५॥
जासों औगुण सबमिटैं हरिसों उपजै नेह॥
जगतबासना जायछुट बँधै न अपनीदेह॥ ३८६॥

गुरु बचन॥

जो तुमपूछी सो कही औरकहूं बिधि एक॥
नवोअंग साधतरहै गहैभक्ति की टेक॥ ३८७॥
कियेजु नौधा भक्तिके औगुण सब छुटिजाहिं॥
उपजै हरिकाप्रेमही बँधै न जगके माहिं॥ ३८८॥
प्रेम मिलावै पुरुषसों पुरुष ब्रह्म के रूप॥
ऐसेवीहो मुक्तिही होवै अलख अरूप॥ ३८९॥
ज्यों तलाव को नीरही मिल सरिता के संग॥
नदी मिलै जा सिन्धमें होवैएकहिरंग॥ ३९०॥
घटमिल मठ आकाशमें मठमिल महाअकाश॥
जीवमिलै ईश्वरबिषे ईश्वर ब्रह्मप्रकाश॥ ३९१॥
भक्तिकिये यह गत लहै और उपावन कोय॥
यह पूंजी पलटैनहीं अंतमुक्तिही होय॥ ३९२॥
रहैजु प्रभुके आसरे रखै न आसा आन॥
अनन्यभक्तिनिहकामकरि पावैपदनिर्बान ३९३॥
करते करते भक्ति के कभी भ्रष्ट होजाय॥
फिरउत्तमकुल जन्मले करैभक्तिही आय॥ ३९४॥

एक जन्म कै दूसरे तीन चार कै पांच ॥
अंतमुक्तिहीको लहै भक्तिकिये कहुंसांच ॥ ३९५ ॥
ज्ञान भ्रष्ट के हुये से पड़े नरक में जाय ॥
वाकेपूंजी है नहीं विनशै जन्मैं आय ॥ ३९६ ॥

शिष्य बचन ॥

ज्ञान भ्रष्ट कासों कहैं कहो श्री सुखदेव ॥
ऐसे शिष पूछनकरी याको कहिये भेव ॥ ३९७ ॥

गुरु बचन ॥

समझ कथै जो ज्ञानही चाल चलै अज्ञान ॥
विषय बासना में फँसै ताको भ्रष्टल जान ॥ ३९८ ॥
ताते हरिकी भक्ति को करै यही जो जान ॥
जगसों मनको खैंचकरि प्रभुपदरखैसुजान ३९९ ॥
हिरदे माहीं राखिये चरणकमल को ध्यान ॥
मनहीं मनमें जपकरै और धर्म तजि आन ४०० ॥
साधन की सेवा करै उनको कीजै संग ॥
सतगुरुके शरणै रहै दिन दिन लागै रंग ॥ ४०१ ॥
दयाशील संतोष रखि राखि क्षमा अरु सांच ॥
विषय ओर झांकै नहीं इंद्री रोकै पांच ॥ ४०२ ॥
मनसों रोकै इंद्रियां मनको रोकै बुद्ध ॥
बुधिको हरिके चरणमें होयध्यानजब शुद्ध ४०३ ॥

कभी ध्यान सों छूटकर करने लागै जाप ॥
गुणाबाद कबहूं उमँग गावनलागै आप ४०४ ॥
तनमन हरिकी भेटकर आपा देह उठाय ॥
दासभावजबजानिये चरणकमललिपटाय ४०५ ॥
काहू से राखै नहीं बैर प्रीति को भाय ॥
आगे जो नौधा कही करै ताहि चितलाय ४०६ ॥
बड़भागी वह जानिये हिय में यही धरै ॥
आठपहर साठौघड़ी भक्ति अखंड करै ॥ ४०७ ॥
भक्ति विना चाहै नहीं आठ सिद्ध नौ ऋद्ध ॥
शुभकर्मोंके फल जिते हरिको अरपै बिद्ध ४०८ ॥
हरि बिन और न कामना हरि बिन और न आस ॥
रोम रोम हरिही रटै जबहो पूरा दास ॥ ४०९ ॥
जो करै गुरुकी भक्तिही हरिहू से अधिकाय।
वेगहि ईश्वर रूपहो ब्रह्ममाहिं मिलजाय ४१० ॥

शिष्य बचन ॥

धन्यगुरू धनि ज्ञान तू धनि धनि बचन तुम्हार ॥
मो मनके संदेह जो सबही दिये निवार ॥ ४११ ॥
अब बहुतै आनंद भये गयो तिमिर अज्ञान ॥
मेरे हिरदे में रहै सदा तुम्हारो ध्यान ॥ ४१२ ॥

गुरु वचन ॥

ध्यानकरो जब आयहैं तुम्हरे हिरदे माहिं ॥
चरनदास निश्चय करो तुमसे न्यारो नाहिं ४१३ ॥

शिष्य वचन ॥

भक्तिराज उठिकै जभी दइ परिक्रमा सात ॥
लेआज्ञा बैठे बहुरि फुल्लितहा सब गात ॥४१४॥
फिरकही कहाअस्तुतिकरूंतुम निर्गुणसरगुणरूप ॥
तुम पूरण सर्वज्ञहो तुमहो ब्रह्मस्वरूप ॥ ४१५ ॥
अद्भुत गोष्ठी यह भई तिमिर नशावनहार ॥
रामरूप जनदोऊ पर तन मनडारैवार ॥ ४१६ ॥
यह गोष्ठी जो मैं कही भइ बंशीवट ठाम ॥
रामरूपकी दोउ को बारबार परणाम ॥ ४१७ ॥
धनि वृन्दाबन धनि समय धनि बंशीबट ठौर ॥
भक्ति देन पातकहरणसब तीरथ सिरमौर॥४१८॥
गोष्ठि करतही रहगई घड़ी दोय जब रैन ॥
तब बोले सुखदेवजी मधुर बचन सुखदैन ॥४१९॥
रात कछू नाहीं रही अब ह्वैहै परभात ॥
तुम दिल्लीको जाइयो हमहुं बिदाहोजात॥४२०॥
भक्तिराज जब यह सुनी भरिलाये दोउ नैन ॥
नाहिं सुहाये हियेमें गुरु बिछुरनके बैन ॥४२१ ॥

गद्गद् बाणी होय कर बहुरि कही यह बात ॥
फिर दर्शन कबहोयँगे कब ऐहै वह रात ॥ ४२२ ॥
फिर दर्शन कबहोंगे कौनदेश अस्थान ॥
तुम चरणन में बसतहैं चरणदासके प्रान ४२३ ॥

गुरु बचन ॥

ध्यान माहिं दर्शन सदा तुमको नितहीहोत ॥
तू मोमें मैं तो बिषे ऐसे ओतहिं पोत ॥ ४२४ ॥
जेहि कारण जगके बिषे तुम आये बपुधार ॥
सोईजाय अब कीजिये जीवनको उद्धार ४२५ ॥
अब ताईं तुम यों रहे अब करु ऐसी जाय ॥
जीवनकोउपदेशदे भगवत धर्मचलाय ४२६ ॥
बचन श्रीसुखदेव के चरनदास लिये मान ॥
करी जबै दण्डवतही गुरुभये अन्तरध्यान ४२७ ॥

इति श्रीगुरुभक्तिप्रकाशेस्वामीरामरूपजीकृतश्रीशरणजीत गोष्ठेनतत्त्वज्ञाननिरूपणेषष्ठोविश्रामः ॥ ६ ॥

अथ श्रीमहाराज चरणदास जीको ब्रज ओर सों आवनो दिल्लीको परीक्षितपुरी में रहनो ॥

चौपाई ॥

शीश उठा देखैं ह्वां नाहीं । अचरज देख कुढ़े मनमाहीं ॥ व्याकुल भये बहुत अधिकाई । सो मोपै कछु कह्यो न जाई ॥ ह्वां सों उठ यमुनापै आये । कालीदह के जलसों न्हाये ॥ नित्य नेम कुछ कियो अहारा । दिल्लीओर को गवन बिचारा ॥ मगमें थोड़े दिवसलगाये । आयमात के दर्शन पाये ॥ चरणन ऊपर राख्यो शीशा । कुंजो हित करि दई अशीशा ॥ केते दिवस रहे वह ठांई । ब्रजकी बात करी मनभाई ॥ माता ने सुनि अति सुखपाया । अपने मन आनन्द बढ़ाया ॥ १ ॥

दोहा॥

आयगये दिन बीसमें पहुँचे माता पास॥
माता को परसन्न करि और ठौर कियोबास॥२॥
दूसर का यक बालका छाई मिला जो आय॥
नन्दराम तेहि नामथा लीन्हा चरणलगाय॥३॥
वासे पूंछा कित रहो कहां तुम्हारा बास॥
कौनकाजहमसोंमिले कहा तुम्हारी आस॥४॥
परीक्षित पुरमें मैं रहूं यही मुहल्ले माहिं॥
चाह मोहिं हरिभक्तिकी औरबासना नाहिं॥५॥
महाराज सुनि यों कही धन्य तुम्हारा भाग॥
संस्कार जो भक्तिका हरिओरी का लाग॥६॥
नन्दराम आवनलगा दिनमें दो दो बार॥
आज्ञाले बैठनलगा सोंहीं रहैं निहार॥७॥
एक दिना महराजही बूझन लागे येह॥
का कूचे में रहतहौ कहां तुम्हारो गेह॥८॥
दूसर के कूंचे बिषे रहत तुम्हारा दास॥
दादा हरि परसाद के भवन हमारा बास॥९॥
भक्तिराज फिर यों कही कहूं टहल यक तोहि॥
भाड़े को एक कोठड़ी अबले दीजै मोहि॥१०॥
मोकूं आछी ना लगे बहु मनुषनकी भीड़॥

ध्यान जो करूं इकांतमें मोहिं सुहाय उछीड़ ॥ ११ ॥
नंदराम फिर यों कही सुनो श्रीगुरुदेव ॥
मेरी हवेली के विषे एक कोठड़ी लेव ॥ १२ ॥
भक्तिराज नीकी समझ जाय रहे वहि ठांव ॥
हरिप्रसादके कुटुंब सब आकरिपूजे पांव ॥ १३ ॥
जो कोइ उनपरकष्टहो डारैं ताहि निवारि ॥
उनहूं को निश्चय बड़ा आज्ञा लीनी धारि ॥ १४ ॥
महाराज कोठे विषे ध्यान करैं चितलाय ॥
एकपहर जब दिन रहै बाहर बैठैंआय ॥ १५ ॥

चौपाई ॥

जैसी ब्रज में लीला चीन्ही । ब्रजचरित्रकीपोथी कीन्ही ॥ जो प्रभुने निज धाम दिखायो । सो ह्यां भाषा माहिं बनायो ॥ दो पोथी बहु हितसों साजी । ग्रंथ बीचरहैं शिरै बिराजी ॥ उनको पढ़ै सुनै चितलावै । अमरलोक में बासा पावै ॥ १६ ॥

दोहा ॥

दूसर आतम रामही सहज आय वा ठौर ॥
दिल्लीके बांके हुते बैठे कियो मरोड़ ॥ १७ ॥
दामकुंवर के मित्र थे उनसे पूंछी बात ॥
ये बैठे सो कौनहैं झीने दुबले गात ॥ १८ ॥

दासकुंवर जब यों कही ये हैं पूरे साध ॥
थोड़े दिनोंसे ह्यांरहे इनकी दूसर आदि ॥ १९ ॥
आतमरामा यों सुनी जब जा बैठे पास ॥
बात ठठोली की कही करनेलागे हांस ॥ २० ॥
भक्तिराज फिर यों कही सुन यौवन के जोर ॥
हिंदूहोकी तुरक तुम रहतेहो किसठौर ॥ २१ ॥
घास कि मंडी रहतहूं हिंदू मेरी जात ॥
इनसे तो सम्बंधहै कभी कभी ह्यांआत ॥ २२ ॥
भक्तिराज जब यों कही कंठी तिलक न तेर ॥
रामभजन नहिं करतहो यममारैंगे घेर ॥ २३ ॥
गुरु कंठी देजात हैं यों कहि आतमराम ॥
तोड़धरूं तुलसी बिषे रखूं न एकोथाम ॥ २४ ॥
कंठी बोलै बांध तू तौ बांधूं गलमाहिं ॥
यम दिखलावो तौ डरूं बातों डरपूं नाहिं ॥ २५ ॥
भक्तिराज ने जब सुने वाके ऐसे बैन ॥
तब वासेती यों कही मूंदो दोनों नैन ॥ २६ ॥
मूंदतही दोउ नैन के देखे यम बिकराल ॥
पगबेड़ी गल तौकही डारदिया ततकाल ॥ २७ ॥
खैंचनलागे जब डरा खोलि दियो दृग दोय ॥
चरनों गिर ऐसे कही मैं प्रभुजाना तोय ॥ २८ ॥

मेरे कंठी बांधिये सुनिहो परम दयाल ॥
मंतरदे टीका करो मोको करो निहाल ॥ २९ ॥
यकदिन मेरे घर चलो ह्वां मोहिं शिष्यकरो ॥
जन्म जन्मके भूलकी व्याधा सकलहरो ॥ ३० ॥
भक्तिराज कही करैंगे देखि तुम्हारी रीति ॥
बिनजांचे जो शिषकरै यही बड़ी अनरीति ३१ ॥
करी दण्डवत घर गये आवन लागे नित्त ॥
रातदिना कल ना परै चरणों माहीं चित्त ॥ ३२ ॥
फिर यकदिन ऐसे कही मोको चरण लगाव ॥
चौरासी यमदंड के दुखसों बेगि छुटाव ॥ ३३ ॥
जब वाही के घरगये कंठी बांधी रीझ ॥
आतमरामा शिष्य भये गये प्रेम में भीज॥ ३४ ॥
आतमहीके कुटुंब ने चरण लगाया चित्त ॥
भक्ति राज करने लगे उनसूं बहुते हित्त ॥ ३५ ॥
कभूँरहैं परिक्षतपुरे कबहूं मंडी घास ॥
घासकी मंडी ह्वां हुती दूसरबाड़े पास ॥ ३६ ॥

अथ घासकी मराडी के चरित्र बर्णन ॥

रहते रहते रहगये मंडीही के माहिं ॥
छाई ध्यान करने लगे देखीनीकी ठाहिं ॥ ३७ ॥

चौपाई ॥

फेरि ध्यानमें रहनेलागे। सात पहरपट खुलें न जाके ॥ एकपहर दिन रहै जु जबहीं। बाहर आ-न बिराजैं तबहीं ॥ सतसंगति करिकै सुखलेवैं। आरति पीछे फिर पट देवैं ॥ ऐसी बिधिरहैं छां सुखरासी। परमतत्त्वके सदा बिलासी ॥ दयावं-तदाता उपकारी। जिनके सम अस्तुति अरु गारी ॥ ना कोइ मीता ना कोइ बैरी। तिनके ना कछु मेरी तेरी ॥ भूखा आवै भोजन खावै। नांगे को बस्तर पहिरावै ॥ अरु सबही सों मीठा बोलैं। जिज्ञासू सों चरचा खोलैं ॥ ३८ ॥

दोहा ॥

बादी सों गहैं मौनहीं समझे आगे ज्ञान ॥
संतनसों सन्मुख मिलैं सबको राखैंमान ॥ ३९ ॥

चौपाई ॥

जो कोइ आवै इच्छाधारी । कहै कि मेरी कन्या क्वारी ॥ वाको गुप्तद्रव्य देडारैं । अरु दुखिया को दुःख निवारैं ॥ तनकरि मनकरि दै सुख सबहीं । कडुआ बचन न बोलैं कबहीं ॥ जो जैसी आशाकरि आवै । सो निराश कबहूं नहिं जावै ॥ यकदिन आया नानकपंथी । तोंबा कर में कांधे कंथी ॥ अष्ट अतीत और वह साथा । सबहुंन आय नवाया माथा ॥ भक्तिराज के ढिग जा बैठा । राजस ठाट देखि मन ऐंठा ॥ इतने में यक बनिया आया । पांच रुपैये भेंट चढ़ाया ॥ महाराज ने नाहीं लीन्हे । नानकपंथी नैनन चीन्हे ॥ ४० ॥

दोहा ॥

नानकपंथी यों कही चरनहीदास अतीत ॥
भेंट जु याकी ना लई कहा तुम्हारी रीत ॥ ४१ ॥
उलट कही महाराजही पूजा भेंट न लेत ॥
काहकरैं द्रव्य राखिकै कौनकाज के हेत ॥ ४२ ॥
नानकपंथी जब कही तो कितसों यह ठाट ॥
कै तुम चोरी करतहो कै तुम लूटो बाट ॥ ४३ ॥

कै तुम कछू रसायनी कै कुछ राखो सिद्ध ॥
कै तुम ठगछल करतहो कितसों आवै ऋद्ध४४ ॥
गद्दी तकिये ये बने यह तुम्हरा पहिराव ॥
रूपेकी चौंरी ढुरै ऊँचा सभी बनाव ॥ ४५ ॥
काहू से नहिं लेतहो उलटा करो जु दान ॥
जहां तहां कहें लोगही सुनी जो अपनेकान ४६॥
अब हम देखी नैनहीं भया अधिक संदेह ॥
भगल कछू कै सांचहै यह हमसों कहदेह ॥ ४७ ॥
फेर कही महाराजही पूरे गुरु धरैं हाथ ॥
सबही शक्ति अतीतको ऋद्धि सिद्धिहै साथ॥४८॥
नानकपंथी फिर कही जो तुमको है सिद्ध ॥
तौ हमपै किरपा करो कछू दिखाओ ऋद्ध ॥ ४९ ॥
भक्तिराज तब यों कही कहा दिखाऊं और ॥
उठाय बिछौना देखिये कहा बस्तु यां ठौर ॥५०॥
उठाय बिछौना देखिया लखा द्रव्य का ढेर ॥
नानकपंथी चौंकिया कौन गया ह्यां गेर ॥ ५१ ॥
फिर वाने ऐसे कही जो तांबा भरिजाय ॥
तौ मैं मानूं सांचही सब संदेह बिलाय ॥ ५२ ॥
महाराज फिर यों कही धरि तांबेको ढांक ॥
जासों मिटै संदेह सब खुलै हिये की बांक ॥ ५३॥

धरि तोंबा जबहीं ढका ऊपर राखा हाथ ॥
फिर देखै तो भरगया मुहर रुपैये साथ ॥ ५४ ॥
देखतही अचरज किया पड़ा जो चरनों माहिं ॥
कही कि हम देशों फिरे ऐसा देखा नाहिं ॥ ५५ ॥
भक्तिराज वा द्रव्य को दिया कुयें डलवाय ॥
दोय अशरफ़ी वा दई बिदाकियो फिर ताय॥ ५६॥
हाथजोड़ अस्तुति करी ह्वां थे मनुष्य पचास ॥
सब ऐसे कहनेलगे धन्य चरनही दास ॥ ५७ ॥
तुम्हरीही माया सभी यह जग तुम्हरा खेल ॥
तुम ईश्वर अवतारहो तुमको सभी सुहेल ॥ ५८ ॥
तुमको शक्ति अनंत है तुम्हरे चरित अपार ॥
माया चेरी हुक्ममें आठ सिद्धरहैं द्वार ॥ ५९ ॥
माह महीने मध्य की कहूं और यक बात ॥
पहिरि बसंती बसनही बैठे फुल्लितगात ॥ ६० ॥

चौपाई ॥

एकदिना संन्यासी आया । महाराज का दर्शन पाया ॥ राजस देख बहुत रिसमाना । अपने मनमें डिंभी जाना ॥ तोंबी पानीभर मँगवाई । बहुत राख तामाहिं मिलाई । भक्तिराज के शिरपै डारी । अरु मुख सेती दीनी गारी ॥

नीमा फेंटा शाल भिजाये। महाराज हँसकै हर्षा-
ये॥ और कही बहु किरपा मेली। ऐसी होरी
हमसों खेली॥ फिर उठकै परिकरमा दीनी।
निहुर निहुर दण्डवतैं कीनी॥ जब संन्यासी बहु
खिसियाया। हकधक रहा बोल नहिं आया॥६१॥

दोहा॥

फिर भोजन खिलवाय करि किया बहुतपरसन्न॥
चलतबार चरणन पड़े क्षमावंतहरिजन्न॥६२॥
विदा होय स्तुतिकरी बातकही सब खोल॥
राजसलख परखातुम्हैं देखी क्षमा अतोल॥६३॥
निश्चय विष्णु स्वरूपहै सतगुण विष्णुसमान॥
परमारथ के कारने नरतन धारो आन॥६४॥
बहुत बार ऐसी क्षमा कीनी श्रीमहराज॥
रामरूप जन कहतहै दीरघ क्षमाजहाज॥६५॥
एक बरस वा ठौरही निश्चल राखा बास॥
कोइ कारन ऐसाभया ह्वां सों भयेउदास॥६६॥

अथ गदनपुरे के चरित्र

चौपाई॥

गदन पुरे में बहुरू आये। बसेआय बहुतै

सुखपाये ॥ ह्वां की बिधि ह्वां रहने लागे। ध्यान माहिं वैसेही पागे ॥ बहुत लोग दर्शन को आवैं। महाराज के दर्शनपावैं ॥ एक मुगल था मुहम्मद्बाकर। मनसूरअलीखां का था चाकर ॥ मुल्लाफाकरके बहकाये। चला जु मनमें आट लगाये ॥ सात मुगल सँगलेकरि आया। हांड़ी में आमिष भरलाया ॥ ऊपर चपनी नीकीढांकी। भक्तिराजके आगे राखी ॥ करिसलाम यों बचन सुनाये। सिफत सुनी देखन को आये ॥ महाराज हित करि बैठाये। और कही यामें कहलाये ॥ ६७ ॥

दोहा ॥

मुहमद बाकर यों कही चलतैं लिये मँगाय ॥
यामें पेड़ेदूधके खोलि देव बरताय ॥ ६८ ॥

चौपाई ॥

भक्तिराज कहि योंही भैहै। जो तुम कही सोई ह्वै जैहै ॥ यों कहकरि इक साध उठाया। वासों कही कियो बरताया ॥ जो खोलै तौ पेड़ेपाये। मुगल अचम्भा देख डराये ॥ जभी शिताबी हूये खड़े। महाराज के चरणों पड़े ॥ कही कि हमसों

भई तकसीर। तुमको देखा सांचा पीर ॥ हमको मुल्लाने बहकाये। हांड़ी माहिं मांस भरिलाये ॥ तुम क्रिरपा सों पेड़े भये । हम सबही हैरत में गये ॥ हमजु अजाब बड़ाही लीना। तुमको जो अजमावन कीना ॥ ६९ ॥

दोहा ॥

जितने बैठेहीहुते वाही सभा मँझार ॥
रामरूप चकृतभये सबही दृष्टि निहार ॥ ७० ॥
एक और परचा कहूं सुनतैं होय हुलास ॥
उठे एक दिन शहरको संगथा आतमदास ॥ ७१ ॥

चौपाई ॥

सहज तमाशा देखत डोलैं। काहू ते कुछ काम न खोलैं ॥ आनिकसे जुमामसजिद पासा। संगहुता सो बोला दासा ॥ सीढ़ी ऊपर बैठ गुसाईं। बहुत फिरे टुक ह्यां समताईं ॥ हुता मीत यक तुरक फकीरा। सहजैं आया उनके तीरा ॥ वाको आदर करि बैठाया। ब्रह्मज्ञान का बचन चलाया ॥ चरचा करत बाद बहुपड़े। तुरकआय बहुतै जहँ खड़े ॥ काफर काफर कहने लागे। सरमद को माराथा आगे ॥ कहा कि तुम्हरे टुकड़े

करिहैं । सरमद पास तुम्हीको धरि हैं ॥ ७२ ॥

दोहा ॥

महाराज कहिको धरै मारनवाला कौन ॥
आप मरै मारैं वही और बतावै जौन ॥ ७३ ॥

चौपाई ॥

तुरकों कहा यकीन तुम्हारा । तो अब लीजै वार हमारा ॥ यों कहिके तरवार चलाई । महाराजके शीश लगाई ॥ दूजा तेगा कांधे मारा । नेक न लागी दोउकी धारा ॥ एक कहा कछु पगड़ी माहीं । ताते घाव लगाहै नाहीं ॥ तब बरछी सों पागउतारी । तीजे फेर शीशपरमारी ॥ तेग टूट दो टुकड़े भई । अचरज लीला जात न कही ॥ मुसलमान सब चरणोंपड़े । जेते तुरक हुते ह्वां खड़े ॥ गदनपुरे महराजा धाये । बहुत लोग सँगलागे आये ॥ ७४ ॥

दोहा ॥

ब्रह्मरूपही होगये ज्ञान दिशा लई धारि ॥
जिनकी देही नूरकी कौनसकै जबमारि ॥ ७५ ॥
अखै तीजका दिनहुता मुहमदशाह का राज ॥
रामरूपकहै जानिलो जब यह हूआकाज॥७६॥

अथ पानीपतका जाना ॥

चौपाई ॥

अरु छोटे बहुपरचे भये। सो मैंने वै नाहीं कहे ॥ महाराज फिर भये उदासा। जाय किया पानीपत बासा ॥ राजादों की बैठक माहीं। रहेमहीने छह वह ठाईं ॥ पांचही पहर ध्यान ह्वां करते। तीन पहर बाहर ही रहते ॥ बहुतक नर दर्शन को आवैं। चरचा सुनि बहुतै सुख पावैं ॥ बहुत दान महराजा करैं। मन में लोग भरम बहु धरैं ॥ काहूकी पूजा नहिं लेवैं। इतना दान कहां से देवैं ॥ अरु अपना जो खरच चलावै। ये तो द्रव्य कहां सूं आवै ॥ ७७ ॥

दोहा ॥

चरणदास गुरु यह लिखी अंतरयामी लाल ॥
चेटक ह्वां जब दरबका परगट कीन्हाख्याल॥७८॥

चौपाई ॥

सिद्धहुती सो परगट कीन्हीं। ह्वांके बहु मनुषों ने चीन्हीं ॥ एक दिना राघड अभिमानी। इन

सूं दुंदकरन की ठानी ॥ कहा कि सिद्धि तुम्हारे पासा । यां का हमें दिखाव तमासा ॥ नातर तुम्हैं कीमिया आवे । सब सूं जाका भेद छिपावै॥ कै कुछ खेल भूतका आवे । जा विद्या सो द्रव्य मंगावै ॥ महाराज कही सुनौ अहूठ । जादू और कीमियां झूठ॥ जो कोइ इनका करे तलाश। पीछै झूठी होवे आश ॥ यों कहिकै कहा बधना लावो । तामें पानी भर मंगवावो ॥ ७९ ॥

दोहा ॥

यह सुन बेगी लाय करि धरा सभा के माहिं ॥
भक्तिराज कही ढांकयो खुलाजु राखो नाहिं ॥ ८० ॥
महाराज गे ध्यान में बीती घड़ी जु दोय ॥
फेरकही यां खोलिद्यो देखो क्या कुछहोय॥ ८१ ॥
जो खोलैं तौ भरगया करुवा सबही दर्ब ॥
देख भये हैरान हीं चरणपड़े वे सर्ब ॥ ८२ ॥
देख भये आधीन हीं जिन्हौं बजाया गाल ॥
भक्तिराज डलवादिया कूये में वह माल ॥ ८३ ॥
यह सुनि एक उमरावही चाहा दर्शन लैन ॥
साकरखां उस नावथा छिपकै आया रैन ॥ ८४ ॥
दर्शनले मिल बात करि किया प्रीतिका भाव ॥

चरणों शिरधरियों कही, हजरत हमरे आव ॥८५॥

चौपाई ॥

महाराज कहि सहजै ऐहैं । उठे सैरकूं ह्वां ऐजैहैं ॥ एक दिना वाके घरगये । उनहूं द्वारे सूं आलये ॥ मसनद ऊपरले बैठाया । अपने करसूं चमर ढुराया ॥ भक्तिराज कहि बैठो भाई । तुम्हरी प्रीति अधिक अधिकाई ॥ ८६ ॥

दोहा ॥

बैठ अदब सूं यों कहा कृपा करी जो आय ॥
दस्तगैब तुमपै सुना हमकूं देहु दिखाय ॥ ८७॥
महाराजने यों कही मटका लावो एक ॥
पानी सूं भरवाय द्यो खुला न राखो तेक ॥८८॥

चौपाई ॥

साकरखांने चावसूं कीन्हा । मँगाय माठसोहीं धरिदीन्हा ॥ भक्तिराज गये ध्यान मंझारैं । वै सब मटका ओर निहारैं ॥ घड़ी दोय ध्यान में रहा । खोली दृष्टि बहुरियों कहा ॥ मटके का बस्तर सरकावो । यामें क्या है हमें दिखावो॥८९॥

दोहा ॥

उठिबस्तर सरकाय कै ढकना डाला खोल ॥
देखतही चकृत भया मुखेन आयाबोल ॥९०॥

चौपाई ॥

महाराज कही आगे लावो । यामैं क्या है हमैं दिखावो ॥ चार मनुष गहि मटका लाये । और सभी देखन झुकि आये ॥ मुहर रुपैया मिले जु होई । जिन देखा चकृत भया सोई ॥ फिर वाकूं कूये डलवाया । साकरखां अचरज में आया ॥ कही कि ये सांचे करतारा । इनका कोई न पावै पारा ॥ भक्तिराज उठ घरकूं धाये । साकरखां द्वार लौं आये ॥ होनेलगी भीड़ जनभारा ॥ नरसिंह गढ़ कूं गवन विचारा । नरसिंहगढ़ भींना ठहराये ॥ करनाल नगर में उलटे आये । दोय आदमी हीथे साथा ॥ था निशान एकके हाथा । एक टहल में निशि दिन रहता ॥ जो कुछ कहते सो वह करता । कछू सवारी संग नहिं लीनी । जब चाही जब भाड़े कीनी । दिल्ली ओर की मन में आई । चलनेकारणसुरति उठाई ॥९१॥

अथ करनाल सूं आवने के चरित्र॥

दोहा॥

ह्वांके लोगन यों कही सुनों हमारी बात॥
बहुत काफ़िला होय जब जइयो उनके साथ॥९२॥

चौपाई॥

बहुत फिसाद राहके माहीं। बीसतीस पहुंचतहैं नाहीं॥ भक्तिराज कही अबही जैहैं। देखैं धाड़ी कहा करैंहैं॥ जबहीं टट्टू भाड़े कीन्हा। अरु वा सूं ऐसे कहि दीन्हा॥ टट्टूजाय उलहना दीजो। दसका होय तो बारह लीजो॥९३॥

दोहा॥

टट्टूही पै चढ़ि चले आगे किया निशान॥
कछू बटाऊ औरथे संग मिले वे आन॥९४॥
सबही को धीरज दई भली करैंगे राम॥
आनँद सूं आवो चलें हिरदय राखो नाम॥९५॥
जबआये अधबीच में धाड़ी लखे पचास॥
सबैसंग डरपन लगो तजि बचनेकी आस॥९६॥

सब को व्याकुल देखिकै बोले श्री महराज ॥
तुम झंडेके साथ हो क्योंबिगड़ैंगेकाज ॥ ९७ ॥

चौपाई ॥

तुम रहोह्यां मैं आगे जाऊं। उन से ज्वाब स्वाल करिआऊं ॥ यह कहिकै टट्टू दौराया। और कूकिके वचन सुनाया। कही कि तुम मत आगे आवो ॥ मन में है सो हमैं सुनावो ॥ धाड़ी कही तुम्है नहिंलूटैं। संगतुम्हारे ये नाहिं छूटैं ॥ सब के शस्तर बस्तर लेहैं। अतीत जानि तोहिं जानिदेहैं ॥ महाराज कहि सुनो अनारी। ये सब लागे शरण हमारी ॥ इनको नहीं लूटने देहौं। तुम को भूमै मारि गिरैहौं ॥ यह सुनिकै सबही वै धारी। मनहीं मन गुस्सा किया भारी ॥ और कही तुम हमैं डेरावो। करामात है तौ दिखलावो ॥ यह कहिकरि घोड़ा दौड़ाया। भक्तिराज के सन्मुख आया ॥ ९८ ॥

दोहा ॥

बढ़िकै आया एक जो घोड़ा गिरा सवार ॥
औरचला एक सेल गहि पकड़ा दूजीबार॥९९॥
कांपि डरपि उतरे सबै जोड़िलिये दोउ हाथ ॥

शरणशरण कहनेलगे चरणनवायो माथ॥१००॥
और कही जी दान द्यो बकसो श्री महराज॥
इनदोनों जैसाकिया बदला पायाआज॥ १०१॥
श्रीमहराज दयाल हो बकसदिये ततकाल॥
इनदोनोंको लेगया घोड़ोंऊपर डाल॥ १०२॥
सबने सौगंद खायकै यही जुमानी आनि॥
जो आवै श्रीतिलकका लूटैनापहिचानि॥१०३॥
देख संग चकृतभया आयो प्रभु के पास॥
बोलउठे ऐसे सभी जैजै श्रीचरणदास॥ १०४॥
ह्वांसों चलिआ नगर में पानीपत के माहिं॥
रामरूप जन रहतहैं उनचरणनकी छांहिं॥१०५॥
जब सों जग में परगटे परमारथही कीन॥
बहुतजीव निस्तारिया जो कोइ देखादीन॥१०६॥

अथ फिरदिल्लीको आवनोघास की मंडी दसबरसरहनो॥

दोहा॥

पानीपत थोड़ाठहर चले श्रीचरनदास॥
आये दिल्लीशहर में रहेजु मंडीघास॥ १०७॥

दो बीसी की उमरथी फिर आये वा ठौर ॥
ध्यानमाहिं रहनेलगे वाही विधि निशिभोर १०८॥
चारघड़ी जब दिनरहै निकसैं दरशन देन ॥
जो कोइनर चरचाकरै कहैं सुहाते बैन ॥ १०९ ॥

चौपाई ॥

बहुत मनुष देखन को आवैं । दर्शनपाय अधिक सुखपावैं ॥ चहुंदिशि महिमा फैलनलागी । दूर दूर गइबात सुभागी ॥ जैपुर में जयसिंह सवाई । इनकी चरचा जहां चलाई ॥ क्रांथा सुक्खानन्द खवासा । रहता था राजासुत पासा ॥ सो सुतरहै क़ैद के ठाऊं । वाका ईश्वरी सिंह था नाऊं ॥ सुखानन्द ने वाके आगे । भक्तिराज के यशकहे जाके ॥ ईश्वरी सिंह सुनिकै हरषायो । मन में नेह अधिक उपजायो ॥ सुखानन्द सों मसलहत कीनी ॥ लिख चिट्ठी वाकेकर दीनी ॥ ११० ॥

दोहा ॥

वा खवास सों योंकही चिट्ठीबेग पढ़ाव ॥
भक्तिराज के पाससों याकोज्वाब मँगाव ॥ १११ ॥

चिट्ठी कासिद हाथदे पठयो दिल्ली ठाहिं॥
आयो पायो चरणलगि चिट्ठीकरदई माहिं११२॥
चिट्ठी में येही लिखा मैं मन सों भयादास॥
परमेश्वर वहदिनकरे दर्शनकरूं हुलास॥ ११३॥
भक्तिराज बदलेलिखी तामें बहुत अशीस॥
तोकों अपना जानिकै जैपुरकाकियाईश॥११४॥
टीके कारण आयहों बादशाह के पास॥
तबतुम दर्शन पायहो यही जुराखो आस॥११५॥
चिट्ठी ले कासिदगया पहुंचा इश्वरी सिंह॥
खोलिपढ़ी दंडवतकरि खुशीभया सबअंग११६॥
दोय महीने बीतिकै जयसिंह का भयाकाल॥
ईश्वरीसिंहको राजद्दी सबनदियाततकाल११७॥
वेगही टीके वास्ते आयो दिल्लीमाहिं॥
दर्शनको बहुतैचह्यो दर्शन दीन्हेनाहिं॥ ११८॥
मंतर लिखभेजा उसै कंठी अरु परसाद॥
सुखानन्दके हाथही इकदिया अपनासाध ११९॥
राजतिलक हजरतदिया सिरोपाव गजदीन॥
दीन्हे और मरातिबे कहीकिराजाकीन॥१२०॥
आये अपने पुरा में भई मुबारकबाद॥
वही समय महाराजका वहींबुलाया साध १२१॥

पूरनचंद्र सोंयों कही कीजे कछू उपाव ॥
हमजैहैं अबदेश को दर्शन मोहिं दिखाव ॥१२२॥
सुखानंद को साथले पूरनचंद जब आय ॥
ईश्वरी सिंह के प्रीति की निश्चयदई सुनाय १२३॥
भक्तिराज उत्तर दियो ह्यांदर्शन यों नाहिं ॥
एक समयमेंहोहिंगे दर्शन जयपुरमाहिं ॥१२४॥
राजाजी सों जाकह्यो वचन न होय अबूठ ॥
ह्वांई दर्शन होयगा साध न बोलै भूठ ॥ १२५ ॥
सुखानंद ने जाकही पिरथीपति सों बात ॥
अबदर्शन की बहुकही उनकोनाहिंसुहात १२६॥
अरु स्वामीजी योंकही राजा सों कहोजाय ॥
निश्चय दर्शन देहिंगे जयपुरमाहीं आय १२७॥
राजा सुनि निश्चय करी मनमें राखी आस ॥
मुखसेती ऐसे कही वे ईश्वर मैं दास ॥ १२८ ॥
बादशाह सों हुक्म ले बिदाहोय दलसाज ॥
राजा चालेदेश को पहुँचे अपने राज ॥ १२९ ॥
डेढ़ बरस पीछे गये पूरन चंद नँदराम ॥
राजा बहुतै हित कियो राखो अपने धाम ॥१३०॥
अरु उनसों ऐसे कही स्वामी आये नाहिं ॥
हमसों वचन किये हुते आऊं जैपुरमाहिं ॥१३१॥

चिट्ठी बहुत पठाइया तुमसे पहले मीत॥
ख्वाबमांहिं आयनलिखेहमसों नाहीं प्रीत॥१३२॥
मेरे उन बिन कुछनहीं लोक और परलोक॥
हिरदयमें नितरहत हैदर्शनहीका शोक॥१३३॥
मैंहूं लिखूं तुमहूं लिखो विनती विरह दिखाय॥
एक बार गुरुदेवजी दर्शनदीजै आय॥१३४॥
दोनों मिल पत्री लिखी ऐसे कैयक बार॥
बीतगये षट मासयों जब टुक करी सँभार॥१३५॥
ध्यानमांहिं बैठेहुते अर्धरात्रि खुशहाल॥
सुरति चलाई जेनगर दर्श दियोततकाल॥१३६॥
राजा बैठे पलँग पर नारीही के साथ॥
सोहीं जायठाढ़े भये आशा लीये हाथ॥१३७॥
चौंककही तुमकौनहो आये कौनी राह॥
भक्तिराजकही जानिलो आयेतुम्हरीचाह॥१३८॥
सुनि कछु आई चेतसी उठिगिरे चरणोंजाय॥
रानीउठसकुचीघनी घूंघट किया बनाय॥१३९॥
भक्तिराज बैठे जभी राजा जोड़े हाथ॥
कहीकि मैंजानी हिये खोल कहो अबनाथ॥१४०॥
भक्तिराजहंसिकै कही चरनदास ममनांव॥
प्रीतितुम्हारीअधिकलखिहम आयेयाठांव १४१॥

यह सुन राजा अतिहुलस अस्तुतिकरी संभार ॥
दया करी मो दीनपै तुमईश्वर औतार ॥१४२॥
रानी सेती यों कही सकुच न करि ह्यांआव ॥
दर्शन लेदंडवत करिफिरि पड़दे में जाव ॥१४३॥
पूरन चंद अरु सुखानंद नंदराम लिये बुलाय ॥
राजा इनपै हित कियो दर्शनदियोदिखाय १४४॥
इन तीनों से योंकही भक्तिराजने खोल ॥
जोराजासूं कहीथी हम किये पूरेबोल ॥१४५॥
तीनों ने अस्तुति करी हाथ जोरि शिरनाय ॥
वचन तुम्हारे अटलहैं खाली कैसे जाय ॥१४६॥
औतारी सबसों कही भेद न जाहर होय ॥
मेरो ह्यांको आवनो बाहर सुनैन कोय ॥ १४७॥
राजा ओरी देखिकरि बोले भक्तिहीराज ॥
ये तीनों हैं कामके इनसों लीजै काज ॥ १४८॥
दिल्ली पूरनचंद को सुखानंद को पास ॥
नंदरामकोदीजिये नीकी खिदमतजास॥१४९॥
ईश्वरी सिंह लई धारिकै सतगुरु जी कीबात ॥
तीनों कोरुखसत किया एक पहर रहेरात ॥१५०॥
राजा को उपदेश करि और बतायो ध्यान ॥
जभी ध्यान करनेलगो ये मै अंतर ध्यान॥१५१॥

आये अपने भवनमें ध्यान करनकी ठौर॥
बाहर निकसे न्हानकै एतेमें भया भोर॥ १५२॥
महाराज को सहल है ऐसी ऐसी बात॥
वे ईश्वर सर्वज्ञहैं महिमा कही न जात॥ १५३॥
जो चाहैं सोई करैं तिनमें शक्ति अपार॥
भक्तिराजके गुणन पै रामरूप बलिहार॥१५४॥
दूजा अचरज कहतहूं बहुतन में बिख्यात॥
रामरूप निज दासको लीला अधिक सुहात १५५॥
सोमवारी मावस हुती जेठ महीने माहिं॥
धारे चार सरूपही तिनके छाया नाहिं॥ १५६॥
एक तो हापड़ बाग में तम्बूही के माहिं।
दूसर राय सुजान था हाकिम वाही ठाहिं॥ १५७॥
वाहीके तम्बूबिषे पलँग बिछाथा एक॥
तापरि बैठा देखके अचरज किया अनेक॥१५८॥
दूसर ब्राह्मण अरु सबै दरशन कीने धाय॥
दूसर रामप्रसाद ने आंब दिया इकलाय॥१५९॥
पूग्घाट परि दूसरा गंगाके अस्थान॥
वाही दिन महाराज ने ह्वां कीन्हा अस्नान १६०॥
तीजा धरा जु श्यामली सेवकभवन मँझाय॥
उनकी पूरी आशाही भोजन कियो अघाय॥१६१॥

दिल्ली के दिल्ली बिषे लोगन दर्शनकीन ॥
अरु दिन निकसे एक बर वादिन बिरियां तीन १६२॥
प्रातसमय सीधे दिये दूजे भोजन खान ॥
तीजें वाही समयमें थी हमेशाकी बान ॥ १६३ ॥
हापड़ही के बाग में भेंट चढ़ा था आंब ॥
सो ल्या नृपीको दिया बेटी आतमराम ॥ १६४ ॥
अचरज देखि सुजान ने भेजा ऊंट सवार ॥
चरणदास को देखिया अपने नैन निहार १६५ ॥
लोगन सेती पूछियो हैं अपने अस्थान ॥
कै कहीं बाहरको गये गंगकरन अस्नान ॥ १६६ ॥
आ देखा मजलिस बिषे बैठे हैं महराज ॥
उलटा गया सुजानपै देख पूंछ सबकाज ॥ १६७ ॥
ऊंटवाल जो कहगया फूट गई ह्यां बात ॥
पाछे आये लोग बहु उन्हों करी बिख्यात ॥ १६८ ॥
श्रीकृष्ण भगवान् ज्यों धारे रूप अनंत ॥
सोई चरित सतगुरु कियो महिमा कोन हिं अंत १६९ ॥
जहां तहां दर्शन दिये भक्तन को हित जान ॥
और बहुत लीला करी चरणदास भगवान १७० ॥

चौपाई ॥

एक समय कुंजो बड़भागी। पुत्तर सोंयों

कहने लागी ॥ जैस गंगा को तुम जावो। ऐसे कबहूं हमैं न्हवावो ॥ महाराज बोले करजोरी। पूरी आशा करिहौं तोरी ॥ आज दशहरा दिन पैंतीसा। न्हान कातिकी बिस्वेबीसा ॥ पूरणमासी को यों करिहौं। तुम्हरी आज्ञा शिर पर धरिहौं ॥ यों सुनकर माई चुपरही। उरैबात क्वां की नहिं कही ॥ बीतत बीतत पूनों आई। कातिक सुदी बहुत मनभाई ॥ पुत्तरको ढिग लिया बुलाई। भोरही को यह बात सुनाई ॥ १७१ ॥

दोहा ॥

पूरणमासी आज है परवी का दिन जान ॥
हमको अब करवाइये गंग माहिंअस्नान॥१७२॥
खुशी होय दोनों जभी गये भवन के माहिं ॥
आगे सों पट देलिये खुले जो राखे नाहिं॥१७३॥

चौपाई ॥

माता सों आंखैं मिचवाई। गंगा लेगये ईश्वरताई ॥ बहुत मिले जहँ लोग लुगाई। कहो कि माता तुम कब आई ॥ कबकी चली कौनसँग साथा। उतरी कहां कहो यह बाता ॥ हँसदीना

मुख कछू न भाखी। अचरज लीला मन में राखी॥ करि करि न्हान दान कछुदीना। फिर मा बेटे भोजन कीना॥ दिनबीता फिर संध्या आई। बसे सुरसरी पर जो ह्वांई॥ अर्द्धराति न्हा नैन मुँदाये। ज्यों करिगये वहीं जितआ-ये॥ खोल भवन फिर बाहर निकसे। भोरभये जब सूरज बिकसे॥ १७४॥

दोहा॥

आठ पहर अचरज रहा निकसे दूजेभोर॥
रामरूप उसमातने लखा अचम्भाजोर॥१७५॥
एक दिना मनमें उठी रसूं महीने दोय॥
ह्या उदासजी रहतहैं बाहर खुशी जु होय॥१७६॥
रमत रमत गये सहजही शाहजहांपुर माहिं॥
ह्वां सेवक रहतेहुते उठने दीना नाहिं॥१७७॥
साधु बहुतही संगते रहैं जु उनके बीच॥
अपनेअमृतबचनकहि सबको राखैंसींच॥१७८॥
रैनिसमय मनमें उठी मात मिलन की चीत॥
जो सोये कोठेबिषे पटदीने रनजीत॥ १७९॥
डेढ़पहर गइ राति जब किया जो ह्वांसों ध्यान॥
दिल्लीहीके बीचमें दरशान दीने आन॥१८०॥

एक पहर को जो निकट सबको दरशन दीन ॥
डेढ़पहररहि रातिजब और सुरत योंकीन १८१॥
सहजो बाई निकट है तासों भी मिलजावँ ॥
यहकहिभये अलोपहीं पहुँचे वाके ठावँ ॥ १८२ ॥
सहजो बाई ध्यानमें बैठी थी चित लाय ॥
उहीं पलकैं खुलगईं उठी देखिघबराय॥ १८३ ॥
चरणों ऊपर हाथ धरि और कही महराज ॥
तुमतौ रामतकोगये ह्यां कितआयेआज॥१८४॥
महाराज कहि सहजही तुमको स्वपना होय ॥
थोड़ा प्यावो नीरही और सुनै नाहिं कोय॥१८५॥
भूवा जप करती हुती कोठेही के पास ॥
भक्तिराज का आवना परगट देखाजास ॥१८६॥
पानी पीकरि यों कही मैं आयाहूं गोप ॥
बाजूबकसावाहिंका फिर भयेह्वाई लोप ॥ १८७॥
भोरभये बिखरी घनी सबी हवेली माहिं ॥
नर नारी पछताइया दरशन पायेनाहिं॥ १८८ ॥
प्रकटे जा साधन बिषे किन्हीं न पायो भेद ॥
कही किबाजू कहांहैं इतना कियानिषेध॥१८९॥
रामतकरि दिल्ली विषे आये निज अस्थान ॥
वैसेही रहनेलगे करने लागे ध्यान ॥ १९० ॥

गोविंद् की गति को लखै लीलाशक्ति अनेक ॥
भक्तिराजपरगट भये भक्ति बढ़ावन टेक ॥ १९१ ॥
एक दिन प्रीक्षत पुरे में आये मिलने काज ॥
वैठेथे ह्यां पलँग परिहाथों मिहँदी साथ॥ १९२ ॥
वाही दिन अचरज भया घासकी मण्डी ठाहिं ॥
तिषणे सों बालक गिरालीना हाथों माहिं॥१९३ ॥
सबनै देखने नहीं मिहँदी हीके हाथ ॥
कही बालक कही आपथे यह अचरजकी काथ॥१९४॥
ह्यां मिहँदी विगड़ी सबै ह्यां लगी वालक देह ॥
जोजो ढिग वैठेहुते गया सबन सन्देह॥१९५॥
जब सबही पूछनलगे महाराज सों बात ॥
कैसेमिहँदी विगड़िया क्यों किये ऊंचेहाथ॥१९६॥
दूसर राजा रामही दौलत वाका पूत ॥
तिषणेसों गिरतेलिया बिगड़ी मिहदीसूत॥१९७॥
घास कि मण्डी के मनुष प्रिक्षतपुर के जानि ॥
सबहीमिल अस्तुतिकरीकही कि यहभगवान १९८॥
भक्तन की रक्षाकरन पापन के क्षयकाज ॥
रामरूप कलिकाल में प्रकटेहैं महराज ॥ १९९ ॥
आंवल का इकपेड़ था अस्थलही के माहिं ॥
बैठेथे लोगनसहित वही बृक्षकी छाहिं ॥ २०० ॥

योगी विद्यानाथही आया दरशन काज॥
आगे ता मिलतरहुआ प्यारकिया महराज॥२०१॥
योगी विनती करिकही हमको खेल दिखाव॥
बासनमें दर्वदेखिया अबआंवल टपकाव॥२०२॥
भक्तिराज हँस यों कही देखि बृक्षको नाथ॥
मुहरैही टपकनलगी योगीनायो माथ॥२०३॥
फूल अशर्फी हो गिरे यह इक अद्भुत बात॥
योगी अरुह्वां मनुषथे सबने जोरेहाथ॥२०४॥
मुहरैं सभी बटोरिकै डालीं कूयें बीच॥
लोगनको अचरजभयो गयेनाथजीरीझ॥२०५॥
समरथ चाहै सो करै इन सों सब कुछ होय॥
चरणदास औतारका भेद न जानै कोय॥२०६॥

चौपाई॥

औतारी प्रभु बड़े खिलारी। जिनकी लीला लागे प्यारी॥ रहैं घास की मंडी माहीं। पूजा भेंट कछू लें नाहीं॥ काहू के परसाद न जेवैं। उलटा लोगन को कुछदेवैं॥ निशिदिन ध्यान करन सों हेता। रहैं अकेले तत के बेता॥ दूजे को राखैं नहिं पासा॥ अरुकाहूसों रखैं न आसा॥ उपदेश करनको मननहिं धरैं। मनसों शिष्यचे-

ला नहिं करैं ॥ ध्यानमाहिं इकदिनथे राते। परमेश्वरके रसमें माते ॥ तवहीं राधारमण गुसाईं। दरशन दिये ध्यानके माईं ॥ आज्ञादई सुनो चरणदासा। अव तुम करो भक्ति परकासा॥ २०७॥

दोहा ॥

जिस कारण तुम आइया सो नहिं कीया काम ॥
छोड़ ध्यान ऐसा करो जपो जपावो नाम॥२०८॥

चौपाई ॥

छोड़िध्यान अब ऐसाकीजै। मनुषोंको उपदेशजुदीजै ॥ भक्तिराज जब आज्ञामानी। अपने मनमें निश्चय ठानी ॥ तीस बरस उपदेश जुकरिहूं। पाछे देह तजन चितधरिहूं ॥ खोलि आंख जब यही बिचारी ॥ उपदेश करन धारणाधारी ॥ शिष चेलाथे लिये बुलाई। ये बातैं सब उन्हैं सुनाई ॥ दरब शक्ति का संकल्प लीना। चेटक और सभी तजि दीना ॥ अपना आया दिया छिपाय। मनुषों माहिं मनुष दरशाय ॥ उमर पचास बरस भई तबहीं। जबके समाचार ये सबहीं ॥ २०९ ॥

दोहा ॥

चमत्कार ऋधिसिद्धि को तज दीनो इकबार ॥
करनलगे उपदेशही नवधाभक्ति सँभार ॥२१०॥
पानीपतसूं आयकै घासकी मण्डी ठौर ॥
महाराज चरणदासजी रहे बरसदश और २११॥
पचास बरसलौं जो किया सो कुछ दिया सुनाय॥
रामरूप अब कहत है आगे की सब गाय २१२॥

इति श्रीगुरुभक्तिप्रकाशेस्वामीरामरूपजीकृतमीरुतपुरेघासकी
मण्डीकेचरित्रसप्तोविश्राम ॥ ७ ॥
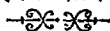
अथ पुराने शहरके चरित्र ॥

चौपाई ॥

ह्वांसूं उठरहे शहर पुरानें। तेलीवाड़ा सबको-
इजानें ॥ सुख सूं रहैं करैं उपदेशा । चरचा चा-
ली देश बिदेशा ॥ हरिचरचारहै ह्यां दिन सारे।
होय आरती सांझ सवारे ॥ कबहूं साधु बिष्णु
पदगावें । कथाकीर्तनरंग बढ़ावैं ॥ १ ॥

दोहा ॥

आसौज उतर कातिक लगा अचरजएक निहार ॥
ब्राह्मण आये दो जहां चरचा करन बिचार ॥ २॥

चौपाई ॥

जबहिं एक अचरज भयो भारा। सो बहुलोगन नैन निहारा॥ महाराज थे अस्थल माहीं। पण्डित द्वै आये तिहिठाहीं॥ करि परणाम जो बैठे पासा। भक्तिराजने दियेनिवासा॥ दर्शन करि सुख में अतिपागे। तबहीं चरचा करने लागे॥ महाराज ने यहकहिबाता। जो चाहै सो करै विधाता॥ चाहैनभ में बागलगावै। बिनधरती जलको ठहरावै॥ चाहै रंकको राजदिलावै। भूपहि चहै भीख मँगवावै॥ हरेवृक्ष को बेग सुखावै॥ सूखी टहनी कै फललावै॥ ३॥

दोहा॥

हरि हरिजन सब कुछ करैं अनहोनी भी होय॥
सर्व्वगुणी समरत्थहैं पार न पावै कोय॥ ४॥

चौपाई॥

फिरबोले वे पंडितदोऊ। तुमकहो जैसे कबहुं न होऊ॥ जो कुछ होय समय परहोई॥ बिना समय करि सकै न कोई॥ यह तो बात हिये नहिं आनै। बिन देखे परतीत न मानै॥ सूखी लकड़ी तूतकी लीनी। तबै जिमीं में गाड़ जु

दीनी ॥ जो तुम करता सांच बतावो । तौ याके सहतूत लगावो ॥ जब बोले गुरुदेव गुसाईं । ऐसेही अब करिहैं साईं ॥ जल मँगाय चरणामृत कीनो । वा टहनी की जड़ में दीनो ॥ ५ ॥

दोहा ॥

चरणाम्रत के देतही हरी भई ततकाल ॥
पहर चारके वीचमें ।निकसे पात बिशाल ॥ ६ ॥

चौपाई ॥

दिवस दूसरे फल दरशाये । सुनि वे पंडित देखन आये ॥ बहुत लोग देखन को धाये । बहुतों ने सहतूत जुखाये ॥ तब सबही बोले वह बारा । चरणदासजी प्रभु अवतारा ॥ जो कोइ इनको दरशन पावै । परमधाम को निश्चय जावै ॥ शोच समझ पण्डित फिर कहिया । तुम्हरी लीला अद्भुत लहिया ॥ सतगुरु हो तुम पर उपकारी । हम कूं शिष कीजै यहिवारी ॥ महाराज जब किरपा कीनी । उनके कंठी बांध जु दीनी ॥ शिष्य होय फुल्लत बहु भये । रामरूप कहै घर कूं गये ॥ ७ ॥

दोहा ॥

अनहोनी अनसमय परि अन ऋतुहीके माहिं ॥
अजब खेल सतगुरु कियो तेलीवाड़े ठाहिं ॥ ८ ॥
चरणदास करता पुरुष चाहै सो करिलेव ॥
माया के अज्ञान सूं कोइ न जानत भेव ॥ ९ ॥
तेलीवाड़े में रहे एक बरस थिर होय ॥
फिर पहाड़गंज आइया साबन मंडी जोय ॥ १० ॥

अथ नई बस्ती के चरित्र ॥

चौपाई ॥

साबन मंडी में नई बस्ती । ह्वांकी भूमि अधिकही लस्ती ॥ सुन्दर अस्थल एक बनाया । बृक्ष लगाये अतिछबि छाया ॥ ललित सोहना सुखका पुंज । मानौं बृन्दाबन की कुंज ॥ महाराज तेहि माहिं बिराजैं । नवधा भक्ति रहै नित साजैं ॥ कथा कीरतन चरचा होई । दरशन कूं आवैं सब कोई ॥ होहिं जागरण शोभा भारी । थकित होय सुन संगत सारी ॥ बानी अमृतकी छक छावै । उपजे प्रेम जगत बिसरावै ॥ ऐसी

सतसंगत के माहीं। जो आवै बन्धन कट जाहीं॥ ११॥ दोहा॥

हरि चरचा जहँ नित रहै नितही भक्ति बिलास॥
कीरत फैलनही लगी धन धन चरणहिं दास॥ १२॥
दिल्लीही का बादशाह दूजा आलमगीर॥
दरशनही की चाह करि भेजा एक अमीर॥ १३॥

चौपाई॥

अमीर आय ठाढ़ा भया सौंही। सीधी दृष्टि लाज लिये भौंही॥ महाराज ने हित बहु कीया। बैठन कारण आयसु दीया॥ अरु पूछी कहु कित सूं आया। अमीर कही बादशा भिजवाया॥ कही सलाम हुकम जो पाऊं। दरशन करन तुम्हारे आऊं॥ भक्तिराज कहि वासूं कहियो। मेरे अस्थल मत ना अइयो॥ वाका राज नहीं थिर होना। और सिताबी ह्वैहै गौना॥ थोड़ी उमर रही जगमाहीं। ताते मिलबेकूं चित नाहीं॥ मौत छुरी की यह मरजैहै। बहुत दिना जीवन नहिं पैहै॥ १४॥

दोहा॥

उलटा गया अमीरही बादशाह के पास।

कहीतुम्हारो आवनो नहिं चाहैं चरणदास॥ १५॥

चौपाई॥

और बात सब छिपी जु राखी। बुरे होन की कछू न भाखी॥ बादशाह सुनि सोचन लागे। सरस नेह में दूने पागे॥ एक दिना ऐसी मन माहीं। दरशनही कूं सुरति उठाहीं॥ अमीर उमराव फौज ले साथा। चले अचानक पृथ्वी-नाथा॥ बिना कहे अस्थल में आये। भक्तिराज के दरशन पाये॥ पाँच गाँव कुछ रुपये लाये। महाराज की भेंट चढ़ाये॥ भक्तिराज कहि मैं नहिं लैहूं। वेग उठा नहिं फेंक चलैहूं॥ यक उमराव फारसी माहीं। ऐसे कही जु लैहैं नाहीं॥ जो तुम बातैं कीया चावो। आगे सेती भेंट उ-ठावो॥ बादशाह ने आज्ञा दीनी। खोजे भेंट उठाय जु लीनी॥ महाराज मुख सौंही कीया। जो पूछा सो उत्तर दीया॥ घड़ी चारलौं बातैं भई। फिर उठवे की आज्ञा दई॥ १६॥

दोहा॥

दरशन करिकै उठ गया पहुँचा महलों जाय॥
दोय बरस में मरगया भया और बादशाह॥१७॥

चाहे जिस कूं राज दें चाहे करैं कंगाल ॥
ईश्वर की तीनों शकति उतपति परलै पाल॥ १८॥
दुर्रानी कन्धार सूं आया अहमद शाह ॥
मारे दषणी दिल्लि हू लूटि कतल भई त्राह ॥ १९ ॥

चौपाई ॥

भक्तिराजके अस्थल माहीं । आये मुगल चढ़ाये बाहीं ॥ महाराज पै तेग चलाहीं । रहगया हाथ चली वह नाहीं ॥ और एक दूजेने फिर बाहीं । हाथ बँधे ह्वां तक नहिं आहीं ॥ फिर वे सब चरणों पर गिरिया । इकइक शस्तर भेंट जो धरिया ॥ भयकूं देख लोग भजगये । अस्थलमें दो चारेक रहे ॥ भगे जिन्हों कुछ और कही । भक्तिराज की देही गई ॥ अतिथि संगथे सो सब मारे । भाजि बचे सो भाग हमारे ॥ सुन सुन बहुत देखने आये । महाराज आनँदसूं पाये ॥ २० ॥

दोहा ॥

और साधु जो पास थे तिनकूं लगी न आंच ॥
धनिधनि सब कहनेलगे आंखों देखासांच ॥ २१ ॥
रक्षक सारी सृष्टि के तिनकूं मारै कौन ॥
आप कालके कालहैं तिरलोकी के भौन ॥ २२ ॥

चौपाई ॥

अब यक लीला अद्भुत गाऊं। ताकूं बरणत ही हुलसाऊं ॥ एक नागरीदास गुसाहीं। रहत हुते बृन्दावन माहीं ॥ अब कामें में, कीन्हा वासा। वाके मन यह उपजी आसा ॥ जगन्नाथ की ओरी चाला ॥ कुटुँब मोह तजि जगजंजाला ॥ नगर फिरोजाबाद मँझारे। जापहुँचा आनँद सुखसारे ॥ जहां रातिको सोवनकीना। जगन्नाथ ह्वां दरशन दीना ॥ कहा कि तुम दुख काहे धारो। बहुतदूर अस्थान हमारो॥ अब तुम उलटे दिल्लीजावो। ह्वांतुम दरशन मेरापावो॥२३॥

दोहा ॥

अंश आपना प्रकट करि लिया संत औतार ॥
नांवधरा चरणदासही रूपवैष्णवधार ॥ २४ ॥
चिह्नचक्र सबही कहै और बताई ठांव ॥ जागा जब निश्चयकरी उलटा दिल्लीजांव ॥ २५ ॥

चौपाई ॥

जो सुपने में आज्ञाभई। उन सांची माथे धरिलई ॥ चला चला दिल्ली में आया। पूछि पूछिकै अस्थल पाया ॥ अस्थान द्वार जित सौंदर

शाया। ह्वांई सेती शीश नवाया॥ ह्वां से करत चला दंडौत। मनमें बहुत खुशीहीहोत॥ भक्ति राजके निकटै आया। जगन्नाथ सम दरशन पाया॥ २६॥

दोहा॥

वही मुकुट कुण्डल वही वहि बैजन्तीमाल॥
रूप सांवरो पीतपट दरशगये ततकाल॥ २७॥
दरशन करि परसन भये दई परिक्रमा सात॥
शीश नवाया चरणकूं भक्तिराज धरो हाथ॥ २८॥
वाहि पकड़ छाती लगा मिले, श्रीमहराज॥
फेर गुसांई जुदाहो लखा बैष्णवसाज॥ २९॥
शिरपै टोपी सोहनी तनमें चोला पीत॥
दोऊ रूपकूं देखिकै बढ़ी अधिकही प्रीत॥ ३०॥
दूजा अचरज और इक रामरूप कहै गाय॥
कांवरवाला एक जो उतरा अस्थल आय॥ ३१॥

चौपाई॥

पण्डित बड़ा लिये अभिमानै। अपनी बिद्या अधिकी जानै॥ भक्तिराजसूं चरचा ठानी। करुवी बात कही बिषसानी॥ कहा कि झूठा धरम तुम्हारा। तुमने बहँकाया संसारा॥ महाराज

के शीतल बैना । सब जीवनके अतिसुखदैना ॥ क्षमालिये बोले करजोरी । तुम दीरघ नान्हींबुधि मोरी ॥ यह कह करि अरु शीश नवाया । भोजन पेड़ों का करवाया ॥ सोया जब सुपना यों आया । बैजनाथ ने बचन सुनाया ॥ चरणदास हैं बिष्णु सुभाव । उनका तुमने किया कुभाव ॥ भोर भये चरणों तुम परो । सबै रुद्दरी आगे धरो ॥ इक इक शीशी पगपै डारो । गंगाजलसूं चरण पखारो ॥ निश्चय हमकूं पहुँचा जानों । यही बात सांची करि मानों ॥ याको फल तुम ह्वांई पावो । मोहिं खुशीकरि हरष बढ़ावो ॥ ३२ ॥

दोहा ॥

आंखखुली अचरज भया उपजीसकुच अपार ॥
मनमें यह निश्चय किया चरणदासऔतार ३३ ॥

चौपाई ॥

चाव बढ़ा दरशन कब पाऊं । भोर रुदरी चरणदास चढ़ाऊं ॥ सोचतही तड़का होगया । भक्तिराज का दरशनभया । देखतही दण्डौतें कीनी । और सातपरदक्षिणादीनी ॥ महाराजकहि पण्डित भाई । तुम्हरे यह मनमें क्या आई ॥

मेरा तुम चरणन में बासा। मैंतो तुम्हरा चरणहि दासा॥ पंडित कही न मैं कुछ जानी। मैंहूं जीव तिमिर बुधि सानी॥ बैजनाथ ने मोहिं चिताया। सुपनेमाहिं दर्शन हम पाया॥ उनकी आज्ञा मैं नहिं टारूं। सब रुदरी ले चरण पखारूं॥ ३४॥

दोहा॥

सबही रुदरी खोलिकर चरणों दई चढ़ाय॥
चरणामृत हितसों लियो खुशीहोय हुलसाय ३५॥
शिष्य भया कंठी लई मंतर कानों माहिं॥
विद्या अरु अभिमान कुल रहा नेकहू नाहिं॥३६॥
भक्तिराज सतसंग में सदा रहैं आनंद॥
जो आवै सोई तरै भवसागर के सिंध॥ ३७॥
लीला अधिक सुहावनी कहूं कथा यक और॥
बादशाह का कुटुंब सब ज्यों आया वा ठौर॥३८॥
मारा आलमगीर जब शाजहां किया बादशाह॥
आलमगीरका कुटुंबसबकैदकियाउननाह॥३९॥
आली गौहरसुत हुता सो पटने की ओर॥
थोड़ी वापै फौजथी कछू न वाका जोर॥ ४०॥
नारी आलमगीर की फिकर करै दिनरात॥
चरणहिदास फकीरपै पहुँचावै कोइबात॥ ४१॥

वेही करैं सहाय अब देहैं बंध छुटाय ॥
रुक्का मेरे हाल का जो कोई लेजाय ॥ ४२ ॥
उनका एक रफ़ीक था, आया अस्थल माहिं ॥
हाथजोरि सबही कही औ पकड़ाई बाहिं ॥ ४३ ॥
सेवक आलमगीर था ऐसे इनको जान ॥
भक्तिराजही सो कही पिछली सब पहिंचान ॥ ४४ ॥
भक्तिराज धीरज दई हाथ शीश पर राख ॥
उनको करिहौं बादशा यों कहिमुखसों भाख ॥ ४५ ॥
उलट आय घर आपने कागज लिख हरषाय ॥
बेग महींके पास वह रुक्का दिया पठाय ॥ ४६ ॥
रुक्का पढ़ दुख सब गये भये मनमें खुशहाल ॥
बंधकटी बिपदा हटी बाबै किये निहाल ॥ ४७ ॥

चौपाई ॥

बदले का रुक्का लिखवाया । अपने भेदी पै भिजवाया ॥ कही कि बाबै पै लेजावो । या रुक्के का ज्वाब मँगावो ॥ रुक्के बहुत जो आये गये । ऐसे चार महीने भये ॥ एक दिवस महराज गुसाईं । लिखा महीना दिन तिथि ताईं ॥ रुक्का भेजा औरयों कही । तुमहीं को बादशाहत दई ॥ छत्र तखत गौहर को दीया । वलीअहद बेटेको

कीया ॥ जो तुम मनिहो बचन हमारा। सभी मुल्क में हुकम तुम्हारा ॥ आलमगीर ने बचन न माना। ताते भई हुकम की हाना ॥ ४८ ॥

दोहा ॥

रुक्का लिख मुखसों कहा पहुंचा बेगम पास ॥
कुरनिशकरि शिरपरधरा भईजु पूरणआस॥४९॥

चौपाई ॥

दिना बीस में ऐसे सही। भक्तिराज ने जैसे कही ॥ दक्षिणियों ने मता उपाया। जवाब खत वलीअहद बनाया ॥ गौहर को खतलिख भेजवाया। बैठ तखतपर छत्र फिराया ॥ शाहआलम भया दूजा नांव। बादशाहत का किया बनाव ॥ क्वार सुदी दोयज को जानौ। वलीअहद भा सो पहिंचानौ ॥ तीज सुदी दरशन को आया। सकल कुटुंब को संगहि लाया ॥ दादी बूआ औ महतारी। औ सँग आईं बीसक नारी ॥ फूफा मिरजा बाबा आया। महाराज का दर्शन पाया ॥ ५० ॥

दोहा ॥

भेंट चढ़ाई बहुतसी लीन्हीं ना महराज ॥

मुखसेतीऐसे कहा रामनिमित किय काज ॥ ५१ ॥
आज्ञा में जो रहोगे तौ पावोगे नाम ॥
हुक्म होयगा मुल्कमें सुधरैंगे सब काम ॥ ५२ ॥

चौपाई ॥

बेगम कही कहो सो करैं । बिना हुक्म कोइ काज न सरैं ॥ चारघड़ी दरशन जो कीना । फ़ेर क़िलेका आयसु लीना ॥ पांचबार ऐसेही आये । भक्तिराज को नाहिं सुहाये ॥ और कही नहिं आज्ञा कारी । बादशाह ने बात बिगारी ॥ मेरी कही चलो नहिं चाला । जासों होता बहुत निहाला ॥ जैसे के तैसे तुम रहो । अपने दुखकी फिर मत कहो ॥ बादशाह ने रुक्के कीने । तिनके कछू जवाब न दीने ॥ रामरूप कहे मैंथा साथा । आंखिन देखि कही यह काथा ॥ ५३ ॥

दोहा ॥

साठ बर्ष की उमरतक लई न पूजा भेट ॥
कै कोइ लावो बादशा कै कोइ लावो सेठ ॥ ५४ ॥
कै कोइ लावो शिष्यही कै कोइ लावो दास ॥
बस्तरहू लीना नहीं रहे सदा निरबास ॥ ५५ ॥
फिर साधो बिनती करी सुनिहो बेपरवाह ॥

आये को फेरो मती मनसों करो न चाह ॥ ५६ ॥
जबसों लेनेही लगे कछू जो राखै कोय ॥
लेत विचार विचारही तामें मेल न होय ॥ ५७ ॥
मर्याद चलावन कारने पिछलोही के हेत ॥
गुरुशिवभक्ति अस्थापना समझभेंट योंलेत ५८ ॥
कुंजो लखसम देवकी चरणदास हरिअंश ॥
भक्तिउजालन आइया शोभनजीके वंश ॥ ५९ ॥
एक दिना बैठे हुते सुत माता के पास ॥
करते थे पंखा लिये जैसे कोऊ दास ॥ ६० ॥

चौपाई॥

हँस हँस बात करत थे दोऊ । नर नारी ढिग हुता न कोऊ ॥ बातनहीमें बात चलाई । कुंजो माईने मुसक्याई ॥ तुम पुत्तर मोहिं सब कुछ दीना । जगमें नाम बड़ाही कीना ॥ आठौंसिधि रहैं द्वारे ठाढ़ी । महिमा अधिक हमारी बाढ़ी ॥ और बात की हौस न मेरे । खोल कहूं सब आगे तेरे ॥ एक कामना मनमें अतिही । सो वह हिरदा दाहै नितही ॥ जब चौंके महराजा भाखी । अबताईं तुमकाहे राखी ॥ किसी बात की कमी न तुमको । अचरजबड़ाभया जो हमको ॥ ६१ ॥

दोहा ॥

मोको खोल सुनाइये मेटूं सब सन्देह ॥
नहीं भरोसा श्वासका झूठी है यह देह ॥ ६२ ॥

चौपाई ॥

जबहीं माता बोलन लागी। अधिक प्रेमके रँगमें पागी॥ आंसू ढलकपड़े दोउ नैना। छाती उमँग कहै यों बैना॥ एकबार हरि दर्शन पाऊं। हिय आंखिन की तपनि बुझाऊं॥ तुम समर्थ सब लायक जानूं। उनहीं का तोहिं रूप पिछानूं॥ तुम्हरे आगे सबही नेरी। यही चाह पूरी करि मेरी॥ रास करत श्रीकृष्ण दिखावो। जो तुम देखा मोहिं दरशावो॥ महाराज कहि धनि धनि माई। जो तुम्हरे मन ऐसी आई॥ अब तुम अपनी आंखैं झापो। मनबुधि हरिकी ओरी आपो॥ जब मैं कहूं खोलही दीजो। परगट प्रभुके दरशन लीजो॥ ६३ ॥

दोहा ॥

सँभल बैठ माता जभी मूँद लिये दोउ नैन ॥
खोलकही घड़ि एकमें हरिलखपायोचैन ॥६४॥
एक पहर बिस्मय रही तनजगकी सुधिनाहिं ॥

वा औरी चेतनभई अचरज लीलामाहिं॥ ६५॥
महाराज ने मातकी ऐसे मेटी प्यास॥
ज्योंकी त्यों वर्णनकरी रामरूप निजदास॥ ६६॥

चौपाई॥

एक दिना कुंजोही माई। भई काहली तन अलसाई॥ घड़ी एकमें तन तजि दीना। परम धाम को गवन जुकीना॥ रहे बरस दो ताके पाछे। दश संवत भये नीके आछे॥ महाराज रहे अस्थल माहीं। फिर ह्यां सेती सुरति उठाहीं॥ ६७॥

इति श्रीगुरुभक्तिप्रकाशेस्वामीरामरूपजीकृतनईवस्ती केचरित्रअष्टमोविश्राम॥ ८॥

अथ सुखदेवपुरके चरित्र॥

चौपाई॥

नये शहर में अस्थल कीया। रहेआय ह्यां बहु सुख लीया॥ सुखदेव पुरा धरि वाका नाऊं। बहुत सँवारी नीकी ठाऊं॥ कई भांति के वृक्ष

लगाये। चरण पादुका करि हुलसाये॥ जन्म तीजकी पूजा करैं। दे परिक्रमा ध्यानहू धरैं॥ १॥

दोहा॥

सौंही बड़ा दलान था बैठे आनँदरूप॥
दर्शन को आवैंचले राव रंक अरु भूप॥ २॥
काहूको ह्वां अटक ना मनमानै सो आव॥
कै हिंदू कै तुरुकहो सबसों राखैं भाव॥ ३॥

चौपाई॥

होय आरती धुनि बहुनीकी। साधु खुशीकरैं अपने जीकी॥ होय जागरण बानीगावैं। अपने गुरुगोबिन्द रिझावैं॥ भक्तिराज सब सों हित राखैं। काहू से कडुवा नाहिं भाखैं॥ काहू योग युक्ति देताश। काहू को दिय ज्ञान बिचारा॥ प्रेमभक्ति काहूको दीन्ही। जैसा घट देखा सो चीन्ही॥ पै नवधा रँग नितही बरसै। जो आवै सो रँग मेंसरसै॥ अरु शिष कई महन्त बनाये। देश देश को दिये चलाये॥ ४॥

दोहा॥

चहुँदिशि फैली भक्तियश भयो अधिक अपार॥
रामरूप गिनती कहा जीव दिये बहुतार॥ ५॥

चौपाई ॥

था यक बनियां सोहनलाल। बादशाह के ख्वाह सवाल ॥ अचरज देख अचम्भा माना। कुटुँब सहित वह शिष्य हुआ जाना ॥ वाकेथे बेटेही तीन। सबही थे सम्पति सों हीन ॥ कृष्णचन्द्र हरनाथ प्रवीना। छोटो विष्णुदास थे तीना ॥ काहूके सन्तान न भई। उनकी बड़ी उमरहोगई ॥ लोग लुगाई देवैं ताना। तुम्हरे गुरुहैं सिद्ध प्रधाना ॥ उनसे क्यों सन्तान न चाहो। ईधर वीधर भरमत धाओ ॥ ऐसेही वह आन सुनावें। महाराजके मन नहिं आवें ॥ जो मन आवे सब कुछ करें। भरी को रीती खाली भरें ॥ ६ ॥

दोहा ॥

छोटा वाका पुत्र जो विष्णुदास था नांव ॥
सेवा करनेही लगा भला जु पाया दांव ॥ ७ ॥

चौपाई ॥

नानाविधि करि बहुत रिझावै। अठवें दिन चौकी को आवै ॥ तीन बरस में परसन भये। महाराज उनके घरगये ॥ नर नारी यक ठौरे कीने। आन धरम के संकलप दीने ॥ आनदेव

को तुम मत धाओ। हरि के चरण कमल चित लावो॥ कही कि सबको दई सन्तान। बरसरोज में हो परमान॥ उसी बरस में ऐसेभया। भक्ति-राज जैसे करिकहा॥ किसीके हुआ किसी केहोना। खुशीभई तीनोंके भौना॥ जोथे उनके आसा पासा। धन्य कही यह देखतमासा॥ ८॥

दोहा॥

रामरूप जो यह कही संगत में विख्यात॥
सतगुरु आगे तुच्छहैं ऐसी ऐसी बात॥ ९॥

चौपाई॥

एक दिना यक अचरज भया। बहुत मनुष नैनोंसे लया॥ था उमराव मूसवी खाहीं। कै यक कुंजर थे उहपाहीं॥ हाथी एक मस्त बहुभारा। छूटजाय था बहुतक बारा॥ कैयक मनुष ठौर बहु मारे। ताहि महावत पकड़त हारे॥ यक दिन यमुनाजी को गये। वाहि न्हुलावनही को भये॥ जबै साकली तोड़ि बगाई। पीलवान की कछु न बसाई॥ सबके हाथनही सों छूटा। शहर ओर को चला अछूटा॥ भाजैं लोग शोर बहु करैं। ताको लखि धीरज नहिं धरैं॥ १०॥

दोहा॥

आया अस्थल को चला तमाशबीन बहुसाथ॥
बड़ी पौरमें आबड़ा कछू नबायागात॥ ११॥

चौपाई॥

फिर छोटी पौरी शिरदीना। ऐसा सिकुड़ा अचरज कीना॥ भीतर आया अस्थलमाहीं। ऊपरही को सूंड़उठाईं॥देखत लोग सभी डरगये। आप आप को भाजत भये॥ फिरआया दालान मँझारी। बहुत सिकोड़ी देहीसारी॥ महाराज के आसनपासा। भया जोठाढ़ा ज्यों निजदासा॥ चरणदास गुरुदेव गुसाईं। सौंहीहुते कोठरी माहीं॥ पग निहुड़ाकरि शीशनवाया। करिदंडवत हिये सुखछाया॥ आसन ऊपर दोनापाया। पकड़ सूंड़सों माथेलाया॥ १२॥

दोहा॥

दोना फिर मुख में दिया लियायही परसाद॥
ढीलेतन उलटाचला जैसे सूधेसाध॥ १३॥

चौपाई॥

जिन पग आया तिनपग चला। ईधर ऊधर नाहीं हला॥ हुतेवृक्ष केले जहँ लागे। कछू न छेड़ा

उन्हैं सुभागे ॥ जैसे आया तैसेगया । अस्थलही से बाहरभया ॥ पीलवान फिर आकर पकड़ा । फेर जंज़ीरौंहीसों जकड़ा ॥ लेजाबांधा थान में जाई । पैकुछ रही न चंचलताई ॥ दिनातीसरे देहीत्यागी । सुरपुर पहुँचा वह बड़भागी ॥ भक्तिराज का दर्शनपाया । ताते स्वर्गलोक को धाया ॥ रामरूप कहै आंखौंदेखा । हिन्दू तुरुक थे बहुत बिशेखा ॥ १४ ॥

दोहा ॥

जो निगुरे बेमुखहुते रहे बहुत खिसियाय ॥
साधुलगे अस्तुतिकरन मनमेंअतिहुलसाय १५॥

चौपाई ॥

वाकेपाछे औरबखानों । जोमैंसुना सोनिश्चय जानों ॥ पूरनप्रताप शिष्ययकजानों । रहैडीघगढ़ हरिरससानों ॥ गुरुके चरणकमल में पागो । निशिदिनरहै ध्यानमेंलागो ॥ ताको कठिनभई दर्बचहिये । मनहीमन सोचै कहाकहिये ॥ लेहुं उधारदर्ब अबकासों । हिरदोमिलै कहूंमैं जासों ॥ इकथा नागर गोबिंदराया । वासेती यह बचन सुनाया ॥ उनकहि तुरीलैन के पैसे । कामचला

लौ दीजो जैसे ॥ आठदिना में जो मैंपाऊं। घोड़ालेकर दागकराऊं ॥ १६ ॥

दोहा ॥

लिये रुपैये रायसों कठिनचलाया काम ॥
किया अवादा आठदिन पहुँचाऊंगादाम ॥ १७ ॥

चौपाई ॥

जभीआठदिन बीतेगये। तभीराय दर्ब मांगत भये ॥ इनकह दोदिन में पहुंचाऊं। जहां तहां सों तोहिं चुकाऊं ॥ ऐसेहि कहत कईदिन बीते। दर्ब नआयो मनभइ चीते ॥ झूंठोहूं अरु प्रीतिनशावै। वहमांगै अरु मनुषपठावै ॥ कहै चाकरी हमरी छूटे। तुमतौ साध बड़ेही झूठे ॥ दोइमास बीते यहिभांता। पूरनकुढ़े दिवस अरु राता ॥ एकदिना उनबहुत दबाया। ब्राह्मण को द्वारे बैठाया॥झगड़ाकरके यहठहराई । भोरदेन की सौगँदखाई ॥ १८ ॥

दोहा ॥

भोरभये अरु सांझलौं दर्ब न आयाहाथ ॥
वादिन भोजननाकियो भूखरहा सबसाथ ॥ १९ ॥

चौपाई॥

मन के माहिं बहुतदुखमाना। लड़के झगड़ा होताजाना॥ सोयरहे गुरुका करिध्यान। मोअनाथकी राखी आन॥ करुणासुन गुरुदेव गुसाईं। दई दिखाई जा वहठाईं॥ जहां सोवतहैं गोबिंदराई। रावसुजान प्रीति वहभाई॥ अपनेही मन्दिरके माहीं। दिये जहांपट उघड़ैनाहीं॥ पहले जाकरि सुपनादिया। बहुत खिसाना वाको किया॥ कही कि अपने मन मतआनों। साधुन को झूंठानहिंजानों॥ झूठी सौंगंद उन नहिंखाई। यह थैली मोहाथ पठाई॥ २०॥

दोहा॥

यों कहिकै थैलीदई वाही के करमाहिं॥
जागउठा तो सांचथी मनमें धीरजनाहिं॥ २१॥

चौपाई॥

कांपि कांपि फिर रावजगाया। यह कौतुक सब वाहि सुनाया॥ थैलीदई हाथ के माईं। देगयेमोहिं चरणदास गुसाईं॥ दोनों बड़ा अचंभा चीन्हा। कहैं परस्पर कौतुक कीन्हा॥ दीपकबाल भईउजियारी। तोड़ेपै जब मुहरनिहारी॥

तामेंलिखा चरणहीदासा। पढ़ दोनोंभये मन सोंदासा॥ भोरभये गये उनके पासा। पूरन देखत भयाउदासा॥ कही कि ये अब ताना देहैं। बचनोंमाहिं आबरूलेहैं॥ येतौजाय दोऊपग लागे। कही रातिकी तिनके आगे॥ २२॥

दोहा॥

अरु थैली दिखलाइया हर्षलखी परताप॥
आपस में कहने लगे वे औतारी आप॥ २३॥
जा सनके दीये हुते खोल लखा वहि सन्न॥
जबतो यों कहने लगे महाराज धन धन्न॥२४॥
धन पूरन परताप को ऐसा शिष जोहोय॥
धन ऐसे गुरुदेवको रामरूप कहै सोय॥ २५॥
दुरजन खिसयाने भये जिनकी ऊंची नाड़ि॥
रामरूप कहै कह चलै जहां भक्ति की बाड़ि॥२६॥

चौपाई॥

एक समयकी बात सुनीजै। सरवन करि हिरदे धरलीजै॥ सप्त साधुपूरवसों आवत। गुरुके चरण कमल चित लावत॥ बड़े गुरुमुखी हरिजन सांचे। प्रेमभक्ति में निशि दिन रांचे॥ गुरु बिन मीत न राखै कोई। हरि गुरुको जानै नहिं दोई॥

ऐसे संत जु मारग माहीं। शहर आगरा यमुनाठाहीं॥ कुशल क्षेमसों ह्वांतक आये। फिरधीवरने नाव चढ़ाये॥ और चढ़े बहुतै नर नारी। सरकाई गहरे जल डारी॥ चली चली जब मध्ये आई। दारुण पवन लाग थहराई॥ २७॥

दोहा॥

बरसायतकी ऋतुहुती घटा रही घहराय॥
कछु अंधेरोसो भयो बिजली अतिचमकाय॥२८॥
भरने लागा नीर जब डूबन लागी नाव॥
धरिबल्ली धीवर चले बचने का न उपाव॥ २९॥
सब लोगन धीरज तजा साधु भये भयमान॥
जब सुमिरे गुरुदेवही ज्योंगजने भगवान्॥ ३०॥
पहुंचे ढील लगी नहीं करसों दई उछाल॥
चली किनारे आलगी वहीसमय ततकाल॥३१॥
महाराज अस्थल बिषे मजलिसही के माहिं॥
रामरूपके देखतैं नीली भई जो बाहिं॥ ३२॥
कील आंगुली में लगी लोहू टपका तेक॥
सबहीने अचरज लखा रामरूप कहै देख॥ ३३॥
पूछी जब ऐसे कही आवैं सात अतीत॥
वे तुमसों यह कहैंगे गई जो उनपै बीत॥ ३४॥

आये सातौं संत जब खोल कहा सब भेव ॥
मैंहूं लिखराखी हुती पूंछनहीं के हेव ॥ ३५ ॥
ऐसे शिष दुर्लभ कहीं ऐसे गुरु भी नाहिं ॥
ऐसे जन अरु गुरुनपै रामरूप बलिजाहिं ॥ ३६ ॥

चौपाई ॥

एकसमय पूरबदिशमाईं। जायदिखाई दीनी साईं ॥ शहर लखनऊ नांवबखानों। तामेंलाल द्वार जो जानों ॥ ताकेपास मुहल्लाओई। बड़भागी धनधन है सोई ॥ महाराज रनजीत गुसाईं। जाय अचानक प्रकटेह्वाईं ॥ आठदिना लौं ह्वाईंरहे। मनुष सैकड़ौं दर्शन लहे ॥ जाके घररहै धनवाजीया। नाव हरिभजन शिष्य जो कीया ॥ गुप्तभये जब अचरजजाना। लोगन बड़ा अचंभामाना ॥ चिठ्ठी खत दिल्लीजबआये। ह्यांहूं अचक रहैं बौराये ॥ ३७ ॥

दोहा ॥

आपस में कहनेलगे ह्यांसों गये न बार ॥
बड़ाअचम्भाही भया क्योंनहोय अवतार ॥ ३८ ॥
एकदिना लीलाभई मोको नाहिं सुहाय ॥
रामरूप बर्णन करै पैवह कही न जाय ॥ ३९ ॥

अठारहसै अठाइसवां संबतमास जुकार ॥
मिती सुदी आठैहुती बारहुता बुधवार ॥ ४० ॥
महाराज अस्थलविषे यह चेराथा पास ॥
भक्तिराज लेटेहुते बैठाथा मैं दास ॥ ४१ ॥
आया कालानागही मूछौं छीदे बाल ॥
लांबाअरु मोटाघना नैना घुंघुचीलाल ॥ ४२ ॥
देखअचानक आवता मैं भया अचरजमाहिं ॥
उठठाढ़ाभया बेगही बैठारहाजुनाहिं ॥ ४३ ॥
सिरहाने को आयके दइपरदक्षिणा तीन ॥
चरणोंको दंडवतकरि खड़ा भया आधीन॥ ४४ ॥
महाराजहू बैठ करि शीश नवाया ताय ॥
मुखसेती ऐसे कही कृपा करी तुम आय ॥ ४५ ॥
दोनों के नैना मिले बात कही कछु गोप ॥
जभी वहांसों सरकके होगया तुरत अलोप ॥ ४६ ॥
क्या जानै यह कौनथा मोपै परा न जानि ॥
पूछा जब महराजसों करवाई पहिंचानि ॥ ४७ ॥
भक्तिराज ऐसे कही तू मत कहियो काहि ॥
परमेश्वर का दूत था गया जुमोहिं चिताहि ॥ ४८ ॥
बारह बरस मैं औरभी मृत्यु लोक के माहिं ॥
फिर जैहौं ईश्वर निकट जगमें रहना नाहिं॥ ४९ ॥

जबमैं भेजा जगत में भक्ति चलावन काज ॥
मैंहूं तब बिनती करी सुनि ईश्वर महराज ॥५०॥
मांगा दो बरदीजिये पगूं जगत में नाहिं ॥
दूजा पहल चिताइये बारह बरसरहि जाहिं॥५१॥
वही जान दिन आज था रामरूप सुनिमीत ॥
हम तुम दोनों नित्यहैं नेक न कीजो चीत॥५२॥
यह सुनि नैना जल भरे मैं भया बहुत उदास ॥
साधुसंत अवतारका सहल जगत में बास ॥५३॥
उतरे सतसठ बरसही लाग अठसठवां साल ॥
वाही संवत के बिषे चुभा हिये ममसाल ॥५४॥
लगा बरस अरसठवां सुदी कारतिथि आठ ॥
बुधवारकी रातिको सूझ परी जो बात ॥ ५५ ॥
रामरूप के हियेमें लगा तीरसा आय ॥
खटकत है दुख देत है जब वह सुधिआजाय ॥५६॥
रामतमें चितना लगै मनरहै गुरुके पास ॥
लेले आवै वेगही वही जु यम की फांस ॥ ५७ ॥

कुण्डलिया ॥

दिल्ली माहीं यकसमय नागे दशै हज़ार।
आये वे रामत करत तिनमें दो सरदार ॥
तिनमें दो सरदार शहर में भीख चुकाई।

धाये सतगुरु पास नामकी सुनी अवाई ॥
कही बैठि ढिग बात भक्ति चहुँ दिशिमें झिल्ली ।
सुनतेथे परदेश रहत चरणदासा दिल्ली ॥ ५८ ॥
हम आये इस कारणे चरणदास तुम सिद्ध ।
लागी भूखघनी हमें दीजे बहुतो ऋद्ध ॥
दीजे बहुतो ऋद्ध करैं भोजन ज्यों गहरा ।
नहिं लेवैंगे लूटि आज यह अस्थल शहरा ॥
महाराज कही बात अकड़की कहो मतै तुम ।
निश्चल बैठे रहो खानको देहिं अबै हम ॥ ५९ ॥

छप्पै ॥

महाराज ततकाल ध्यान में सुरति लगाई ।
हमरे पै कुछनाहिं राम अब करो सहाई ॥
यों बिनती करि तुरत कही परसाद जो पावो ।
लियो मोल मँगवाय पाय भरपेट अघावो ॥
तब नाग्यो ऐसे कहा यासों कछू न होय है ।
हम मूरति हजार दश यह प्रसाद मन दोयहै६०॥

दोहा ॥

यासे हम को क्या सरै अरु बांटा नहिंजाय ॥
जो तुमसांचे सिद्धहो आपी द्यो वरताय ॥ ६१ ॥
भक्तिराज हरिसुमिरिकै मानसी भोगलगाय ॥

चद्दर ढकि कही बांटदो सतगुरु करै सहाय॥६२॥
और हमारे पास कुछ कौड़ी नाहीं एक॥
श्रीशुकदेव प्रतापसों रहै हमारी टेक॥६३॥
साधु उठाये बीस दश कही कि दो बरताय॥
पंगत खुब बैठायके सबको देहु अघाय॥६४॥
सबको बरतावत चले जेंवन लगे अतीत॥
रामरूप देखत हुई महाराजकी जीत॥६५॥
भंडारा निवड़ा नहीं गये अतीत अघाय॥
रामरूप के देखतै सबहुन पूजे पांय॥६६॥
अरु मुखसेती बोलिया चरणदास की जय॥
पूरे पुरुष निहारिकै सबने माना भय॥६७॥
नागे संन्यासी हुते गये बहुत खुश होय॥
कही कि ऐसा सिद्ध हम और न देखाकोय॥६८॥
एक समय मथुरा बिषे दर्शन दीने जाय॥
रामरूप यह पीछला परचा कहै सुनाय॥६९॥

चौपाई॥

मथुरा में संगत अधिकाई। तिनमें अति प्रेमिनि यकमाई॥ वह इसहेतु भक्ति नित धारै। सतगुरु आवैं धाम हमारै॥ करै बरत पूजा अरु सेवा। ममघर आवैं सतगुरु देवा॥ करै जाग-

रण देवै दाना । दयाशील पाले मनमाना ॥ वाके मनकी आशा पाई। सतगुरु के उर करुणा आई ॥ सब घटकी जानैं जो स्वामी । सांचे सतगुरु अंतर्यामी ॥ दिल्ली के दिल्ली में रहे । धार रूपह्वां परगट भये ॥ दर्शनदियेकिये सुख पूरा । वा मनके सब दुख गये दूरा ॥ ७० ॥

दोहा ॥

वह मनमें फूली घनी लागी मंगल गान ॥
सतगुरु ऊपर वारके बहुतक दीना दान ॥ ७१ ॥
अरु ह्वांके बासी बहुत दर्शन कीने आय ॥
जो पहले शिष साधुथे सबने पूजे पांय ॥ ७२ ॥
नये शिष्य बहुते भये मंतर कंठी लीन ॥
चरणोंका शरणालिया हितकरि पूजा कीन॥७३॥
महाराज दूजे दिना न्हान किया बिशरांत ॥
ह्वांके बिप्रन को दिया दान जु बहुती भांत ॥७४॥
रहे वहां जो दोय दिन लीला करि भये गोप ॥
दिल्ली किन्हीं न जानिया रही जु बातअलोप॥७५॥
फिर ह्वां सों जो आइया खतपत्री अरु भेंट ॥
जब ह्यां सबहुन जानिया सतगुरुखेलअमेट॥७६॥
धनि उन प्रेमीजननको धनि सतगुरु अवतार ॥

रामरूप चरणदासकी लीला अपरमपार॥७७॥
भक्तिराज जैपुर गये सो कारण बिधि हेत॥
रामरूप अब कहतहै लीला प्रेमसमेत॥७८॥

छप्पै॥

राजा ईश्वरीसिंह तासु को छोटो भाई।
माधोसिंह शुभनाम जासु को सुत सुखदाई॥
सो प्रतापसिंह जानि श्री महाराजधिराजा।
हरिभक्तन सों नेह बड़ो धर्मज्ञ समाजा॥
तेहि आगे चरचा चली भरी सभा दरबार में।
चरणदास अवतारहैं परगट अब संसारमें॥७९॥
वेदव्यास के पुत्र मिले शुकदेव सुज्ञानी।
तिनके शिष्य जो भये कहत हैं अनभै बानी॥
चेले कई हजार जगत में सुयश छयो है।
चरणदास को नाम चहूँदिश प्रकट भयो है॥
यह सुनि राजाको बढ़ो दर्शनको अतिचावही।
कही कि चिट्ठीभेजियेलिखदंडवतअरुभावही॥८०॥

कुण्डलिया॥

सेवक तहँ महराज को राव खुशालीराम।
चाकर वा दरबार को हाजिर थो वह ठाम॥
हाजिर थो वह ठाम तभी तिन अरज सुनाई।

उनके नाती शिष्य साधु मो ढिग सुखदाई ॥
अखैराम है नांव नाम निर्मल के लेवक ।
बहुदिनसों ह्यांरहैं जानि निज मोको सेवक ॥ ८१ ॥

दोहा ॥

उनको पत्री दीजिये वे देंगे पहुंचाय ॥
महंतपुरुषहैं सात्त्विकी सूधे सरलस्वभाव ॥ ८२ ॥

छप्पै ॥

राजा कही बुलाव अबै मोहिं दरश करावो ।
देखै पूंछै बात जाय कै तुम लेआवो ॥
राव खुशालीराम तुरतही तिनको ल्याये ।
राजा कीनो भाव बहुत हित सों बैठाये ॥
देख अधिक परसन्न ह्वो दीनो एक जो गांवही ।
जैपुर सदा बिराजिये जाव न दूजी ठांवही ॥ ८३ ॥

दोहा ॥

किरपा करि महराज को दर्शन मोहिं कराव ॥
मेरी अरु अपनी दोऊ चिट्ठी बेगपठाव ॥ ८४ ॥
मोहिं चाह अतिदरश की तिन्हैं मिले शुकदेव ॥
धर्मसनातन दृढ़ गह्यो वे सांचे गुरुदेव ॥ ८५ ॥
भक्तिराज के दरश की हमको चाह अपार ॥
सुनसुयशशायंहजानियांचरणदासअवतार ॥ ८६ ॥

यह कहि फिर चिट्ठीलिखी बहुत भाव अरु प्रीति॥
रामरूप अब कहतहै जो लिखिया जेहिरीति ८७॥

छप्पै॥

सिद्ध श्री सर्वोप सकल उपमा के लायक।
हरि ईश्वर अवतार सर्व मनसा वरदायक॥
करुणासिंधु गुणवन्त पतितपावन अभिरामा।
श्रीश्याम चरणदास योग लिखतंग परनामा॥
प्रीतिभाव निज जानिकै दरश सेवकको दीजिये।
ह्यांप्रताप सब आपको कृपा जैनगर कीजिये ८८॥
महाराजा धिराज लिखी पत्री इहिभांती॥
महंत गोविंदानंद लिखा अतिही हित शांती॥
जगन्नाथ भट्टराव खुशालीराम मुसाहिब।
रोडाराम खवास आदि सब चितमें चाहिब॥
अखैराम की मारफत लिख चिट्ठी नाकै दई।
भक्तिराजपै आइया प्रेमभरी पाती नई॥ ८९॥
भक्तिराज पढ़वाय सुनत अतिही हर्षाये।
जबहीं उनके ज्वाब कृपा करि तुरत लिखाये॥
लिखी मिहर अरु प्यार बहुत राजाको हितकरि।
आशिर्बाद दई तुम्हैं जानिया सेवक निजकरि॥
गोविंदेव के दरशकी है हमको अभिलाष अति।

तबहींतुमसोंमिलैंगेधनतुमकोउपजीसुमति १० ॥

दोहा ॥

ऐसे चिट्ठी प्यार करि भेजी श्रीमहराज ॥
ह्यांसे आई पांचवर चाह दरश के काज ॥ ९१ ॥
लखि राजा के हीयकी प्रीति भाव अरु चाह ॥
चलने की त्यारी करी सतगुरु बेपरवाह ॥ ९२ ॥
राजा चढ़े मुहीम को माचहड़ी का राव ॥
अनबन था दरबार सो वापर कीना घाव ॥ ९३ ॥
गोविंदेव के दरश को भक्तिराज उर चाव ॥
अरु राजाकी प्रीतिलखि कीन्हों गवनउपाव९४॥
चले संग बहु संतखे करते भक्ति समाज ॥
सुनिसुनि उमड़ैं लोगह्वां दरशकरन महराज९५॥
जहां जाहिं महराजजी सुनि सुनि आवैं नांव ॥
चरणदास को नामसुनि झुके गांवके गांव ॥ ९६ ॥
बहुत तृप्त परजाकरी देदे दरशन भाव ॥
पाप ताप सबकेगये जो आये वह्न दांव ॥ ९७ ॥
चलत चलत ह्वां पहुँचिया राजाजी के पास ॥
लैन अगारी आइया दोय मुसाहिब खास ॥ ९८ ॥
लशकर ढिग आसन दिया तम्बू में करि प्रीति ॥
बहुआदर सनमानसों पूजे सांची रीति ॥ ९९ ॥

पहल आय हाजिर हुवो अखैराम निजदास ॥
सुनासबन जो फौजमें आये श्रीचरणदास १००॥
सुनि सुनिके आवन लगे दरशन करने काज ॥
परगट हरि औतारहैं चरणदास महराज १०१ ॥
जो आवैं सो खुशीहो कहैं धन्य धनि ईश ॥
बड़भाग दरशनभये कृपाकरी जगदीश ॥१०२॥
दिना पांचवें आइया राजा दरशन लैन ॥
बहुतभाव अरुप्रेमसों पूजे हरिसुखदैन ॥ १०३ ॥
पांच अशरफी दश रुपये भेंट चढ़ाये आय ॥
जोरिकर अतिनम्रहो कही किकरीसहाय १०४॥
बड़ा प्रेमथा दरश का हमको हे महराज ॥
आप पधारेकृपाकरि सुफलभया मैं आज॥१०५॥
भक्तिराजदी साल दो दइ कंठी परसाद ॥
राजाकेउर प्रीतिलखि किरपाकरी अगाध १०६॥
बड़ो प्रेम राजाहिये तन मन अधिक उमंग ॥
लखिकै सबही छकिरहे जो मंत्रीथे संग ॥ १०७॥
बड़ी बार बैठेभई उठने को चित नाहिं ॥
छके न दरश पियूषसो हौसबड़ी मनमाहिं१०८॥
घनी देर बैठेहुई जब आज्ञालइ भूप ॥
चले हियेधरि प्रीतिसो भक्तिराजकोरूप ॥१०९॥

महंत गोविंदानन्दजी जगन्नाथ भट जान ॥
रावखुशालीरामजी रोडाराम सुजान ॥ ११० ॥
मिले बहुतही भावसों दौलतराम समेत ॥
भक्तिराज ने भी तिन्हैं कीना अतिहीहेत ॥ १११॥
देश देश खबरैंगईं सुनि सुनि आवैं लोग ॥
होहिरसोईं हरि निमित साधु लगावैं भोग ११२॥
करि दरशन महराज को सभी भये परसन्न ॥
सर्ब जगह यह होरही चरणदास धनधन्य ११३॥
सतगुरु के मन उठनकी गोविंदेवकी चाह ॥
राजाजाने देइना जाके बड़ो उछाह ॥ ११४ ॥
भक्तिराज के चलन की जो कोई कहै बात ॥
राजाके उरप्रीतिअति ताते नाहिंसुहात ॥११५॥
भक्तिराज जब वहु कही अपने मुखसों बोल ॥
तब राजानेमानिया तापर यहकह खोल ॥११६॥
अबताईं तुम ह्यां रहे अबरहो ह्याईं आय ॥
यहपरताप सबआपको सो लीजेअपनाय ११७॥
ये घोड़े ये पालकी ये हाथी ये गांव ॥
मुहर रुपैये भेंटहै रहिये जैपुर ठांव ॥ ११८ ॥
कमी नहीं कुछ आपको सबसों बेपरवाह ॥
तुम ईश्वर औतारहो लीजै हमरी चाह ॥११९॥

जब ऐसे राजाकही हँस बोले गुरुदेव॥
धन्य तुम्हारी प्रीतिको सांचो माड़चोहेव॥१२०॥
सुफल फलै तुमकोभक्ति भला कहो सब कोय॥
श्रीशुकदेव परतापसों जगमें जैजैहोय॥१२१॥
हम भी तुम्हरी भक्तिबश आये हैं यहि ठांव॥
मोको कछू न चाहिये हाथी घोड़े गांव॥१२२॥
अरस परस बहुप्रीति करि राजा परसन काज॥
एकगांवइकीसमुहर भेंटलई महराज॥१२३॥
हुआकरै मेला जहां भले होवैं सन्त॥
सुदी माहकी पंचमी जिस दिन होयबसन्त १२४॥
धरम बढ़ैगो राजको अरु भूप प्रीतिसों देत॥
साधुभक्ति जहँकरैंगे गांवलिया इसहेत॥१२५॥
जो कुछ किया सुभक्तिहित भक्तिहिहित औतार॥
तन मन सों करतेरहे सदाभक्तिउपकार॥१२६॥
राजासों रुखसत हुये प्रसन्न होय जेहि बार॥
भक्तिराजजैपुरचले जयशुकदेव उचार॥१२७॥
राजाजी को खुशीकरि भक्तिभाव दरशाय॥
गोविंदेवके दरशको जैपुर पहुँचेजाय॥१२८॥

छप्पै॥

जैपुर में थे जो हुते सन्त हरिभक्त प्रवीना।

सोई आगे आय मिलो करि उमँग नवीना ॥
दई प्रदक्षिणा तीन दण्डवत करि करजोरे।
कही कि किरपाकरी प्रेमके रंग में बोरे ॥
भजनकरत आनँदसहित शहरमाहिं दाखिलहुये।
घरघरमें शादीहुई सबन दीनह्वै पगलुये १२९॥
गोबिन्देव के दरश करन दूजे दिन धाये।
श्रद्धा सहित करिभेंट जाय के शीश नवाये॥
मिले परस्पर हरषि भेद कीन्हीं नाहिंन जान्यों।
दोऊ ईश्वर रूप देख रामरूप छकान्यों॥
बड़ी बार शोभारही सुर नर छबि लखि छकिरहे।
श्रीश्यामचरणदासकेगुणकौतुकजाहिंनकहे१३०॥
गोबिंदेव को रूप सरब आनन्द को राजा।
करि दरशन परसन्न भयो सब संत समाजा॥
शीश नवा करजोरि कियो साष्टांग प्रणामा।
ले आयसु फिर चलेहुते आसन जेहिधामा॥
श्रीआचारज हितसहित महन्तजुवालानंदमिले।
भक्तिराजउरनम्रता प्रेमझलाझलमेंझिले१३१॥
अरु आवैं बहु दरश करन नर नारी हितचित।
होय जहांअति भीड़ फैलरही शोभाजित तित॥
करैं भक्ति नितसाधु आरती कथा समाजा।

सुनि सुनि उमड़ैं लोग देतहित श्रीमहराजा॥
रामरूप चरणदास को नाम सकलजग ह्वैरहो।
जैपुरनगर निहालकरि देदर्शनकलिमलदहो१३२॥

दोहा॥

दिन दश राजा ढिगरहे दिन दश जैपुरमाहिं॥
बहुत जीव निस्तारिकै आये दिल्लीठाहिं॥१३३॥
आवन जाना सबभया तीन महीने बीच॥
भक्तिहेत आयेगये धोई कलकी कीच॥१३४॥
धनि दिल्ली धनिभूमि है जित सतगुरु को बास॥
चरणशरण नितरहतहै रामरूप निजदास१३५॥
धनि बड़भागी मनुष वे नित दरशन करैंआय॥
चरणदास महराजने भवसों लियेबचाय॥१३६॥
भय मेटन दुबिधा हरन जबदुख मेटनहार॥
महाराज रनजीत सों सुखपावै संसार॥१३७॥

चौपाई॥

बहुत लोग दरशन को आवैं। दुखलावैं सुख ले घरजावैं॥ बहुतक रोगी इनपै आये। कही कि जावो रोग नशाये॥ जो कोइ आया पुत्तर हीना। ताहि बचन कहि पुत्तर दीना॥ ब्यौहार बिषे जो टूटाआवै। ताको बचन कहै तुष्टावै॥

जो कोइ बिना चाकरी आया । दई चाकरी बचनसुनाया ॥ बंधपड़े का मानुष आया । बचन कहाजा ताहि छुटाया ॥ सब दुख मेटन सब सुखदायक । चरणदास गुरु सब कुछ लायक ॥ जो कोइ हरिके प्रेमी आवैं । किरपा करिके तत्त बुझावैं ॥ १३८ ॥

दोहा ॥

ज्ञानभक्ति अरु योग की जिस को होवै चाह ॥
प्यारकरैं मीठेबचन तिन्हें बतावैं राह ॥ १३९ ॥

चौपाई ॥

आवै जो कोइ दर्शनकाजै । दर्शन करते दुबिधाभाजै ॥ जोकोइ बाद लियेही आवै । कहाकि हारा शीशनवावै ॥ जो कोइ मनुष तामसी धावैं । महादीनहो बचन सुनावैं ॥ जो कोइ होय राजसी भाई । ताको देवैं बहुत बड़ाई ॥ कोई सतोगुण संत विराजैं । तासों मिलमिल चरचा साजैं ॥ ऐसे हैं रनजीत गुसांई । जिनकी महिमा कही न जाई ॥ महासतोगुण बिष्णुस्वरूपा । हिरदे शीतल अधिक अनूपा ॥ रामरूप यह देखी भाषै । औरजगतमें परगटशाषै ॥ १४० ॥

दोहा ॥
सभी जगत नर यों कहैं चरणदास अवतार ॥
जिनके गुस्सा गर्व ना निर्मल शीतलबार ॥ १४१ ॥

इति श्रीगुरुभक्तिप्रकाशेस्वामीरामरूपजीकृतसुखदेवपुरेकेचरित्र नवमोविश्राम ॥ ९ ॥

अथ शिष्यको दृढ़देनों ॥

दोहा ॥
अस्सीवां संवतलगा जब सों यह अस्थाप ॥
ध्यानमाहिं बहुता रहै थोड़ा बोलैं आप ॥ १ ॥
लगाबरस अनभावना मोमनभया अँदेश ॥
भई उदासी तन विषे फीकालागा देश ॥ २ ॥

चौपाई ॥
मन में आवै कहिं उठजइये। याही देश में नेक न रहिये॥ इनसे पहले तनतजिदीजै। समय देखबेको नहिंजीजै॥ बिछुरनमोपै सहो न जैहै। बिरहआय बहुतै दुखदैहै॥ ताते यहतन नेक न

राखूं । सर्प कांचली की ज्यों नाखूं ॥ व्याकुलरहूं कछूसुखनाहीं । बढ़ो शोच हिय अन्तरमाहीं ॥ अन्नसवादलगैं सब फीके । निशिको नींद न आवै नीके ॥ रहूं उदास कलपना भारी । तनमन सों सब धीरजहारी ॥ रामरूप कहै यहगति मेरी । भक्तिराज तब नैनन हेरी ॥ ३ ॥

दोहा ॥

अन्तर्यामी जानिकर मो हिरदे की बात ॥
लीनोंनिकट बुलायकै पहर पीछलीरात ॥ ४ ॥

चौपाई ॥

बैठायो अरु हितबहुकीन्हों । निजकरिदास आपनो चीन्हों ॥ औरकही तुम्हरीगति कैसी । कुछयोसन सों दीखत ऐसी ॥ केते रोज तसील नशायो । कै मनमें भारी भय आयो ॥ कै कुछ रोग देहके माहीं । कैकुछ जगत चाहमन आहीं ॥ सबही बिथा खोलिकरि कहिये । वाको औषध हम सों लहिये ॥ जबमोको कुछ बोलन आयो । हिय पावक नैनन जलछायो ॥ अरु गुरुके चरणन शिरधरिया । आगम बिरह जाग दुखभरिया ॥

रामरूप कहै कहत न आई। महाराज सब पहले पाई॥ ५॥

दोहा॥

कहा कि ज्ञानी हौ बड़े जानत हो सबबात॥
अजअविनाशी आतमा देहअनित्यदिखात॥ ६॥

चौपाई॥

ताकोशोच न ज्ञानी राखै। देहमोह सब मन सों नाखै॥ समझ समझ करि झूठीजानै। ताको सांच न चितमें आनै॥ तीनकाल में अपनी नाहीं। छिन छिनमाहीं छीजतजाहीं॥ अपने वशमें कभी न आवै। जो शोकनमें चित्तलगावै॥ पहले बालक फिरहो ज्वानो। सहज सहज बूढ़ी होहानौ॥ बालअवस्था माके वशमें। तरुणभये नारीके रसमें॥ बूढ़ाभये पुत्रही थामें। नानारोगवसतहैं तामें॥ भय अरु चिन्ता दुख बहुभारी। याही सों हैं सुत अरु नारी॥ ७॥

दोहा॥

याही लीये फँसत हैं कुटुंबजाल के माहिं॥
इन्द्रिनको सुखचहतहैं सो सुपनेहू नाहिं॥ ८॥

चौपाई ॥

जिसको सुख संसारी कहै। दीरघदुख धन्धेसों लहै ॥ हैं वे विषय नाहिं पहचानैं। फिरफिर वाहीको मतठानैं ॥ तासोंहोथँ नरक के वासी। वाहीसों भरमतचौरासी ॥ जन्म मरण यों लागारहै। देहसंयोग घना दुखसहै ॥ देह प्रीतिकरि गर्भ मँझारी। आवत है वह बारंबारी ॥ ऊपरको पग सुख तलओरी। मल मुत्तर निश्चय वाठोरी ॥ अगिन तपावै इकरस आंचा। देह नेहकरि दुख में रांचा ॥ मूरखजानै जोकुछ देही। रामरूप से बिसर सनेही ॥ ९ ॥

दोहा ॥

देह नगरिया नीचही बसै क्रोध अरु काम ॥
रहै मोह मद लोभही नाहिं ऊंचका काम ॥ १० ॥
हाड़ मांस अरु चामही मल मुत्तर तेहिमाहिं ॥
रक्त और कफभराहै कछू पवित्तर नाहिं ॥ ११ ॥
नवो दुआरे बहत हैं सो परगट दरशाय ॥
मूरखनिजघर जानिकरि बसिरहेचित्तलगाय ॥ १२ ॥
ज्ञानी रहै उदासही जानत ना अपदेह ॥
ज्योंनिशिपक्षी बृक्ष में भठियारी का गेह ॥ १३ ॥

मूरख रहैं जो भोगहित संत रहै हितराम ॥
बैठिकरैं जपध्यानही और न यासों काम ॥ १४ ॥
सबही औगुन देह में एकबड़ो गुण जान ॥
याही में रहिहोतहै सोमैं करूं बखान ॥ १५ ॥
योग तपस्याही सधै भक्तिकरैं गहिटेक ॥
ज्ञान होय आपा लखै पावै पुरुष अलेख ॥ १६ ॥
यातें प्यारी लगत है संतन को यह देह ॥
रहैं निकासैं कामही कहैं न अपना गेह ॥ १७ ॥
जितना रहिये देहमें तितना जप तप होय ॥
यही बड़ा धन जानिये होवै संगी सोय ॥ १८ ॥
जप तप पूजा साथही अंत समय के माहिं ॥
और सबै रहजात हैं रंचक संगी नाहिं ॥ १९ ॥
जेता जगका धन कुटुंब करै जो याको ख्वार ॥
रामभक्ति धन करत है भवसागर ते पार ॥ २० ॥
रहिकरि याही देह में करैं जो जप तप ध्यान ॥
लिप्त न होवै विषयमें यही जो निर्मलज्ञान ॥२१॥
ज्यों सराय की कोठरी पंडित उतरा आय ॥
चौकादे पूजाकरी भोजन कियाअघाय ॥ २२ ॥
कामनहीं वा भवन सों भोरदई बिसराय ॥
गया आपने धाम को रामरूप सुखपाय ॥ २३ ॥

जब लग भोरहुवा न था रह्याहुता चितलाय ॥
अपनासा घरजानिकरि बैठासोयाखाय ॥ २४ ॥
भोरभयेहीं उठचला कछू न वासों मोह ॥
पीछा फिर देखा नहीं नहीं प्रीति नहिंद्रोह ॥२५॥
ऐसे हरिके भक्तही या देही के माहिं ॥
गुणगावैं गोबिंद भजैं भोगलगाकरि खाहिं॥२६॥
भोगलगे बिन खाय जो वा सँग जेंवतभूत ॥
रामरूप निश्चय करो हरिसों लगै न सूत ॥२७॥
बसि बसि याही देह में घनेनरक को जाहिं ॥
रामरूप या देह में साधु सिद्ध दरशाहिं ॥ २८ ॥
देहसमन्दर है बड़ा तामें बस्तु अपार ॥
एकन घोंघेलेलिये एकन रतन निहार ॥ २९ ॥
कांजरकी बेटी हुती घोंघनकी पहचान ॥
हारकिया पहिरा हिये बहुतबड़ा सुखमान ॥३०॥
पुत्री जौहरी की चतुर मोती परखनहार ॥
चुनि चुनिलीनें हेत सों गुहकरि पहिरा हार ॥३१॥
साधू आये देहमें भक्ति करैं गुरु हेर ॥
साकत आयेतनविषे चौरासी के फेर ॥ ३२ ॥
या तन सों तपहोतहै होयसती अरु शूर ॥
याही तनसों होतहै पापी कायर कूर ॥ ३३ ॥

सार न जानत देहकी साकत मूरख लोग ॥
मनुष जन्म को पायकै करै विषयका भोग॥३४॥
जन्म जु खोयेदेत हैं नारि द्रव्य के हेत ॥
गधे चरावत हैं खड़े ज्यों केसरकाखेत ॥ ३५ ॥
जैसे कंचनथाल में मूरख ढोवत रेत ॥
जैसे ब्राह्मणनेकिया चंडाली सों हेत ॥ ३६ ॥
जैसे उत्तम न्हाइया शूर तलइया माहिं ॥
ज्योंकरि मूरख बैठिया बेत वृत्तकी छाहिं ॥ ३७॥
ज्यों कुम्हार गज पायकै कूड़ा बरतन ढोय ॥
वहमनमें फूलेघना शोभाकभी न होय॥ ३८ ॥

चौपाई ॥

ज्यों रत्नोंकी मालापाई । पहिराई खरके गल माहीं ॥ जैसे लाल अमोलक पाया । तासों पत्ती फेंक उड़ाया ॥ ऐसे मनुष देह नहिं चीन्ही । जगत सवाद न मोहीं दीन्ही ॥ योहीं जन्म पदारथ खोया । सार न जानी बिरथा होया ॥ शुभकरमों का धन न कमाया । हीये हरिका नाम न आया ॥ तनछूटे को संगी वाका । मुये ठिकाना कित हो जाका ॥ पात बघूले की ज्यों फिरै । फिर फिर

चौरासी में गिरै॥ रामरूप हरिभक्ति बिनाहीं। उपजैं बिनशैं योहीं जाहीं॥ ३९॥

दोहा॥

साकत टोटाखातहैं लाहा कभूं न लेत॥
रीते निरफल जातहैं बिषयन सों करिहेत॥ ४०॥

चौपाई॥

नरदेहीकी सारन जानी। धिरग धिरग साकत अभिमानी॥ काम क्रोध में जन्म गँवावै। देही तजत बारनहिंलावै॥ क्रोधमाहिं बिष खात न त्यागै। कूयेपड़त ढीलनहिंलागै॥ अपने शस्त्र आपहीमारै। अपना शीश फोड़हीडारै॥ बड़े दुखन सों देही पावै। सो यह बिरथा देत गँवावै॥ बारबार कह ऐसी काया। चौरासी सीढ़ी चढ़ आया॥ आगे मुक्ति धामहै नीड़े। जानत नाहिं कामके कीड़े॥ मनरहै नारिनके तनमाहीं। ताते गर्भयोनि भुगताहीं॥ ४१॥

दोहा॥

चौरासी चढ़ि करि गिरै फिर कित पावैपार॥
चेतै तौ वह चतुरहै भूलै कूड़ गँवार॥ ४२॥

चौपाई ॥

मैथुन करिकै वीरज त्यागे। वस्तु न जानत वड़े अभागे॥ वीरज शस्त्र देह का जानौ। वीर्य रहै तौ उपजै ज्ञानौ॥ वीर्य रहै तौ बड़ बुधि होई। वीर्य रहै तौ नव तन सोई॥ वीर्य रहै तौ वल तन माहीं। सुन्दर दीखै यती गुसांई॥ वीर्य रुकै तौ सब जग पूजै। दुख भाजै यम ताहिं अरूझै॥ वीर्य रहै तौ तपसी पूरा। वीर्य रहै तौ योगी शूरा॥ वीरज थांभै सो जन भगता। निश्चय होय जगत सों मुकता॥ यती सती कोइ विरला जगमें। रामरूप सुनि हरि के मग में॥ ४३॥

दोहा॥

नारि द्रव्य के दास हैं चरनदास कोइ होय॥
हरि चरणोंसों लगि रहै जाति वर्ण कुल खोय॥४४॥

चौपाई॥

जिन को लागै प्यारी देही। भक्ति काजही रामसनेही॥ जब लग रहैं भक्तिही करि हैं॥ चरण कमल को ध्यानही धरि हैं॥ ऐसो जन्म वहुरि कब पावै। तामें आकरि हरिगुणगावै॥

हरिने मानुष देही दीन्ही। जाकी सार संत ने चीन्ही॥ चौरासी को नीचा जाने। मानुष देह बड़ी पहिंचाने॥ बड़े पुण्य अरु बड़भागन सों। मानुष देही पाईहै हूं॥ ऐसे सन्तकहैं मन माहीं। जगत काज मैं खोवैं नाहीं॥ लगेरहैं हरिही की ओड़ैं। रामरूपसो मुख नहिं मोड़ैं॥ ४५॥

दोहा॥

भक्ति बड़ीहै योगतें परमेश्वर बशहोय॥
करै आपने रूपही दुबिधा रहै न कोय॥ ४६॥
गुरू कृपा सों पाइये भक्ति योग अरु ज्ञान॥
यही शोधनिश्चयकरी और उपाय न आन॥४७॥
सतगुरु शरणैं जायकरि करे जो भक्ति उपाय॥
आज्ञाकारीही रहै आपा देइ उठाय॥ ४८॥
सन्त भक्त वही होयगा वही ज्ञानी योगीश॥
जो गुरुआज्ञा में रहै भेंट करै अपशीश॥ ४९॥
करै भक्ति शुभकर्म ले करै योगही ध्यान॥
गुरु आज्ञामें ना चलै सबही फोकटजान॥५०॥
गुरुके परसन हुये तें होयँ प्रसन्न सब संत॥
देवत सब परसन्नहोयँ होयप्रसन्नभगवंत॥५१॥

गुरु को पीठिदिये रहै सन्मुख हरिकी ओर ॥
ते नर निरफल जाहिंगे जप तप करो करोर॥५२॥
गुरुसो सन्मुखहैं सदा हरिको जानत नाहिं ॥
प्रभु उनसे परसन्नहोय अपनावें गहि बाहिं ५३ ॥
हरि अपने मुख सों कहा सतगुरु मेरा रूप ॥
उनकी अज्ञा में रहै सोई भक्त अनूप॥ ५४ ॥
निर्गुण मेरा रूप जो बुधि बानी सों दूर ॥
सरगुण गुरू स्वरूपहै जानत ना सो कूर ॥ ५५ ॥
नावँ जो मेरा कुछ नहीं ना कोई आकार ॥
भक्ति करावन काजही गुरुतन धरा सकार ॥ ५६ ॥
गुरुका करै जो ध्यानहीं ध्यान हमारा होय ॥
गुरुका जपै जो नामही नाम हमारा सोय ॥ ५७॥
गुरू हमारा रूपहै रंचक ना संदेह ॥
जो याको निश्चय करै सोभी मेरी देह ॥ ५८ ॥
जैसेही प्रभु ने कही ऐसी बेदन माहिं ॥
कहै ऋषीश्वर संतही यामें दुबिधा नाहिं ॥ ५९ ॥
रामरूप निश्चय करो मैं किया यह उपदेश ॥
गुरुपरमेश्वर नित्यहै या में नहीं अँदेश ॥ ६० ॥
भक्तिहेत परगट भवें फिरहो अंतरध्यान ॥
जुदा हुआ नाहिं जानिये यही जो अधिक सयान६१॥

पूजा अरु नित नेम में करै गुरू का ध्यान ॥
होवै तहां मिलापही यह हिय अंतर आन ॥ ६२ ॥
गुरू सदा हिय में रहैं जुदे नहीं पल एक ॥
सुरति माहिं दरशन भवै यह बिचार करि देख ६३ ॥
जो मैं आज्ञा देतहूं ताकूं रखि मनमांहिं ॥
हमको संगही जानियो जुदा जानियो नाहिं ६४ ॥
मैं जाऊं निजधाम को तू रहु याही ठौर ॥
भक्ति करो करवाइयो करो बिचार न और ॥ ६५ ॥
मैं सुनिकरि व्याकुल भया गिरा पगन के मांहिं ॥
अरु कहा मोकूं राखियो चरणकमल की छांहिं ६६ ॥
बाहँ पकड़ गुरु खैंच करि लिया हिये सों लाय ॥
हढ़ता दे धीरज दई भांति भांति समुझाय ॥ ६७ ॥
ताते तन ठहरा रहा नातर जाता साथ ॥
मेरी रक्षा यों हुती पै सब गुरु के हाथ ॥ ६८ ॥
बुरे सगुन होने लगे जहां तहां विपरीत ॥
सालजु दीखै औरसा कोई न दीखै मीत ॥ ६९ ॥
बस्ती सी दीखै नहीं दरशै सबै उजाड़ ॥
सुपने में देखत रहूं जंगल और पहाड़ ॥ ७० ॥
बहुत दुखित परचा भई पवन चलै बिकराल ॥
दिनकूं बोलै स्यारही और अधिक भूचाल ७१ ॥

आवत आवत आइया वही महीना चोस॥
यहमोंसों नाकही थी अपनेमनकी हौंस॥ ७२।

अथ श्रीमहाराज का परम धाम पधारनो ॥

दोहा ॥

भक्तिराज ह्यां सों गयो परमधाम जिहिरीति॥
रामरूपसो कहतहै ईश्वर खेल पुनीत॥७३॥

चौपाई ॥

दोदिन पहले अस्थलके जो। लिये बुलाय संत सब थे सो॥ ढिग बैठाय कहे यों बैना। अब हम जैहैं अपने ऐना॥ जीवचितावन को ह्यां आये। सो कारजकीने मन भाये॥ प्रभुकीभक्ति जगत फैलाई। फेरिदई हरिनाम दुहाई॥७४॥

दोहा ॥

आये थे जिसकारणें सो सब कीने काज॥
अबजैहैं निजधामको ऐसे कही महाराज॥७५॥

सुनतेही ऐसे वचन सब सिख भये बिहाल ॥
तरफतव्याकुलदुखितअतिबिछुरनजानदयाल७६॥
लखिकै ऐसी बिकलता फिर बोले अवतार ॥
यही समझ हमना कहा पहलेसों निजसार॥७७॥
कहते बहुदिन पहल जो बढ़ता अधिक बियोग॥
अतिप्रेमी तन त्यागते घरघरहोता सोग॥७८॥
अरुहोती बहुभीड़ जो आते बहुते लोग॥
दूरदूरसों चालते सुनिकै बिछुरन जोग॥७९॥
इसकारण हमना कहा बहुदिन पहले भेद॥
हमतौ जानतथेसबै तुम सों रखा अभेद॥ ८० ॥
बारह बरस पहले कह्यो रामरूप तोहि भेद॥
आया काला नाग जब पूंछा तुम्हौं न खेद॥८१॥
जब हमने यह कही थी तो को याद कि नाहिं॥
बारह बरस मैं औरहूं या दुनिया के माहिं॥ ८२ ॥
यह कहि फिर धीरज दिया सबको सत गुरुईश ॥
हम तुमसों न्यारे नहीं चित राखो जगदीश८३॥
भजन करो भगवान का सतगुरुका उरध्यान॥
सब घट देखो आतमा यह मम आयसुमान ८४॥
रामराम कहियो सबै जेते संत महंत ॥
अशीरबाद सिखसेवकों सुमिरोश्रीभगवंत८५॥

तुमभी तन तजि आइहो निश्चय मेरे धाम ॥
ध्यान हमारो उरधरो पावोगे ममठाम ॥ ८६ ॥

शिष्य बचन ॥

रामरूप तजि विकलता मन दृढ़करि हियनेह ॥
पूछा किसबिधि त्यागहो हे महराजा देह॥ ८७ ॥
हे ईश्वर अवतारजी भक्तिबढ़ी चहुंओर ॥
कलियुगमेंसतयुगकियोदूरभयो तिमिघोर॥८८॥
जीव अनेक उबारिया देदे चारौंअंग ॥
योग भक्ति वैराग्यही चौथाज्ञान इकंग ॥८९ ॥
जिस कारण जगआइया सो सब कीन्हे काज ॥
तनत्यागोगे कौनबिधिसोकहिये महराज॥९०॥
ढीठहोय मन धीरधरि मैंपूछी यह बात ॥
नाम आपका जगतमें हैभारी विख्यात ॥ ९१ ॥

गुरु बचन ॥

सुनु शिषितैं पूछीभली यहथी पूछन योग ॥
तनत्यागोंगो योगविधितूमतकरि मनसोग॥९२॥
जो मैं कीना जगत में सो मरजादा हेत ॥
भक्तिबढ़ावन कारने हम आये या खेत ॥ ९३ ॥
सोई मैं अब करूंगो मरजादा की रीति ॥
दशवांद्वारा छेदकरि जैहौं निजपुर मीति॥९४॥

छप्पै ॥

हमको शक्ति अनंत सोई तुमआंखौं देखी। धारेरूप अनेक किये परकाज विशेखी ॥ चाहों-करूं अलोप फेर ह्यां दृष्टि न आऊं। चाहोंदेह समेत नूरमें नूरसमाऊं ॥ मोहिं शक्तिउड़िजान-की पै अब ऐसे नाकरूं। तनत्यागों सब देखतें योग सिद्ध कारज सरूं ॥ ९५ ॥

दोहा ॥

योग कमाई हम करी तरुण अवस्था माहिं ॥
ताहिकरैंगे सुफलअब दोदिनहैं इहिठाहिं ॥९६॥
दो दिन बीते जाहिंगे परम धाम को तात ॥
दशम द्वारकी गैलह्वो चार घड़ी रहे रात ॥९७॥
बरस उनासी ह्यांरहे और महीने तीन ॥
परमारथ हित तनधरा अब ह्वैहूं हरि लीन ॥९८॥
परम तत्त्व मम रूप है परम तत्त्व ममदेश ॥
परम तत्त्व की धावना परम तत्त्व उपदेश ॥ ९९ ॥
भक्ति सुधारन आइया सरगुन को तन धार ॥
सो सबकारज करिचुकेजीवनको उपकार॥१००॥

शिष्य बचन ॥

ऐसे जब आज्ञा करी भक्तिराज अवतार ॥

दिल्लीकीसंगति सबै व्याकुलभई अपार॥१०१॥
दर्शन में सों नाटलैं जैसे चंद चकोर॥
तरफत जल बिनमीन ज्योंत्यों त्योंआवै ओर१०२
वैनिर्मोही जगत सों ज्ञानि दिशा लई धार॥
छकेपरमआनन्दमें जिनके द्रोह न प्यार॥१०३॥
जबहीं आया वह समय ली गादी बिछवाय॥
उतर पलँगसों धीरबुधि वापरबैठे जाय॥१०४॥
आसन पद्म लगायके योंकही श्रीमहराज॥
अबहमसों मतबोलियोसबकोजैमहराज॥१०५॥
सभों करी दण्डवतही रोरो व्याकुल होय॥
भक्तिराज कारजलगे फिरनाबोले कोय॥१०६॥
करिकै प्राणायामही दशवें प्राणचढ़ाय॥
चलेखोल ब्रह्मांडपट मिले नूरमेंजाय॥१०७॥
तड़दे भई अवाज़ही जैजै गगन मँझार॥
शंखनगारा ध्वनिहुई अजगैबी वहबार॥१०८॥
भया चाँदना भवन में निकसी ज्योति अनूप॥
मिलेनूर में नूरही जोथा आदि स्वरूप॥१०९॥
गगन मँडल बाजेबजे कलमें हाहाकार॥
लखिविछोह महाराजकोपीड़ाभई अपार॥११०॥
साध महाव्याकुलभये तन मन अधिकउदास॥

सकलजगत रूखालगै हियकोगयो हुलास १११॥

चौपाई ॥

कोइ यक जग तजि वनकों गये । कोइयक त्यागी नांगेभये ॥ कोइयक उनमत भये उदासा । जगभोगन की तिन्हैं न आसा ॥ कोइ यकलगे ध्यान के माहीं । जगत फांस में आवैं नाहीं ॥ कोइ यकलगे करन उपदेशा । भक्ति फैलाई देशौं देशा ॥ कोइयक निस्प्रेही निरदावा । कोईयक बिरक्त सहज सुभावा ॥ कोइयक उत्तर दिशि को जाई । गुफावनाय समाधि लगाई ॥ कोइ यकप्रेमी बिरह बियोगा । बौरेज्यों डोलैं मन सोगा ॥ रामरूप कोई अचक रहे सो । महाराज सुन धामगये जो ॥ ११२ ॥

दोहा ॥

संतन की यह गतिभई सोमैं बरणी देख ॥
रामरूप के हियेमें कसकत बिरहविशेख ॥ ११३ ॥
भयो गहन सो जगत में हुईजु दिनसों राति ॥
संगतिकी जो गतभई मोपैकही न जाति ॥ ११४ ॥
सँवत अठारह सै हुता ऊपर उन्तालीश ॥
गयेखुशी निजधामको रामरूपके ईश ॥ ११५ ॥

परगटहो लीला करी फिरभये अन्तरध्यान ॥
उनकेकौतुकगुणनकोकहकरिसकूंबखान॥११६॥
कछू कछू वरणन कियो जो जो आई सुद्धि ॥
वै ईश्वर मैं जीवहूं कहा जो मेरी बुद्धि॥११७॥
उनहीं की किरपासबै साधुन के परताप ॥
महाराज ममहियेमें बैठकही सब आप॥११८॥
नाकुछ था ना कुछ अवै ना कुछ करनेहार ॥
गुरुगोबिन्दसाधनकृपा मैंयहकहाउचार॥११९॥
अब मैं अपनी कहत हूं सबै अवस्था खोल ॥
चेराभयारणजीतकाबिनाद्रव्यलियोमोल १२०॥

चौपाई ॥

ज्यों करिभाग हमाराजागा । जैसेआ गुरु-चरणो लागा॥ दिल्ली शहर बाहरेबासा । जैसिंह पुरै हौज़ के पासा ॥ उहीठांव ब्राह्मण जोरहते । किरत चाकरी कीवे करते ॥ उनहीं में था भवन हमारा । रहते मात पिता परिवारा ॥ उन की भीथी ब्राह्मण जाति । एकै कुल एकैथी पांति ॥ उनकेपुत्र और जो भये । सोवैं सदेरोग मरगये ॥ फिर यह जनमी देह हमारी । भये प्रसन्न बाप महतारी ॥ सुखीहुते धनके अधिकाई । दिये

दान बहुकरी बधाई ॥ तीनमास की भई मम काया। तब कुछरोग मात तनआया ॥ उसी रोग में स्वर्ग पधारी। फेर पिता को दुख भयोभारी ॥ ईशापुर में थी असनाई। क्राई सों इकधाय बुलाई ॥ करिकै वचन गोद में दीना। वाको सौंपदिया हितकीना ॥ १२१ ॥

दोहा ॥

मोको लेकै उठगई धाय आपने गांव ॥
फेरबिचारी पिताने मैं पूरब को जांव ॥ १२२ ॥
ब्राह्मणहुते जो गौड़ही नाम सहाराम तास ॥
घोड़ेचढ़ पूरबगये धारि चाकरी आस ॥ १२३ ॥
पूरब में उमराव की करीचाकरी जाय ॥
बरसदोयलौंधायको दीन्होद्रव्य पठाय ॥ १२४ ॥

चौपाई ॥

फिरवाकी कुछ-खबर न आई। कहांगये कुछसुधि नहिंपाई ॥ होयनिराश धाय योंकहा। पलवाई में बालकरहा ॥ जो कभूं याका पिता जो ऐहै। पलवाई देकै लैजैहै ॥ नहीं तौ मेरा बेटा यही। ऐसेधाय सबन सों कही ॥ पुत्तर और हुता नहिंवाके। मैंहीं बालकथा इकजाके ॥ मोको

पुत्तर कहनेलागी। लोग लुगाई जात जोवाकी॥ धाय धावड़ी हितबहुकरते। बिनदेखे मोहिं नेक न रहते॥ समय पायके ऐसाभया। धाय धावड़ीही मरगया॥ १२५॥

दोहा॥

जब मैं था दस बरस का हुई जु स्यानी देह॥
उनके नातेदारने रखा जु अपने गेह॥ १२६॥
फिर मेरे मन यों उठी शरण श्याम की जांव॥
कोइ पूरा सत गुरु मिलै मोहिं जपावै नांव॥१२७॥
करूं भक्ति चितलाय के तजों जगत की आस॥
ध्यान करूं हरि चरण को पाऊं पदवी दास १२८॥
अठारह सै अरु ग्यारवें संवत की यह बात॥
राम रूप भये वैष्णव छांड़ि मोह जग जात १२९॥

चौपाई॥

उसी धाय का भाई एका। हुता अतीत वैष्णव भेखा॥ वासों जाय बिथा कहि सारी। सुनत बात वाकों लगि प्यारी॥ वही साथ लेकरि मोहिं आया। भक्तिराजकी भेंट चढ़ाया॥ महा राज हित करि बैठाया। बांधी कंठी तिलक बनाया॥ मंतर सरवन माहिं सुनाया। नीकी

बिधि नित नेम बताया ॥ सीत प्रसाद आपना दीया। सबही भांति दास मोहिं कीया ॥ फिरि मोको लिया वेग पढ़ाय। दीने आसनभी सधवा-य ॥ योग साधना सबै सधाई। ज्ञान भूमिका हू समझाई ॥ नित्य अनित्य बिचार सुनाया। ब्रह्म-ज्ञान सबही समझाया ॥ भक्ति दई मेटी यम शान। फेर आपना किया दिवान ॥ १३० ॥

दोहा ॥

अपना मंत्री ही किया दिया निकट बिश्राम ॥
गुरुभक्तानंदनाम रखि दिया ग्रन्थका काम १३१ ॥

चौपाई ॥

दिन दिन प्यार हेत बहुतकरैं। पक्षी की ज्यों पंजा धरैं ॥ कमठ दृष्टि होदेखैं मोहिं। अण्डे की बुधि दीनी खोय ॥ पर काढ़े पत्ती की भांति। साध मते की आई शांति ॥ होय भिरंगी मोको सेया ॥ प्रेम सुधा मैं अधिकी भेया। उपदेश करनकी आज्ञा दीनी ॥ मैंहूं सो माथे धरिलीनी। चरण कमलका राखूं ध्यान। गुरु सेवा बिन और न आन ॥ पंद्रह बर्ष सेवन चित दीना। बिन आज्ञा कोइ काज न कीना ॥ एक दिना मोहिं

आयसु दई। मैंहूं माथे पै धरि लई॥ १३२॥

दोहा॥

पंद्रह वर्षहीं पास रखि फिर आज्ञा दई जाव॥
तारन तरन कहाय के भूले जीव चिताव॥ १३३॥
हित सों पास बुलाय कै टोपी कर धर शीश॥
नांवजु दूजा रामरूप सोहिंकिया बखशीश १३४॥
जब सों मैं रामत करूं आज्ञा मेटी नाहिं॥
भक्ति राज रहैं संगही मेरे हिरदे माहिं॥१३५॥
हिरदे में परकाश करि दीनों तिमिर नशाय॥
गुरु भक्तानंद है नहीं गुरुही प्रगटे आय॥१३६॥
रनजीता की चरण रज सदा हमारे शीश॥
आठ पहर साठौं घरी रहियो बिश्वा बीश॥१३७॥
चार युगन के भक्त तुम कीजो कृपा अपार॥
राम रूप आधीन पै रहियो दृष्टि तुम्हार॥१३८॥
गुरुभाई मेरे सबै अधिक एक सों एक॥
राम रूप निज दास को दई भक्ति की टेक॥१३९॥

चौपाई॥

एक सों एक सरस गुरुभाई। तिनकी महिमा कही न जाई॥ योगभक्ति अरु ज्ञान में सूरे। बैरागी त्यागी अतिपूरे॥ यती सती संतोषी दा-

ता । जिनका गुरुही सों इक नाता ॥ दयावंत मीठे मुख बोलैं ।हरि चरचा बिन होंठ न खोलैं॥ क्षमावन्त सब सब कोइ जाने। तिलक सिलमिली पीले बाने ॥ सबही सुंदर चाल अनूपा । सभी हो रहे गुरु के रूपा ॥ रहनी गहनी अधिक सु-हावैं । तिन सों सकलजीव सुख पावैं॥ अरु उन ही से उनके चेले । सोभी साध मते में खेले ॥ सब गुरुभाई गुरू समाना । तिनपै वारूं तन मन प्राना ॥ निज करि वही आसरो मेरो । राम रूप है तिन को चेरो ॥ १४० ॥

दोहा ॥

यह पोथी बड़ भागिनी पतित उधारनहार ॥
उपजे गुरुकीभक्ति सुनि उतरेभवजलपार॥ १४१॥
पढ़ै सुनै जो प्रीति सों धरे हिये में याहि ॥
याके अर्थन को लहै मुक्ति धाम को जाहि ॥१४२॥
कथाजो बांचेऔरसुन जोकोइ फल सुनि लेह ॥
जैसे यज्ञ किये सातही दान गऊ लखदेह ॥१४३॥
साठ दिना याको पढ़े जाको कष्ट नशाय ॥
शुद्ध होय करे पाठही निश्चय चित्त लगाय १४४॥
नारी संगम ना करे रहै जमीं में सोय ॥

झूठ न बोले उन दिनों तौ याको फल होय॥१४५॥
यापोथी को नांवही है गुरुभक्ति प्रकास॥
सतगुरु के कौतुक चरित यामें कीये भास॥१४६॥
याप्रकाश के कहे सों मन भयो गुरु के रूप॥
ज्ञान पाय ज्यों जी वही हो रहे ब्रह्म अरूप॥१४७॥
ज्यों निधिपाई रंक ने भूले पायो धाम॥
मन हरषा पोथी कहे भये सम्पूरण काम॥१४८॥

इति श्रीगुरुभक्तिप्रकाशेश्रीमहाराजसतगुरुईश्वरअवतारश्रीचरणदास जीकीकथास्वामीरामरूपजीकृतदशमोविश्रामसम्पूर्णम् ॥

श्री राधेश्याम ॥

अथ भार्गव हीरालाल शर्मा जयपुर निवासी कृत संक्षेप जीवन चरित्र ॥

दोहा ॥

दूसर कुल में जो भये चरणदास महराज।
परमगुरू सुखदेवजी उनके सरके ताज॥

तीनबार परघट मिले सब बिधि किये निहाल।
जिनको अब भी सब जगह देखे हीरालाल॥
श्रीगुरुभक्ति प्रकाश में श्रीगुरु भक्तानंद।
श्री सतगुरु महराजको लिख्यो चरित्रानंद॥
तामें ९ विश्रामकरि लिख्यो चरित सब खोल।
अधिक एकसो एकहै तामें रत्न अमोल॥
ताको अलबेली कहै करि अति सूक्षम रूप।
जाबिधि कोई समुद्रको भरराखै घट कूप॥

१

लिखी प्रथम विश्राममें पहिल भूमिका सार।
जन्म चरित्र पाछे लिखे आनँद बढ़ो अपार॥
भादों शुक्ला तीजको मङ्गल मङ्गलवार।
सत्रह सौ अरुसाठ में लियो अंश औतार॥

२

चौपाई॥

दूजेमाहीं सातकथायें। पढ़ें सुनें जोसबहरषायें॥दशवेंबरसतलक केसारे। लिखे चरितसब न्यारे न्यारे॥

दोहा॥

बरस पांचवें शुक मुनी दरशन दीने आय।

चेला करके गैवसों पेड़े दिये मंगाय॥

चौपाई॥

बाल चरित कछु कहे न जाई। पांड़े पढ़न कथा अधिकाई॥

दोहा॥

मुरलीधर इन के पिता बरस सातवें माहिं।
अंतरध्यान ऐसे भये पता लग्यो कछु नाहिं॥
कुंजो माता तब चली गङ्गा न्हाने काज।
डहरे से लिये साथही भक्तिराज महराज॥
रामा भूवा के यहां छोड़ा इनको जाय।
फिरमा भाई सों मिली दिल्ली पहुंची आय॥

चौपाई॥

ह्वांसों गङ्गाजी को धाई। न्हा धोकर फिर दिल्ली आई॥ एक बहल कछु लोग पठाये। भक्तिराज दिल्ली वुलवाये॥ मुल्लाजी के तब बैठाया। परपढ़ना वा मन नहिं भाया॥

दोहा॥

भारी एक किताबले दीनो अर्थ सुनाय।
की मुल्ला सों गोष्ठी मुल्ला चूमे पाय॥

नानाजी सों गोष्ठी माता सों संवाद ।
कियो सगाई के विषे ताको राखो याद ॥

३

चौपाई ॥

तीजे माहीं प्रेम प्रभावा । जहं कर सतगुरु दरशन पावा ॥ श्रीकृष्ण सों प्रेम लगानो । श्रीशुक मुनि को दरशन पानो ॥ शिष होय नित्य नेम विधि पानो । फेर उलट दिल्ली को आनो ॥ माता सों मिलि पहरन बाना । योग माँहि युग एक बिताना ॥

४

दोहा ॥

चौथे में वो सब लिखे यहि बिधि जानो मित्र ।
फतहपुरी के बाग में जो जो किये चरित्र ॥

चौपाई ॥

रहै राज बिधि जैसे जैसे । बरने सब वैसे के वैसे ॥ कायथ को जो परचो दीनो । चोरों सँग परमारथ कीनो ॥ खत्री को ज्यों बेटे दीने । पुत्री सो पुत्तर करलीने ॥ सिंह सिद्धको दिक्षा देनो । नादिर-शाह को बरणन कहनो ॥

५

दोहा ॥

अरुपंचवें बिश्राम में अद्भुत कथा पुनीत।
जाते कछु जानी पड़े प्रेमप्रीति की रीति॥

चौपाई ॥

वृन्दाबन मेंसेवा कुंज। जो कहिये आनँद की पुंज॥ भक्तिराज जबवहां पधारे। चरणराधिकानैन निहारे॥ युगलकिशोर संग बहु सखियां। भक्तिराज देखे अप अंखियां॥ निज वृन्दाबन माँहि पधारे। भक्तिराज को लेवोह लारे॥ तीनदिना लग ह्राहीं रहिया। जो हुवा आनंद जात न कहिया॥ उलट आय ब्याकुल भये भारा। नैनन थमें नहीं जल धारा॥ तब सतगुरुने दरशन दीना। थाजो मनोरथ पूरण कीना॥

६

दोहा ॥

छठे माँहि है गोष्ठी तत्त्व ज्ञान को सत्त।
भव सागर सों पारहो जो समझे या तत्त॥

७

सतवें में ब्रज ओर सों आनो दिल्ली माँहि।

प्रीछत पुरे में ठैरनो नंदराम की ठाँहि॥
ब्रज चरित्र पोथी लिखी जामें ब्रजको हाल।
अमर लोक कथके यहां आतम कियो निहाल॥
घासकी मंडी गदन पुरे पानीपत करनाल।
ठौरठौर महाराजने बहुते किये निहाल॥

८

चौपाई॥

अठवें में वे सभी बखाने। किये चरित्र जो शहर पुराने॥ नई बस्ती में जो जो कीने। सो भी सब या में लिख दीने॥

९

दोहा॥

नौवें में जो जो कथा सो सबही सुनलेहु।
शिष को दृढ़ जा बिधि दियो ताही में चित देहु॥

चौपाई॥

नये शहर में अस्थल कीनो। सुखदेवपुरा नाम धरिदीनो॥ नवधारंग मेह बरसानो। देशों देशों नदी बहानो॥ सर्पसरूप दूतको आनो। बरसदोय दश पहल चितानो॥ प्रतापसिंह

जयपुर के राजा। जाके उत्तम सबही काजा॥ उनको सतगुरु को बुलवानो। महाराजको जयपुर आनो॥ समय समझ शिषको घबरानो। महाराजको तब समझानो॥

दोहा॥

भक्तिराज निजधाम को पगधारे जेहिरीत।
गुरु भक्तानँदजी कह्यो ईश्वर खेल पुनीत॥
संबत अठारहसै हुते ऊपर उन्तालीस।
परमधाम खुश खुश गये अलबेली के ईश॥